इंदिरा गांधी
राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
समाज कार्य विद्यापीठ

BSW – 130

मादक द्रव्यों के सेवन की रोकथाम

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

मादक द्रव्यों दुरुपयोग और उसके परिणाम 2

''शिक्षा मानव को बन्धनों से मुक्त करती है और आज के युग में तो यह लोकतंत्र की भावना का आधार भी है। जन्म तथा अन्य कारणों से उत्पन्न जाति एवं वर्गगत विषमताओं को दूर करते हुए मनुष्य को इन सबसे ऊपर उठाती है।''

– इन्दिरा गाँधी

''स्वास्थ्य और सामाजिक कल्याण'' की चेयर के अन्तर्गत् विकसित कार्यक्रम

"Education is a liberating force, and in our age it is also a democratising force, cutting across the barriers of caste and class, smoothing out inequalities imposed by birth and other circumstances."

- Indira Gandhi

खंड

2

मादक द्रव्यों दुरुपयोग और उसके परिणाम

इकाई 1

शराब, मादक द्रव्यों और यौन संचारी संक्रमणों के बीच संबंध तथा वर्तमान में इसकी प्रासंगिकता

इकाई 2

व्यक्ति पर मादक द्रव्य दुरुपयोग के परिणाम

इकाई 3

मादक द्रव्य दुरुपयोग का परिवार और राष्ट्रीय विकास पर प्रभाव

इकाई 4

स्वापक (उपविष) औषध और मनोपरिवर्तक मादक द्रव्य अधिनियम, 1985 (एन डी पी, एस एक्ट, 1985)

इकाई 5

मादक द्रव्यों की माँग और आपूर्ति में कमी करना

विशेषज्ञ समिति (मूल)

प्रो. पी.के. गांधी
जामिया मिलिया इस्लामिया,
नई दिल्ली

डॉ. डी.के. दास
आर.ए. कॉलेज ऑफ सोशल
वर्क, हैदराबाद

डॉ. पी.डी. मैथ्यू,
भारतीय सामाजिक संस्थान,
नई दिल्ली

डॉ. एलेस वड़वुम्मथला,
सी.बी.सी.आई.सेण्टर, नई
दिल्ली

प्रो. ग्रेशियस थॉमस,
इग्नू, नई दिल्ली

प्रो. ए.पी.बर्नबास (सेवानिृत्त)
आई.आई.पी.ए.
नई दिल्ली

डॉ. रंजना सहगल,
इंदौर स्कूल ऑफ सोशल
वर्क, इंदौर

डॉ. रमा वी. बारू
जवाहरलाल नेहरू
विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

डॉ. जेरी थॉमस
डॉन बास्को
गुवाहटी

प्रो. सुरेन्द्र सिंह,
कुलपति
महात्मा गांधी काशी
विद्यापीठ वाराणसी

प्रो. ए.बी. बोस (सेवानिवृत्त)
सतत् शिक्षा विद्यापीठ
इग्नू नई दिल्ली

प्रो. के.के. मुखोपाध्याय
दिल्ली विश्वविद्यालय
नई दिल्ली

प्रो. ए.आर.खान
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. आर.पी. सिंह
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. ऋचा चौधरी
डॉ. बी.आर.अम्बेडकर
कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली

प्रो. प्रभा चावला,
इग्नू, नई दिल्ली

विशेषज्ञ समिति (संशोधन)

प्रो. सुषमा बत्रा
समाज कार्य विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ. आर.आर. पाटिल
समाज कार्य विभाग
जामिया मिलिया इस्लामिया,
नई दिल्ली

डॉ. बीना एन्थोनी रेजी
अदिति महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली

डॉ. संगीता शर्मा धोर
डॉ. भीम राव अम्बेडकर
कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रो. ग्रेशियस थॉमस
समाज कार्य विद्यापीठ
इग्नू, नई दिल्ली

प्रो. रोज़ नेम्बियाकिम
समाज कार्य विद्यापीठ
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. सौम्या
समाज कार्य विद्यापीठ, इग्नू,
नई दिल्ली

डॉ. जी. महेश
समाज कार्य विद्यापीठ, इग्नू
नई दिल्ली

डॉ. सायन्तनी गुइन
समाज कार्य विद्यापीठ, इग्नू,
नई दिल्ली

पाठ्यक्रम निर्माण दल (मूल)

इकाई लेखक

प्रोफेसर चाको, कार्रिथाइल

प्रोफेसर आर.एम. कालरा

डॉ. संतोष कुमार

प्रोफेसर जे. दिनकर लाल

खंड सम्पादक एवं पाठ्यक्रम संयोजक

प्रोफेसर ग्रेशियस थॉमस
सतत् शिक्षा विद्यापीठ
इग्नू, नई दिल्ली

संशोधन

प्रोफेसर चाको, कार्रिथाइल

पाठ्यक्रम निर्माण दल (संशोधन)

मूल सहयोगदाता

प्रोफेसर चाको, कार्रिथाइल

प्रोफेसर आर.एम. कालरा

डॉ. संतोष कुमार

प्रोफेसर जे. दिनकर लाल

विषय सम्पादक

डॉ. शीबा जोसेफ,
भोपाल स्कूल ऑफ सोशल साइसेंस,
भोपाल

पाठ्यक्रम एवं खंड संयोजक

डॉ. सायन्तनी गुइन,
इग्नू, नई दिल्ली

सामग्री निर्माण

अक्टूबर, 2022

© इंदिरा गाँधी मुक्त विश्वविद्यालय, 2022

ISBN -81-

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस कार्य का कोई भी अंश इन्दिरा गाँधी मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में मिमियोग्राफ (मुद्रण) द्वारा या अन्यथा पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

इंदिरा गाँधी मुक्त विश्वविद्यालय के बारे में और अधिक जानकारी विश्वविद्यालय के कार्यालय, मैदानगढ़ी, नई दिल्ली–110068 से प्राप्त की जा सकती है।

इंदिरा गाँधी मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से विभाग द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

लेजर कम्पोजिंगः

खंड 2 का परिचय

अब हम **'मादक द्रव्यों के सेवन की रोकथाम'** पाठ्यक्रम का खंड 2 ''मादक द्रव्य दुरुपयोग और उसके परिणाम'' आपके समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं। इस खंड में पाँच इकाइयाँ हैं। इस खंड की मूल विचारधारा मादक द्रव्य दुरुपयोग और उसका व्यक्ति, परिवार और राष्ट्र पर पड़ने वाले प्रभाव से संबंधित है।

इकाई 1 ''शराब, मादक द्रव्य, यौन संचारी संक्रमणों में संबंध तथा वर्तमान में इसकी प्रासंगिकता'' से संबंधित है। यह इकाई मादक द्रव्य प्रयोग का दुरुपयोग द्वारा एस.टी.डी. और एच.आई.वी. जैसे रोगों को एकत्रित करने की प्रक्रिया की जाँच करती है तथा इन रोगों की रोकथाम के लिए उपायों की पहचान करने में सहायता प्रदान करती है। **इकाई 2** में मादक द्रव्य दुरुपयोगों का व्यक्ति पर पड़ने वाले प्रभावों का वर्णन है। यह इकाई व्यसन द्वारा व्यक्ति को होने वाली शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, आर्थिक और भावात्मक क्षति का वर्णन करती है। **इकाई 3** मादक द्रव्य दुरुपयोग का परिवार एवं राष्ट्रीय विकास पर पड़ने वाले प्रभावों का वर्णन करती है। यह इकाई हमारे स्कूलों, कार्य स्थलों और राष्ट्र को मादक द्रव्यों से मुक्त करने के महत्व का भी वर्णन करती है। **इकाई 4** स्वापक (उपविष) औषध और मनोपरिवर्तक मादक द्रव्य अधिनियम, 1985 (नारकोटिक ड्रग एंड साइकोट्रोपिक सब्सटेंस एक्ट – एन.डी.पी. एस. अधिनियम, 1985) का संक्षेप में वर्णन करती है। यह इकाई एन.डी. पी.एस. अधिनियम की मुख्य शब्दावली को परिभाषित करती है, अधिनियम की मुख्य विशेषताएँ बताती है तथा अधिनियम के अंतर्गत आने वाले अपराधों एवं दंडों को अधिसूचित करती है। **इकाई 5** मादक द्रव्य की माँग एवं आपूर्ति में कमी का विवरण प्रस्तुत करती है। इस इकाई में लोगों के व्यसनी बनने, व्यसन के बुरे प्रभावों, माँग में कमी की आवश्यकता और मादक पदार्थों के लिए लोगों में लालसा रोकने के लिए अपनाई जा सकने वाली पद्धतियों की चर्चा की गई है।

इस खंड में प्रस्तुत पाँच इकाइयाँ समग्र रूप से आपको मादक द्रव्य दुरुपयोग का व्यक्ति, परिवार और राष्ट्रीय विकास पर पड़ने वाले प्रभावों के संबंध में एक सोच प्रदान करती है।

इकाई 1 शराब, मादक द्रव्यों और यौन संचारी रोगों के बीच संबंध तथा वर्तमान में इसकी प्रासंगिकता

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 एस टी डी तथा एच आई वी/एड्स पर बुनियादी सूचना

1.3 शराब, मादक द्रव्य दुरुपयोग और स्वास्थ्य

1.4 महिलाएँ, और एच आई वी/एड्स एवं एस टी डी

1.5 प्रजननात्मक स्वास्थ्य एवं मादक द्रव्य

1.6 मादक द्रव्यों, यौन संचारी रोगों और एच आई वी/एड्स पर अध्ययन की प्रासंगिकता

1.7 सारांश

1.8 शब्दावली

1.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.0 उद्देश्य

इस इकाई का उद्देश्य आपको एच आई वी/एड्स तथा यौन संचारी रोगों (एस टी डी) एवं उनके मादक द्रव्यों के दुरुपयोग के साथ संबंधों के बारे में जानकारी प्रदान करना है। यह आपको वर्तमान संदर्भ में इसके महत्व के बारे में भी बेहतर समझ प्रदान करती है। इस इकाई के अध्ययन के बाद आप जान सकेंगे:

- यौन संचारी रोग आपस में किस प्रकार संबंधित हैं;
- मादक द्रव्यों के दुरुपयोग के कारण ये रोग किस प्रकार से भंयकर हो जाते हैं;
- किस प्रकार ये व्यक्ति की प्रजनकता को प्रभावित करते हैं; तथा
- इन रोगों को फैलाने से रोकने के लिए कौन से उपाय हैं।

1.1 प्रस्तावना

मादक द्रव्य दुरुपयोग मानव जीवन के सभी पक्षों को प्रभावित करता है। आप पहले ही परिवर्तित व्यवहार के संबंध में पढ़ चुके हैं। एच आई वी/एड्स एक यौन संचारी रोग हैं। इसके अलावा अन्य कई रोग भी यौन संचारी है। इसका स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव पड़ता है। मानव यौन क्रिया से उत्पन्न जीव है। एस टी डी, एच आई वी/एड्स की सम्पूर्ण जानकारी अत्यंत आवश्यक है क्योंकि ये घातक रोग हैं। मानव केवल यौनिक ही नहीं है बल्कि विवेकी भी होता है। मादक द्रव्य दुरुपयोग मानव

के बौद्धिक कार्यों को प्रभावित करते हैं तथा यह असुरक्षित यौन व्यवहार की तरफ ले जाता है, जिसके परिणामस्वरूप यौन संचारी रोगों से सम्पर्क हो सकता है।

यह इकाई एच आई वी/ एस टी डी/ मादक द्रव्य परिदृश्य, उनके पारस्परिक संबंधों और परिणामों के बारे में व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करेगी।

1.2 एस टी डी तथा एच आई वी/एड्स पर बुनियादी सूचना

यौन संचारित रोगों को आमतौर पर एस टी डी के नाम से जाना जाता है। एस टी आई, यौनिक संचारित संक्रमण के लिए संकेत्ताक्षर हैं। ये विशेष प्रकार के रोग हैं जो कि यौन क्रियाओं के माध्यम से फैलते हैं। मनुष्य के लिए भोजन और शक्ति के साथ यौन क्रियाओं का संचालन भी मूल तत्वों में सम्मिलित है। इस लिए यौन क्रियाओं के साथ संक्रमण का सम्मिश्रण भी आवश्यक होता है। अत: इसका भोग करने के लिए गंभीर रूप से सावधानी और प्रबंधन की अनिवार्यता होती है। प्रारम्भिक दिनों में इसे लोग 'रतिज रोग' के नाम से जानते थे। रतिज शब्द को 'वीनस' के नाम से लिया गया है जो प्रणय की देवी है। जन्मजात आतशक को छोड़ कर सभी यौन रोग यौन क्रिया के माध्यम से संचारित होते हैं। वी डी (रतिज रोग) के साथ सामाजिक कलंक लगा हुआ है, इसीलिए सन 1994 में विश्व स्वास्थ संगठन ने इनका नाम बदल कर एस टी डी रख दिया है।

एस टी डी एक संक्रामक रोग है जो कि शीघ्र संचारित होता है। इसके रोगियों की अत्यन्त दर्दनाक स्थिति होती है तथा बहुत सारे रोगी एच आई वी/ एड्स के रोगियों की तरह ही मौत के शिकार हो जाते हैं। वास्तव में हाल ही में एस टी डी की सूची में एच आई वी/ एड्स नया नाम शामिल हुआ है। अभी तक बीस से अधिक एस टी डी के प्रकारों की पहचान की जा चुकी है। एस टी डी से संक्रमित किसी भी स्त्री-पुरुष के साथ यौनिक, मुख से या गुदा मैथुन करने पर आसानी से संक्रमित हो सकता है। याद रहे योनि, शिशन, गुदा और मुँह के माध्यम से एस टी डी के कीटाणु शरीर में फैल सकते हैं अथवा प्रवेश कर सकते हैं। यौन क्रिया के समय लगभग 40 प्रकार के रोगाणुओं का संचारण होता है। शरीर के अंग या उसके एजेंट जो बैक्ट्रिया, विषाणु, फंगस और अन्य परजीवियों को संक्रमण के रूप में संचारित करते हैं। कुछ एस टी डी उपचार करने से ठीक हो जाते हैं परन्तु एच आई वी, हैपिटाइस-बी तथा हर्पस सिम्पलेक्स का इलाज नहीं होता है। किन्तु इनकी रोकथाम करना संभव है।

इतिहास और उद्गम

वैसे तो एस टी डी शताब्दियों से इस समाज में मौजूद थे किन्तु इनका व्यापक विस्तार 20वीं सदी के पहले दशक में हुआ है जिसके कारण उस समय में हजारों लोग इस रोग से मारे गए थे। उन दिनों में एस टी डी आज के एच आई वी/एड्स की तरह ही संचारित हुई थी आरम्भ में चिकित्सा जगत नहीं जानता था कि इस रोग पर कैसे काबू पाया जाए। यह रोग हमेशा ही यौन क्रियाओं के माध्यम से ही फैलते रहे है। इसका इलाज संभव है यदि इसकी जानकारी समय पर मिल जाए।

1942 में पेंसिलिन नामक औषधि की खोज की गई जो एस टी डी के इलाज में महत्वपूर्ण दवा साबित हुई। 1924 में ब्रुसेलस समझौते के तहत एस टी डी को एक देश से दूसरे देश अथवा एक द्वीप से दूसरे द्वीप में फैलने से रोकने के लिए नाविकों, जलयानों और समुद्री पत्तनों में काम करने वाले लोगों के लिए नि:शुल्क इलाज उपलब्ध कराया गया था।

विश्व स्वास्थ संगठन ने मानव के सब से बड़े दुश्मनों में तीन रोगों को चिन्हित किया है। ये है– मलेरिया, क्षय और एस टी डी। अनेक देशों में एस टी डी के रोग का व्यापक संक्रमण हुआ है जिनमें

15 तथा 20 वर्ष के युवक लोग शामिल हैं। इनमें विशेषकर महिला रोगी अधिक हैं। इस रोग को लोग अधिकतर सामाजिक कलंक और शर्म के कारण छिपाते रहते हैं और इलाज नहीं करवाते हैं। किशारों के यौन क्रियाओं के प्रति व्यवहार में परिवर्तन के कारण विश्व में तेजी से फैल रहा है। कुछ देशों में 1966 और 1971 के मध्य यह रोग 17 वर्ष की आयु के लड़कों में दुगना और लड़कियों में तीन गुना के हिसाब से फैला था। 16-17 वर्ष की आयु समूह के लोगों की रिपोर्ट से पता लगा है कि यह 14-15 वर्ष के आयु समूह में आठ गुना अधिक मात्र में यह रोग फैला है।

एस टी डी: विश्व परिदृश्य

विश्व स्वास्थ्य संगठन का दावा है कि विश्व में प्रत्येक वर्ष लगभग 3330 लाख नए रोगी एस टी डी से संक्रमित होते हैं। इस संक्रमण से पीड़ित लोंगों में दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशिया में 45%, उप-सहारा क्षेत्र में 20% और लैटिन अमरीका में 11% संक्रमित रोगी हैं। इसके पश्चात शेष 29% रोगियों की संख्या पूरे विश्व में है। पश्चिमी यूरोप में इस संक्रमण से प्रभावित लोगों की संख्या सबसे कम अर्थात 1.2%। केन्याई व्यावसायिक यौन कार्यकर्ताओं में संक्रमण की दर 64.8% रिकार्ड की गई। वहीं पर बांग्ला देश के व्यावसायिक यौन कार्यकर्ताओं में यह दर 56.4% रिकार्ड की गई है।

एस टी डी: भारतीय परिदृश्य

भारत में एस टी डी के फैलने की व्यापक सम्भावनाएं हैं। अथवा यूं कह सकते हैं कि यहाँ उसका विस्तृत खेल का मैदान है। प्रत्येक वर्ष लाखों भारतीय लोग एस टी डी से संक्रमित होते हैं। यह इस लिए तेजी से फैलता है क्योंकि इसके कारण शरीर में प्रतिरक्षी क्षमता का निर्माण नहीं होता है।

भारत में किए गए आकलन के अनुसार देश में लगभग 500 लाख एस टी डी के रोगी मौजूद हैं। भारतीय महानगरों जैसे कि कोलकाता में 59% की संक्रमण दर रिकार्ड की गई। वर्ष 2001 में नाको (एन. ए. सी. ओ.) ने एक आधार रेखा सर्वेक्षण करवाया था जिसमें यह तथ्य सामने आए कि केवल 25% लोगों को ही एस टी डी के संक्रमण की जानकारी होती है।

वर्ष 2001 में नाको (एन. ए. सी. ओ) द्वारा कराए गए आधार रेखा सर्वेक्षण के आँकड़े निम्न प्रकार हैं:

राज्य	एच आई वी संक्रमण की व्यापकता
मणिपुर	64.34%
चेन्नई	26.7%
मुम्बई	23.68%
मिजोरम	9.61%
नागालैंड	7.03%
दिल्ली	5.00%
बंगलौर	4.23%
कोलकाता	1.60%

सामान्य एस टी डी

आमतौर पर लोगों को जब एस टी डी होने का पता लगता है तो घबरा जाते हैं। सभी चिकित्सक भली-भाँति जानते हैं कि एस टी डी का इलाज संभव है। कुछ सामान्य एस टी डी इस प्रकार है:

आतशक (Syphilis)

आतशक, सबसे भयंकर एस टी डी में से एक है। अधिकतर यह रोग लैंगिक क्रियाओं के माध्यम से होता है। आतशक से पीड़ित गर्भवती महिला रोगाणुओं को जन्म से पूर्व अपने शिशु में संक्रमित कर सकती है। इस संक्रमण के फलस्वरूप शिशु जन्म के साथ ही भयंकर, मानसिक और शारीरिक बीमारियों से पीड़ित हो सकता है।

सूजाक (Genorrhea)

सूजाक आमतौर पर सबसे अधिक होने वाला एक एस टी डी है। इसकी चरम अवस्था में महिलाओं में मूत्रमार्ग, योनि ग्रीवा तथा योनि में सूजन आ जाती है। मूत्रमार्ग, गुदामार्ग तथा यौनिक मार्ग से महिलाओं के शरीर में रोगी को मूत्र त्याग के समय अत्यंत जलन और पीड़ा होती है, साथ ही मूत्र के साथ मवाद भी आने लगती है। पुरुषों में आंतरिक जनन अंगों में सक्रमण हो जाता है। ध्यान रहे कि यह आवश्यक नहीं है कि सभी लक्षण सूजाक रोग के ही हों।

जनेन्द्रिय हर्पीज (Genilal Herpes)

जनेन्द्रिय हर्पीज बहुत ही पीड़ादायक एस टी डी है जिसका अभी तक इलाज सम्भव नहीं है। यह तेजी से फैलने वाला वायरल संक्रामक रोग है। प्रतिवर्ष लाखों लोग इस रोग के शिकार हो जाते है। यह रोग प्राय: यौनिक, मुख और गुदा मैथुन के माध्यम से संचारित होता है। जेनिन्द्रय हर्पीज से पीड़ित गर्भवती महिला के पेट में पलने वाले भ्रूण संक्रमित हो सकते हैं।

क्लैमाइडियल संक्रमण (Chalmydial Infection)

क्लैमाइडियल संक्रमण, स्त्री-पुरुषों दोनों को समान रूप से संक्रमित करता है। यह महिलाओं में बांझपन पैदा कर सकता है। इसका संक्रमण यौनिक एवं मुख मैथुन के माध्यम से होता है। संक्रमित गर्भवती महिला अपने रोगाणु प्रसव के समय नवजात शिशु में संक्रमित कर सकती है।

रतिज व्रण (Chancroid)

रतिज व्रण एक एस टी डी रोग है और प्राय: वेश्याओं में पाया जाता है। साथ ही वे लोग भी संक्रमित होते हैं जो इनके सम्पर्क में आते हैं। यह वास्तव में यौनिक अल्सर का रोग है और एच आई वी संक्रमण के खतरे को बढ़ाता है।

एस टी डी संक्रमण और भी अनेक प्रकार के होते हैं। हमने केवल बहुत ही सामान्य होने वाले रोगों की चर्चा की है। इससे अधिक विवरण हमने खंड 1 में एच आई वी/एड्स पर ऐच्छिक पाठयक्रम में एस टी डी के अध्याय में विशेष चर्चा की है जिसमें आप विस्तार से विवरण प्राप्त कर सकते हैं।

एस टी डी के जोखिम वाले लोग

एस टी डी का प्रभाव सामाजिक, धार्मिक, व्यावसायिक, शैक्षिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि तथा आर्थिक स्तर के सभी महिला-पुरुषों पर समान रूप से होता है। यह प्राय: सबसे अधिक वेश्याओं और अनेक लोगों के साथ लैंगिक क्रियाओं में लिप्त रहने वाले लोगों में होता है। देश के विभिन्न हिस्सों में व्यावसायिक यौन व्यापककर्ताओं पर किए गए अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि उनमें 90 प्रतिशत लोग एच आई वी/एड्स सहित किसी न किसी एस टी डी रोग से संक्रमित होते हैं। कुछ अध्ययनों से ज्ञात

हुआ है कि मुम्बई के एस टी डी चिकित्सा केन्द्रों में आने वाले रोगियों में से 25 प्रतिशत रोगी एच आई वी से प्रभावित पाए गए हैं। आवारा बच्चों में एस टी डी की अधिक संभावना होती है। बेसहारा गरीब बालिकाएँ जो यौन शोषण का शिकार होती हैं उनमें अल्पायु से ही एस टी डी की संभावना प्रबल होती है।

एस टी डी के भंयकर परिणाम निकलते हैं जिसमें अंधापन, बांझपन और बहुत सारे मामलों में मृत्यु होना भी शामिल है। एस टी डी के संचारण या उसके फैलने का मुख्य कारण लापरवाही होती है। लोगों को इन रोगों के लक्षणों का पता नहीं होता इसलिए वे दूसरे लोगों को भी संक्रमित करते रहते हैं। वास्तव में एस टी डी के बहुत सारे लक्षण आसानी से ज्ञात नहीं होते। इसलिए यह रोग शरीर के एक हिस्से से दूसरे हिस्सों में फैल जाता है। असंख्य लोगों द्वारा विवाहेत्तर लैंगिक क्रियाओं में लिप्त रहने के कारण, भारत में एच आई वी/एड्स और एस टी डी संक्रमण के तेजी से प्रसार की संभावनाएँ मौजूद हैं।

एस टी डी तथा एच आई वी/ एड्स

एस टी डी तथा एच आई वी/ एड्स एक-दूसरे से घनिष्ठ संबंध रखते हैं। हम पहले ही बता चुके हैं कि एच आई वी का संक्रमण एस टी डी का आधुनिक रूप है जो मानव को संक्रमित करता है। इन दोनों की कुछ सामान्य व समान विशेषताएँ इस प्रकार हैं:

1) दोनों ही समान जोखिम भरे व्यवहारों से संक्रमित होते हैं। एस टी डी की रोकथाम के उपाय ही एच आई वी के संक्रमण पर लागू होते हैं।

2) जो व्यक्ति एस टी डी के रोग से पीड़ित है, वह आसानी से एच आई वी से संक्रमित हो सकता है। एच आई वी संक्रमण उन लोगों को अधिक संक्रमित करता है जो लोग पहले जननांगों में अल्सर पैदा करने वाले जैसे आतशक, रतिज व्रण और जनेन्द्रिय हर्पीज से पीड़ित होते हैं। यादि एस टी डी संक्रमण का ठीक समय पर इलाज करा लिया जाए तो एच आई वी संक्रमण के जोखिम को काफी हद तक कम किया जा सकता है।

3) एस टी डी रोग उसी तरीके से संचारित होता है जिस तरीके से एच आई वी का संक्रमण होता है। वैसे तो प्राय: ये रोग लैंगिक क्रियाओं से ही संचारित होते हैं किंतु इसके अतिरिक्त भी इसके फैलने के अनेक रास्ते हैं जैसे कि रक्त चढ़ाने, उत्तक या अंगों के प्रत्यारोपण करने और संक्रमित माँ के द्वारा उसके शिशु में।

4) भारत में आजकल शहरों और गाँवों में लोग एच आई वी और एस टी डी से समान रूप से संक्रमित हो रहे हैं।

देश में एच आई वी/ एड्स अबाध रूप से फैल रहा है, इसलिए यह बहुत महत्वपूर्ण हो गया है कि एस टी डी की रोकथाम और नियंत्रण के लिए कार्यनीतियों का निर्माण किया जाए ताकि इस भयंकर रोग पर लगाम लगाई जा सके। हमारे लोगों की जो सांस्कृतिक और सामाजिक पृष्ठभूमि है उसके मद्देनजर परम्परागत संवाद से अलग हटने की आवश्यकता है। हम देखते हैं कि हमारे सांस्कृतिक वातावरण में परिवारों और विद्यालयों में यौनिक सूचनाओं पर विचार-विमर्श नहीं किया जाता।

एस टी डी नियन्त्रण के लिए कार्यनीतियाँ

नाको (एन. ए. सी. ओ) ने एस टी डी/एच आई वी से संबंधित समस्याओं से निपटने के लिए चार स्तर की कार्य शैलियों को विकसित किया है:

1) समुचित और प्रभावी कार्यक्रम प्रबंधन का विकास

2) नैदानिक, उपचार, व्यक्तिगत परामर्श, भागीदार अधिसूचना और रोग से संबंधित जाँच के लिए व्यापक केस प्रबंधन विकसित करना।

3) केस का पता लगने और जाँच के माध्यम से संलक्षणात्मक संक्रमण के निदान और उपचार के लिए सुविधाओं को विकसित करना।

4) एस टी डी और एच आई वी के संक्रमण की रोकथाम के लिए आई ई डी क्रियाकलापों को प्रोत्साहित व उन्नत करना।

बोध प्रश्न I

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) एस टी डी क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2) एस टी डी तथा एच आई वी संक्रमण के बीच क्या संबंध है?

.....

.....

.....

.....

1.3 शराब, मादक द्रव्य दुरुपयोग और स्वास्थ्य

स्वास्थ्य और व्यवहार पर शराब तथा मादक द्रव्यों के दुरुपयोग का बुरा प्रभाव पड़ता है। यह एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। ऐसे अनेक रोग हैं जो शराब और मादक द्रव्यों के दुरुपयोग से बहुत भयानक और गंभीर हो जाते हैं। इनमें से दो एस टी डी और एच आई वी/एड्स बहुत ही गंभीर रोग हैं। शराब और मादक द्रव्य शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली पर विपरीत प्रभाव डालते हैं। साथ ही यदि रोगी एच आई वी से पीड़ित है तो उस व्यक्ति के स्वास्थ्य को तेजी से नष्ट कर देते हैं। इसके अतिरिक्त ऐसे व्यक्ति का व्यवहार उन लोगों के संबंधों पर बुरा प्रभाव डाल सकता है जो लोग उसकी देखभाल कर रहे हैं। भविष्य में यदि शराब और मादक पदार्थों के दुरुपयोग वाले सहायता प्राप्त करने वालों का यही व्यवहार रहा तो और संसाधनों में हिस्सेदारी के लिए सहयोग न करने के कारण संस्थाएँ तथा समुदाय उनकी सहायता सीमित कर सकते हैं।

व्यक्ति के स्वास्थ्य पर शराब और मादक द्रव्यों के दुरुपयोग से होने वाले प्रभावों की गंभीरता निम्नलिखित में से एक अथवा अधिक कारणों पर निर्भर करती है:

- शरीरिक स्वास्थ्य की सामान्य स्थिति
- तनाव और चिंताओं को कम करने की क्षमता
- पोषण की स्थिति
- रोग का इतिहास: पूर्व और वर्तमान

वास्तव में यह सत्य है कि मादक द्रव्यों के दुरुपयोग से शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली कमजोर होती है। शराब, और मादक द्रव्यों का दुरुपयोग करने से व्यक्ति की रोगाणुओं, विषाणुओं या परजीवी संक्रमणों से लड़ने की क्षमता कम हो जाती है। मादक द्रव्यों के दुरुपयोग और शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली के क्षेत्र में अनेक वर्षों तक किए गए गहन अनुसंधानों के परिणामस्वरूप निम्नलिखित तथ्य उभर कर आए हैं:

- मादक द्रव्यों के दुरुपयोग से रोग प्रतिरोधक शक्ति क्षीण हो जाती है।
- रोगों से लड़ने में सहायता करने वाले रोग प्रतिरोधी कारकों (एंटीबाडी) के निर्माण में कमी हो जाती है।
- उस प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया को धीमा कर देते हैं जो रोगों से सफलतापूर्वक संघर्ष करती हैं क्योंकि इससे प्रतिरक्षा प्रणाली कमजोर हो जाती है।
- रोगों से सफलतापूर्वक संघर्ष करने की शरीर की शक्ति को कम कर देती है।

शराब, मादक द्रव्य दुरुपयोग और एच आई वी/एड्स

शराब की लत हो जाना एक सामान्य बात है। अभी हाल ही में हुए अध्ययनों से पता चलता है कि अमरीका में दस व्यक्तियों में से एक व्यक्ति रसायनों पर निर्भर है। इसके साथ यह भी पता चला है कि अमेरिका में जहाँ सबसे पहले एड्स का पता चला विलासी जीवन व्यतीत करने वालों की जनसंख्या में प्रत्येक 10 व्यक्तियों में से तीन व्यक्ति शराब या फिर मादक द्रव्यों के प्रयोग से पीड़ित हैं। भारत में मादक द्रव्यों के दुरुपयोग करने वालों और एच आई वी/एड्स के बीच संबंधों के वास्तविक आँकड़े उपलब्ध नहीं हैं।

हालांकि मादक द्रव्यों की सूई लेने वाले व्यसनियों (आई वी डी यू एस) की रिपोर्ट से विदित होता है कि मादक द्रव्य और शराब का प्रयोग करने वालों में यह जोखिम बहुत ही अधिक होता है जिसके कारण एच आई वी जैसे घातक रोग का आसानी से संचारण होता है।

यह सच है कि शराब और मादक द्रव्यों के प्रयोग के कारण एच आई वी संक्रमण नहीं होता। फिर भी मन: स्थिति में परिवर्तन करने वाले मादक पदार्थ इसका सह-कारक हो सकते हैं। शराब और मादक द्रव्यों के दुरुपयोग का एच आई वी संक्रमण तथा एड्स के विकास के बीच संबंध होने की मुख्य चिंताएँ निम्नलिखित हैं:

1) जो लोग शराब पीते हैं या मादक द्रव्यों का प्रयोग करते हैं वे अधिकतर जोखिम भरे वाले कार्यकलापों में व्यस्त होते हैं जिनसे एच आई वी संक्रमण होते हैं तथा एच आई वी का संक्रमण व्यवहार से संबंधित होता है।

2) अतीत में शराब तथा मादक द्रव्यों का प्रयोग करने से कमजोर हुई प्रतिरक्षी प्रणाली के कारण ऐसे लोगों को संपर्क में आने से ही एच आई वी संक्रमण होने की संभावना रहती है।

3) जो व्यक्ति पहले से ही एच आई वी से संक्रमित है और वह लगातार शराब या मादक द्रव्यों का सेवन कर रहा है ऐसी स्थिति में उसकी प्रतिरक्षा प्रणाली निरंतर और अधिक नष्ट हो सकती है।

4) जो लोग शराब या मादक द्रव्यों का सेवन करते हैं वे प्राय: असुरक्षित यौनिक क्रियाओं में लिप्त रहते हैं। इस व्यवहार के कारण उनके जोखिम में वृद्धि होती है वे एच आई वी से ग्रसित हो सकते हैं। यदि वे पहले ही संक्रमित है तो एच आई वी संचालन का जोखिम बढ़ सकता है तथा वे स्वयं भी और अधिक संक्रमित हो सकते हैं।

आई वी डी यू अपने शरीर में मादक पदार्थ लेने के लिए साझी सुई का प्रयोग करते हैं। यदि समूह के लोगों में एक व्यक्ति संक्रमित हैं तो यह निश्चित है कि साझी सुई के प्रयोग के कारण समूह के अन्य लोग निश्चित रूप से संक्रमित हो जाएँगे। इनमें से कुछ मादक द्रव्यों के दुरुपयोग करने वाले लोग समलिंगी और इसी प्रकार इत्तरलिंगी लोगों के साथ जोखिम पूर्ण यौन क्रियाओं को निस्पादित करते हैं अथवा उनमें संलग्न रहते हैं। इससे संक्रमण के जोखिम में वृद्धि होती है।

बोध प्रश्न II

टिप्पणी: क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) किस प्रकार से मादक द्रव्यों का दुरुपयोग एस टी डी तथा एच आई वी सक्रंमण के जोखिम में वृद्धि करता है,

.....

.....

.....

.....

.....

1.4 महिलाएँ और एच आई वी/एड्स एवं एस टी डी

एच आई वी तथा एस टी डी से प्रभावित होने वाला अतिसंवेदनशील समूह महिलाओं का ही होता है। इसका प्रमुख कारण उनकी अज्ञानता है। दूसरा कारण यह है कि वे अपने इलाज के लिए एस टी डी चिकित्सा केंद्रों में नहीं जाती क्योंकि वे सामाजिक कलंक के भय से बचना चाहती हैं। वे अपने ही पतियों से संक्रमित होती हैं जो हो सकता है जिस-किसी से भी संभोग करते हों। ये महिलाएँ अज्ञानता तथा अस्वास्थ्यकारी स्थितियों के कारण अपनी गर्भस्थ संतान तथा अन्य पारिवारिक सदस्यों को संक्रमित कर सकती हैं।

दक्षिण पूर्वी एशिया के सभी देशों में जहाँ पर एस टी डी के संक्रमण की दर बहुत ही ऊंची है। वहाँ पर महिलाओं की स्थिति दोयम दर्जे की है। इस स्थिति ने वहाँ की महिलाओं को संक्रमण के मामले

में बहुत ही संवेदनशील बना दिया है। अत: वे संक्रमण से अपने आप को सुरक्षित करने और उनसे आपसी समझौता करने में बहुत कमजोर महसूस करती हैं। प्राय: यहाँ की महिलाओं का अवैध व्यापार किया जाता है और उन्हें व्यावसायिक यौन कर्मियों के रूप में जबरन धकेल दिया जाता है। इस प्रकार उनके एच आई वी से संक्रमित होने की सम्भावना बढ़ जाती हैं।

यद्यपि कोई भी व्यक्ति एस टी डी से संक्रमित हो सकता है किंतु कुछ ऐसे समूह हैं जिनके संक्रमित होने की अधिक सम्भावनाएं होती हैं। इनमें से कुछ समूह नीचे दिए गए हैं:

- वे लोग जो यात्राएँ करते हैं और प्रसन्न रहने के लिए लैंगिक क्रियाओं का सहारा लेते हैं।
- ट्रक ड्राइवर जो व्यावसायिक यौनकर्मी के साथ लैंगिक क्रियाएँ करते हैं।
- वे महिलाएँ जो व्यावसायिक यौन कर्मी हैं (वेश्याएँ)।
- देवदासियाँ (बालिकाएँ जिन्हें मंदिर में अर्पित कर दिया जाता है)
- समलैंगिक, महिला और पुरुष और उनके साझीदार।
- हिजड़े और उनके साथी जो लैंगिक क्रिया करते हैं।
- किशोर और आवारा बच्चे जो विभिन्न लोगों के साथ लैंगिक क्रियाओं में लिप्त रहते हैं।
- मादक द्रव्यों का दुरुपयोग करने वाले लोग जो विभिन्न लैंगिक क्रियाओं में लगे रहते हैं और उनके साझीदार।

कुछ एस टी डी रोग जैसे कि रतिज़ व्रण, आतशक एवं जनेंद्रिय हर्पीज को सामूहिक रूप से यौनिक अल्सर रोग (Gentral Ulcer Disease/GUD) के नाम से जाना जाता है। एक महिला जो पहले से ही जी यू डी से संक्रमित है और वह एच आई वी संक्रमित व्यक्ति से लैंगिक संबंध स्थापित कर लेती है उसके संक्रमित होने की सम्भावना सामान्य से अधिक होती है। इसी प्रकार जी यू डी से संक्रमित महिला अपने लैंगिक साथी को संक्रमित कर सकती है।

एस टी डी से संबंधित स्वास्थ्य समस्याएँ पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं में अधिक होती हैं। इसका सबसें बड़ा कारण यह है कि समस्या के गंभीर न होने तक वे इस ओर ध्यान नहीं देती तथा इलाज नहीं कराती। किसी भी तरह का घाव या स्राव महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों में आसानी से दिखाई दे जाते हैं। केवल महिलाओं में आंतरिक घाव या सूजन एच आई वी संक्रमण का बड़ा खतरा बन सकता है। महिलाओं में अनेक प्रकार के एस टी डी मौजूद होते हैं जो अपेक्षाकृत लक्षण विहीन होते हैं। इसलिए किसी भी तरह की जननिक संबंधी समस्याओं के संबंध में बहुत ही सावधान रहना चाहिए और तुरंत चिकित्सकीय सहायता लेनी चाहिए।

एस टी डी से पीड़ित महिलाओं में यौनि-ग्रीव का कैंसर भी हो सकता है। इन एस टी डी रोगों में एक है ह्युमैन पैपीलामा वायरस संक्रमण (एच पी वी) इससे जननांगों में मस्से (गाँठ) उभर जाते हैं। एच पी वी से संक्रमित रोगी को यौनि-ग्रीवा एवं जननिक कैंसर होने की संभावना बनी रहती है। किसी भी तरह के एस टी डी से संक्रमित गर्भवती महिला को सावधान रहने की आवश्यकता है। इसलिए उन्हें तुरंत ही स्वास्थ्य देखभाल कार्यकर्ता या परामर्शदाताओं से सलाह करनी चाहिए। यह तथ्य है कि एस टी डी सहित एच आई वी संक्रमित माताओं से शिशु में जन्मपूर्व या प्रसव के समय संक्रमण हो सकता है।

1.5 प्रजननात्मक स्वास्थ्य और मादक द्रव्य

एस टी डी तथा एच आई वी/एड्स प्रजननीय स्वास्थ्य को गंभीर हानि पहुँचाते हैं। प्रजननीय स्वास्थ्य को उन सम्पूर्ण शारीरिक, मानसिक और सामाजिक स्थितियों के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो प्रजनन प्रणाली तथा कार्य प्रक्रिया से संबंध रखती हैं। यह परिवार की योजना बनाने, परिवार, परामर्श तथा एस टी डी के इलाज से भी अधिक महत्व रखता है। यह मानव की लैंगिक क्रिया में दम्पति के जैविक और मानसिक घटकों के बीच संबंधों के रूप में पहचाना जाता है। इसमें लैंगिक स्वास्थ्य के अनेक पक्ष शामिल होते हैं जो निजी संबंधों को व्यापक बनाते हैं इस प्रकार जीवन को व्यापक बनाते हैं।

मादक द्रव्य प्रजननात्मक स्वास्थ्य को किस प्रकार हानि पहुँचाते हैं

सभी मादक द्रव्य जिसमें शराब तथा तम्बाकू शामिल हैं प्रजननीय स्वास्थ्य को हानि पहुँचाते हैं। वे निम्नलिखित तरीकों से प्रजननीय स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं:

- लैंगिक कार्यप्रणाली
- जननशक्ति
- गर्भधारण
- एच आई वी/एड्स

मादक द्रव्य तथा लैंगिक कार्यप्रणाली

यह आमतौर पर भ्रम बना हुआ है कि मादक द्रव्य और शराब के नशे से लैंगिक क्रिया में शक्ति मिलती है और अत्यधिक आनंद प्राप्त होता है। परंतु चिकित्सा जगत के अनुसंधानों से यह सिद्ध हो चुका है कि यह एक बेबुनियाद भ्रम है। वास्तव में शराब और मादक द्रव्य सामान्य व स्वस्थ्य लैंगिक संबंधों को नष्ट करते हैं। मादक द्रव्यों से यौन क्रिया की इच्छा में तो वृद्धि हो सकती है किंतु ये लैंगिक कार्य क्षमता को कम करते हैं।

यह गलत धारणा कुछ सामाजिक मान्यताओं के कारण बनी है। इन अवधारणाओं को मिथकों, हास्य कथाओं, गप्पों, फिल्मों तथा विज्ञापनों ने पुष्ट किया है। यदि वास्तव में मादक द्रव्य व्यक्ति की लैंगिक क्रिया शक्ति में वृद्धि करते हैं, तो यह मानसिक होता है। प्रसन्नता और आनंद का शराब या मादक द्रव्यों से कोई संबंध नहीं है बल्कि मस्तिष्क की महत्वपूर्ण भूमिका यह है कि लैंगिक क्रिया का अनुभव आनन्ददायक है या है नहीं। अनुसंधान यह सिद्ध कर चुके हैं कि लैंगिक क्रियाओं को शराब और मादक द्रव्य निम्न प्रकार से प्रभावित करते हैं:

- जो व्यक्ति नशे में होता है यह प्राय: लैंगिक क्रिया अथवा संभोग करने में असमर्थ रहता है। इसे नामर्दी के नाम से जाना जाता है। उनके शारीरिक अंग में लैंगिक क्रिया पूरी करने लायक उत्तेजना नहीं आती।

- स्त्री-पुरुष दोनों को ही वह अनुभव की आशा होती कि शराब पीने या मादक द्रव्यों के प्रयोग से प्रसन्नता और आनंद की मात्रा में वृद्धि हो जाती है। लेकिन नशा सामान्यत: उन्हें सुन्न व भावशून्य कर देता है जिससे लैंगिक सुख के अनुभव में कमी आ जाती है तथा उनमें अपने साथी को आनंदित करने की जिम्मेदारी का अनुभव नहीं होता।

- अनेक स्त्री-पुरुषों में नशे कें प्रभाव के कारण एक दूसरे के प्रति आकर्षण समाप्त हो जाता है। बात करते समय लड़खडाना, हकलाना, मुँह से दुर्गंध आना, क्रोध जैसे कुछ प्रभावों के कारण साथी का आकर्षण समाप्त हो जाता हैं।

- शराब और मादक द्रव्यों का प्रभाव उसकी स्मरण शक्ति पर पड़ता है और उसे नशे की अवधि में यह याद नहीं रहता है कि क्या किया गया। अगले दिन अनेक स्त्री-पुरुष बीते दिन के कार्यों के बारे में बहुत कम याद कर पाते हैं। वे शायद अपने को छिपाने के लिए बढ़-चढ़ कर बातें करेंगे या अपनी डींग हाकेंगे।

अनेक लोग शराब और मादक द्रव्यों को अपनी गहन लैंगिक तथा यौन संबंधों की समस्याओं को सुलझाने का उपाय मानकर उन्हें अपना लेना आरंभ कर देते हैं। संकोची स्वभाव, घबराहट, क्षमता के बारे में चिंता, अपने विचारों को दूसरों के समक्ष रखने की कमी और आत्मविश्वास न होना आदि कुछ प्रमुख समस्याएँ हैं। तथापि इन समस्याओं के समाधान के अनेक तरीके हैं तथा बिना किसी शराब या मादक द्रव्यों के भी लैंगिक क्रिया करने की शक्ति में वृद्धि की जा सकती है। इसलिए साथी के साथ प्यारे, स्नेहभरे, आदरपूर्ण संबंध बनाना प्रजननीय स्वास्थ्य का महत्वपूर्ण भाग है। इससे लैंगिक कार्यप्रणाली में वृद्धि और आनंद बढ़ाने में दोनों स्त्री-पुरुष को समान लाभ प्राप्त होगा।

शराब, मादक द्रव्य और जनन क्षमता

शराब और मांदक द्रव्यों का प्रयोग करने वाली स्त्रियों में गर्भधारण करना कठिन हो सकता है। पुरुषों द्वारा शराब का प्रयोग करने से उनमें शुक्राणु उत्पादकता नष्ट हो सकती है। नशे के कारण पुरुषों के शुक्राणुओं की संख्या में कमी हो जाती है तथा शुक्राणुओं की गतिशीलता भी कम हो सकती है। इस तरह से जो महिलाएँ शराब पीती हैं या मादक द्रव्यों का प्रयोग करती हैं उनमें अंडोत्सर्जन और उनके मासिक धर्म के स्वाभाविक चक्र में गड़बड़ी हो जाती है। इससे उनका गर्भधारण करना अधिक कठिन हो जाता है।

शराब, तम्बाकू, मादक द्रव्य और गर्भावस्था

गर्भवती महिलाओं को बिना चिकित्सक की सलाह के शराब, धूम्रपान, तम्बाकू अथवा अन्य मादक द्रव्यों का सेवन नहीं करना चाहिए। अनुसंधानों से पता चला है कि इन द्रव्यों का सेवन करने से अनेक भयानक समस्याएँ पैदा हो सकती हैं जैसे कि गर्भपात, शिशु में विकृति और उसमें व्यसन करने जैसी

संभावनाएँ बनी रहती हैं। जन्म के समय होने वाली त्रुटियाँ जैसे कि शिशु का कम वजन होना, मानसिक विकृति, शारीरिक विकृति और आंतरिक अंगों की विकृति आदि शामिल हैं। जब शराब का प्रभाव शामिल हो तो भ्रूण शराब संलक्षण (फोइटल ऊकोहल सिंडरोम एफ ए एस) अथवा भ्रूण शराब प्रभाव (फोइटल अल्कोहल इफैक्ट एफ ए ई) के नाम से जाना जाता है। गर्भावस्था में मादक द्रव्यों जैसे कि हेरोईन का प्रयोग करने वाली महिलाएँ, हो सकता है ऐसे बच्चें को जन्म दें जो शिशु हेरोईन का व्यसनी हो। ऐसे में जन्म के बाद मादक पदार्थ छोड़ने जैसे लक्षण हो सकते हैं जैसे कि प्रौढ़ व्यक्ति में होता है। व्यसन की आदत पर नियंत्रण पाने के लिए उन्हें जन्म के बाद शीघ्र अस्पताल में भर्ती कराने की आवश्यकता होती है ताकि उन्हें नशे से मुक्ति दिलाई जा सके।

गर्भवती महिलाओं के लिए शराब, तम्बाकू और अन्य मादक द्रव्यों के प्रयोग की कोई सुरक्षित सीमा निर्धारित नहीं की जा सकती। इसलिए सबसे अच्छा यही है कि गर्भावस्था में किसी प्रकार की शराब, मादक द्रव्यों का प्रयोग न किया जाए।

बोध प्रश्न III

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) किस प्रकार मादक द्रव्यों का दुरुपयोग प्रजननात्मक स्वास्थ्य को प्रभावित करते है?

.....

.....

.....

.....

.....

1.6 मादक द्रव्यों, यौन संचारी रोगों और एच आई वी/एड्स पर अध्ययन की प्रासंगिकता

प्राप्त अनुभवों के परिणामस्वरूप शिक्षा ऐसी प्रक्रिया है जिससे व्यक्ति के व्यवहार और उसकी जीवनशैली में परिवर्तन आता है। शिक्षा एक सीखने की प्रक्रिया भी है। जिसके माध्यम से व्यक्ति कुशल तथा बुद्धिमान बनने के लिए सूचनाओं को प्राप्त करता है।

इस संदर्भ में विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा दी गई स्वास्थ्य शिक्षा की परिभाषा अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके अनुसार सामान्य शिक्षा की तरह स्वास्थ्य शिक्षा भी लोगों के ज्ञान, भावनाएँ और व्यवहार में परिवर्तन से संबंधित है। इसका सर्वाधिक उपयोग यह है कि वह ऐसी स्वास्थ्य आदते विकसित करने पर ध्यान देती है जो मानव को यथासंभव सर्वोत्तम स्थिति प्रदान करती है।

मानव सभ्यता को भंयकर संकंट में डालने वाली दो महामारियों के संदर्भ में सबसे प्रभावी रोकथाम का उपाय है– सम्मपूर्ण और सटीक सूचना प्रदान करना। मादक द्रव्य दुरुपयोग, यौन संचारी रोग तथा एच आई वी एक-दूसरे से घनिष्ठ संबंध रखते हैं, जानकारी के अभाव में अनेक युवा लोग इन महामारियों के शिकार हो जाते हैं।

दूसरे 1980 के मध्य दशक से मीडिया के माध्यम से युवा लोगों का संपूर्ण विश्व से संपर्क हो रहा है। निश्चय ही विद्यालयों और शैक्षिक संस्थाओं में लैंगिक क्रियाओं में निरंतर वृद्धि हो रही है। हमारी कुल जनसंख्या का लगभग 40 प्रतिशत युवा वर्ग है, जो जीवन के तथ्यों से अनभिज्ञ है। यह वर्ग प्रयोग करने के लिए लैंगिक क्रियाओं में शामिल हो जाता है। अभी हाल के अध्ययनों से पता चलता है कि अब छोटी आयु के किशोर भी लैंगिक क्रियाओं में अत्यधिक संख्या में शामिल रहते हैं जबकि आज से दो दशक पहले ऐसा नहीं था। यदि हम 1960 के दशक के युवाओं से तुलना करें तो आज का युवा वर्ग पहले के युवाओं की अपेक्षा अब माता-पिता के नियंत्रण में बहुत कम है। इसके अतिरिक्त पारंपरिक मूल्यों में विशेषत: लैंगिक मूल्यों में अत्यंत गिरावट आई है।

आज से 30 वर्ष पहले के किशोर की तुलना में आज का किशोर वित्तीय दृष्टि से अधिक आत्म निर्भर है। यह वित्तीय सुविधा उन्हें अधिक गतिशीलता और विभिन्न प्रकार के नए व्यवहारों का प्रयोग करने के अधिक अवसर प्रदान करती है। उनके आदर्श अब नए-नए मॉडल, खेल सितारे, फिल्म सितारे, रॉक सितारे आदि हैं।

इन सभी का सामूहिक प्रभाव यह हुआ है कि आज का किशोर पहले के किशोर की तुलना में अधिक जोखिम वाले वातावरण में रहता है। हाल के अध्ययनों से पता चला है कि महानगरों में कम आयु की किशोरियाँ अधिक मात्रा में गर्भवती हो रही हैं। अनेक बालिकाएँ छिपकर अपना गर्भपात करा लेती हैं। हाई स्कूल की अनेक छात्राएँ आकस्मिक लैंगिक क्रियाओं की शिकार हुई और उन्हें जोखिम भरे गर्भपात करवाने पड़े हैं। इन सब तथ्यों से यह सिद्ध होता है कि आकस्मिक लैंगिक क्रियाएँ अब सामान्य घटनाएँ हैं। एच आई वी/एड्स की भयंकरता में वृद्धि होने के बाद हम आकस्मिक लैंगिक क्रियाओं एस टी डी और मादक द्रव्य दुरुपयोग को हल्के ढंग से नहीं ले सकते और न ही हम इनके बारे में लापरवाह हो सकते हैं।

अनेक महिलाएँ पुरुषों के जोखिम भरे व्यवहार के कारण एच आई वी/एड्स से पीड़ित हुई हैं। इस तरह से वे नवजात शिशुओं में भी इस भयानक बीमारी को संप्रेषित कर सकती हैं जिससे उन्हें इस अभिशाप के साथ जीना होगा। इसलिए सही और समुचित ज्ञान और समय पर उठाए गए कदमों से इसके नुकसान को कुछ अंशों तक कम किया जा सकता है और एक अच्छे स्वस्थ समाज के निर्माण में सहयोग प्रदान किया जा सकता है।

1.7 सारांश

यौन संचारी रोगों को एस टी डी कहते हैं। एड्स एक नया रोग है जो इनके साथ संबद्ध है। अधिकतर एस टी डी रोगों की भांति एड्स भी एक अत्यंत घातक रोग है। अज्ञानता, सामाजिक कलंक और शर्म या लज्जा के कारण एस टी डी का इलाज नहीं करवाया जाता। पिछले दो दशकों में एस टी डी में आश्चर्यजनक वृद्धि हुई है। मादक द्रव्यों का दुरुपयोग एस टी डी के त्वरित प्रसार में एक सहयोगी घटक है। नशे के कारण व्यक्ति लैंगिक क्रियाओं को समुचित रूप से पूरा करने में असमर्थ होता है। महिलाएँ एस टी डी से सबसे अधिक पीड़ित होती हैं। महिलाएँ अपने इस रोग को अनजाने में अपने बच्चों में संचारित कर देती हैं। सामाजिक स्थितियों में परिवर्तन होने के कारण, एस टी डी तथा एच आई वी समुचित जानकारी तथा इनका मादक द्रव्यों के साथ संबंधों के ज्ञान से एक अच्छे स्वस्थ समाज की रचना की जा सकती है।

1.8 शब्दावली

संक्रामक रोग (Communicable disease) : यह रोग एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को लग सकता है।

परजीवी संक्रमण (Parasitic infection) : परजीवी के कारण संक्रमण अर्थात् केंचुआ संक्रमण।

जोखिम वाला व्यवहार (Risk behaviour) : यह व्यवहार जो कि सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए घातक हो।

यौन संचारी रोग चिकित्सा केंद्र (STD clinic) : एस टी डी के इलाज के लिए विशेष चिकित्सा केंद्र।

प्रतिरोधी टीका लगाना (Vaccination) : प्रतिरोध, प्रतिरक्षा प्राप्त करने के लिए प्रतिरक्षण टीके द्वारा इलाज करना।

1.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

बी. के. महाजन और एम.वी. गुप्ता (1992), *प्रिवेंटिव एंड सोशल मेडिसिन*, जे. पी. ब्रदर्स, नई दिल्ली।

टेड एडीसन (1992), *एड्स केयर गिवर्स हैंडबुक*, सेंट मार्टीनर्स प्रेस, न्यूयार्क

थॉमस ग्रेशियस (1999), *प्रिवेंसन ऑफ एच आई वी/एड्स*, सी बी सी आई कमीशन फॉर हेल्थ, नई दिल्ली।

थॉमस, ग्रेशियस (1997), *प्रिवेंसन ऑफ एड्स : इन सर्च ऑफ आन्सवर्स*, शिप्रा पब्लिकेशनस्, नई दिल्ली।

1.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न I

1) एस टी डी का अर्थ है यौन संचारी रोग। पहले इन्हे रतिज रोग अथवा यौन रोग कहा जाता था। ये मुख्य रूप से वायरल संक्रमण द्वारा फैलते हैं। इनमें से अधिकांश का इलाज संभव है। इनमें स्वास्थ्य को विशेषकर प्रजननीय अंगों को गंभीर नुकसान हो सकता है। इनमें से कुछ महिलाओं को स्थाई रूप से बांझ बना सकते हैं कुछ रोगी को पागल बना सकते है।

2) एस टी डी और एच आई वी/एड्स दोनों ही लैंगिक क्रियाओं के माध्यम से फैलते हैं। दोनों ही संचारी रोग हैं। दोनों के फैलने के कारण वायरल संक्रमण है। उच्च जोखिम वाले व्यवहार के कारण कुछ लोगों को यह सरलता से प्रभावित कर देता है। इन सभी मामलों में एस टी डी और एच आई वी/ एड्स संक्रमण महिलाओं में सरलता से होने की संभावना होती हैं। एस टी डी बहुत पुराने रोग हैं किंतु एच आई वी/एड्स बिल्कुल नया रोग है।

बोध प्रश्न II

1) शराब एवं मादक द्रव्यों के दुरुपयोग से तर्क संगत व्यवहार की क्षमता में कमी आ जाती है जो व्यक्ति को जोखिम वाले व्यवहारों की ओर ले जाती है। दूसरे शराब और माद्क द्रव्य व्यक्ति के प्रतिरक्षा स्तर को कम देते हैं। तीसरे, कम प्रतिरक्षा वाला व्यक्ति संक्रमित व्यक्ति के सम्पर्क में आता है तो उस व्यक्ति के संक्रमित होने की संभावना हो जाती है।

बोध प्रश्न III

1) प्रजननीय स्वास्थ्य में लैंगिक क्रिया, जननक्षमता और गर्भावस्था शामिल होती है। शराब समान्य लैंगिक क्रिया को कमजोर करने में एक निर्णायक तत्व है क्योंकि नशे में व्यक्ति विवेक का प्रयोग नहीं कर सकता जो लैंगिक क्रिया सफल बनाते हैं। वहीं पर अपने लैंगिक साथी को हानि भी पहुँचता है। मादक द्रव्य प्रजनन क्रिया में संबंधित अंगों की श्रेष्ठ कार्य प्रणाली को कम कर देते हैं। शराब गर्भवती महिला की रक्त वाहिनियों में प्रवेश कर गर्भ में पल रहे शिशु को भी हानि पहुँचाती हैं।

इकाई 2 व्यक्ति पर मादक द्रव्य दुरुपयोग के परिणाम

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 रसायन किस प्रकार से शरीर और मस्तिष्क को प्रभावित करते हैं?

2.3 अतंरवैयक्तिक संबंध और मादक द्रव्य दुरुपयोग

2.4 व्यसन की स्थिति (अवस्था)

2.5 रोग के रूप में व्यसन

2.6 नकारना

2.7 व्यसन के आर्थिक परिणाम

2.8 व्यसन और धार्मिक विश्वास

2.9 सारांश

2.10 शब्दावली

2.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

2.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.0 उद्देश्य

इस इकाई में व्यसनकर्ता के शरीर और बुद्धि पर रसायन दुरुपयोग के प्रभावों के विषय में बताया है। इसमें यह भी स्पष्ट किया जाएगा कि मादक द्रव्य दुरुपयोग किस प्रकार समाज में अंतरवैयक्तिक संबंधों व ईश्वर के साथ संबंधों को विकृत कर देते हैं। इस इकाई में यह भी बताया जाएगा कि इससे व्यसनकर्ता की सामाजिक–आर्थिक स्थिति कैसे बिगड़ती है। इस इकाई का उद्देश्य है कि आपको व्यसनकर्ता के व्यावहारिक आचरण के परिवर्तन की जानकारी दी जाए। इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात् आप जान सकेंगे:

- व्यक्ति पर व्यसन से शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक कितनी हानि होती है;
- व्यसनी के आचरण को समझना और उसका विश्लेषण करना; और
- व्यक्ति पर व्यसन के सामाजिक–आर्थिक प्रभाव।

2.1 प्रस्तावना

रसायन दुरुपयोग व्यक्ति की शारीरिक मानसिक और भावनात्मक स्थिति को विकृत कर देता है। ऐसा करने से व्यसनी की आर्थिक स्थिति बिगड़ जाती है और उसके सामाजिक संबंध खराब हो जाते हैं।

व्यक्ति अपनी समस्याओं के समाधान के लिए मादक द्रव्यों का प्रयोग करने लगता है। समस्याओं के हल की बजाए उसकी समस्याओं में वृद्धि होने लगती है। मादक द्रव्य शरीर के महत्वपूर्ण अंगों को नष्ट करना आरंभ कर देते हैं जैसे कि जिगर, मस्तिष्क, दिल, गुर्दा आदि। इस स्थिति में वह स्वयं के लिए किसी प्रकार का उपार्जन करने में असमर्थ हो जाता है जबकि व्यसन से उसे मादक द्रव्यों को खरीदने के लिए अधिक धन की आवश्यकता पड़ती है।

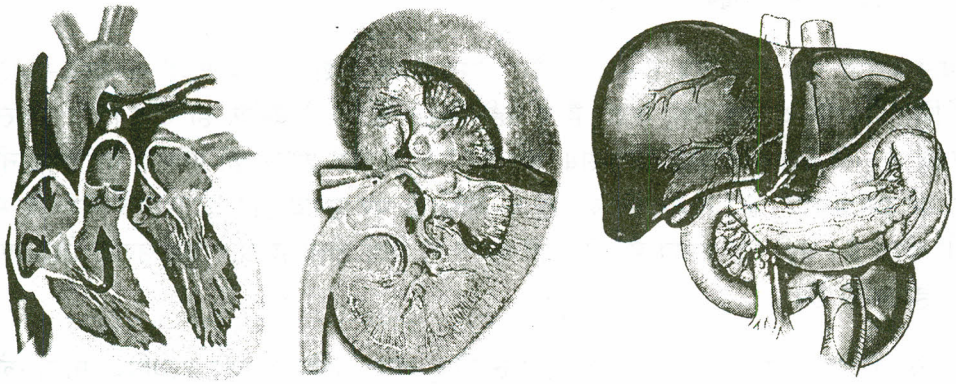

इस इकाई में व्यसनी की बुद्धि और शरीर पर मादक द्रव्यों के पड़ने वाले प्रभावों का वर्णन किया जाएगा। मादक द्रव्यों के दुरुपयोग के परिणामों और सामाजिक स्थितियों का भी विश्लेषण किया जाएगा।

2.2 रसायन किस प्रकार से शरीर और मस्तिष्क को प्रभावित करते हैं?

शरीर

जिज्ञासा हम सबको नई वस्तुओं को देखने–सीखने का अवसर देती है। अधिकतर लोग जिज्ञासावश मादक द्रव्यों का दुरुपयोग करना आरंभ करते हैं, इनमें से कुछ सौभाग्यशाली होते हैं जो मादक द्रव्यों का उपयोग बंद कर देते हैं किंतु इनमें से बहुत से लोग दुर्भाग्यवश इसके आदी हो जाते हैं। मादक द्रव्यों का दुरुपयोग आनंद लेने के लिए किया जाता है। परंतु जब लोग निरंतर व्यसन जारी रखते हैं तो उन्हें किसी प्रकार का आनंद प्राप्त नहीं होता अपितु यह उनकी आवश्यकता बन जाती हैं। मादक द्रव्यों का सेवन करने के बाद व्यसनी को चिंताओं से कुछ राहत मिलती है। परंतु इस पदार्थ को लेने के लिए भारी कीमत चुकानी पड़ती है।

आरंभ में मादक द्रव्यों का प्रयोग स्व–चिकित्सा के रूप में लेना आरंभ करते हैं, जैसे कि नींद न आना, चिंताओं को कम करने, शरीर में चुस्ती–फुर्ती लाना इत्यादि। यदि किसी भी व्यक्ति को पहले ही यह पता लग जाए कि आगे जाकर उसे भारी कीमत चुकानी पड़ेगी तो कोई भी व्यक्ति मादक पदार्थों का सेवन आरंभ नहीं करेगा। मादक द्रव्यों का सेवन अल्पकाल के लाभ के लिए आरंभ किया जाता है, जैसे कि अच्छे सामाजिक संबंध स्थापित करने, तनाव या दबाव से मुक्ति प्राप्त करने या ऐसे ही अन्यानेक मादक द्रव्य दीर्घकाल में शरीर के लिए सभी हानिकारक सिद्ध होते हैं। मादक द्रव्य के कुछ प्रतिशत व्यसनकर्ता दीर्घकाल में मादक द्रव्य लेने के कारण आसानी से जोखिम का शिकार हो जाते हैं जबकि

मादक द्रव्य न लेने वालों में प्रतिरोध की क्षमता होती है। मादक द्रव्यों के दिखाई देने वाले एक जैसे जोखिम होते हैं लेकिन वास्तव में अलग–अलग मादक द्रव्यों के विभिन्न प्रकार के जोखिमों के कारण व्यसनकर्ता उनकी शारीरिक, मानसिक और सामाजिक कीमत को नहीं जान पाते जो उन्हें कभी भी चुकानी पड़ सकती है। अपने उद्देश्य को स्पष्ट करने के लिए हमें इन हानियों का वर्गीकरण करना होगा। तो भी कोई एक हानि एक व्यक्ति के लिए या दूसरे मादक द्रव्य पर अधिक लागू हो सकती है।

मादक द्रव्यों का तीक्ष्ण विषैला प्रभाव

विषैले प्रभाव का अर्थ विष है। हम लोग 'उम्मद' या नशे नामक शब्द से भली–भांति परिचित हैं। जो व्यक्ति नशा करते हैं वे नहीं चाहते हैं कि वे बेहोश हो जाएँ। वह केवल आनंद अनुभव करने के लिए ही शराब पीते हैं। परंतु उसके शरीर की प्रक्रिया पर रसायनों का जो प्रभाव होता है। विशेषकर व्यक्ति के मस्तिक पर प्रभाव होता है उसके नियंत्रण में नहीं होता है। यही वह प्रभाव है जो नशा करने से पैदा होता है और यह उसके नियंत्रण में नहीं होता है।

स्वापक मादक द्रव्यों की अधिक मात्रा को लीजिए और व्यक्ति इनकी अत्यधिक मात्रा को लेता है। यदि आप शामक द्रव्य को शराब में मिला कर पीते हैं तो उस स्थिति में आप मूर्च्छा में चले जाएँगे अथवा आपकी सांस पूर्ण रूप से लड़खड़ाने लगेगी। प्रत्येक मादक द्रव्य यदि अत्यधिक मात्रा में लिया गया है तो अवश्य ही वह विषैला प्रभाव दिखाएगा। यहाँ तक कि यदि आप कॉफी का अत्यधिक मात्रा में सेवन कर लेते हैं तो निश्चित रूप से 'तीक्ष्ण कॉफी विष' बन जाएगा।

दीर्घकालीन शारीरिक जोखिम

मादक द्रव्यों का शरीर पर पड़ने वाले प्रभाव रसायनों की विशेषताओं के अनुसार परिवर्तित होते हैं। खंड 1 की इकाई 2 में विभिन्न मादक द्रव्यों के दीर्घकालीन और अल्पकालिक प्रभावों की एक सूची दी गई है। इसी इकाई में शराब के सेवन से हाथ–पाँवों के स्नायु तंत्र अपना कार्य करना बंद कर देते हैं, यहाँ तक की मस्तिष्क की कोशिकाओं और ज़िगर को भी नष्ट कर देते हैं।

लसीला या चिपचिपा पदार्थ गुर्दे को नष्ट कर सकता है और वहीं पर मस्तिष्क में कोशिकाओं की झिल्ली को भी नष्ट कर सकता है तथा कुछ प्रकार की श्वेतरक्ता को भी हानि पहुँचा सकता है। कोकीन हृदय को कमजोर कर सकती है और एम्फेटामीन कभी–कभी मस्तिष्क को स्थायी रूप से क्षतिग्रस्त कर सकती है। स्वापक, कोकीन तथा एम्फाटामीन एवं शराब का लम्बे समय से सेवन करने से कुपोषण हो जाता है और परिणामस्वरूप संक्रमण और रोगों की संभावना अधिक हो जाती है। गांजा या भांग का लम्बे समय से सेवन फेफड़े और श्वास प्रणाली क्षतिग्रस्त हो जाती है। लगातार धूम्रपान करने से फेफड़ों का कैंसर हो सकता है।

नसों में मादक द्रव्य लेने वालों को अनेक संक्रामक रोगों से पीड़ित होने की संभावनाएँ बढ़ जाती हैं, जिसके कारण शोथ अथवा हृदय आघात हो सकता है जिससे हृदय के वाल्व खराब हो सकते हैं। उन्हें एच आई वी संक्रमण का जोखिम भी हो सकता है। अधिकतर व्यसनकर्ता सूई को विसंक्रमित नहीं करते हैं और कई बार वे लोग एक ही संक्रमित सूई का प्रयोग करते हैं। सूंघने या एक घूंट में पीने वाले मादक द्रव्य से भी नाक की नाजुक झिल्ली फट सकती है।

भ्रूण में शराब के संलक्षण

शराब गर्भावस्था में शिशु को गहन हानि पहुँचाती है। अध्ययनों से ज्ञात होता है कि गर्भ में भ्रूण पर शराब की मात्रा, और उसके लगातार सेवन का विभिन्न प्रकार से प्रभाव पड़ता हैं। विशेषकर गर्भावस्था के पहले 12 सप्ताहों में भ्रूण पर शराब के गंभीर प्रभाव पड़ते हैं। इसके बाद शिशु के विकास में जहाँ बाधा आती है वहीं पर उसकी मस्तिष्क परिपक्वता नष्ट हो जाती है। इसके परिणामस्वरूप नवजात शिशु के मस्तिष्क में कमी आ जाती है। माता के रक्त में शराब की अधिकता के कारण गर्भपात भी हो सकता है।

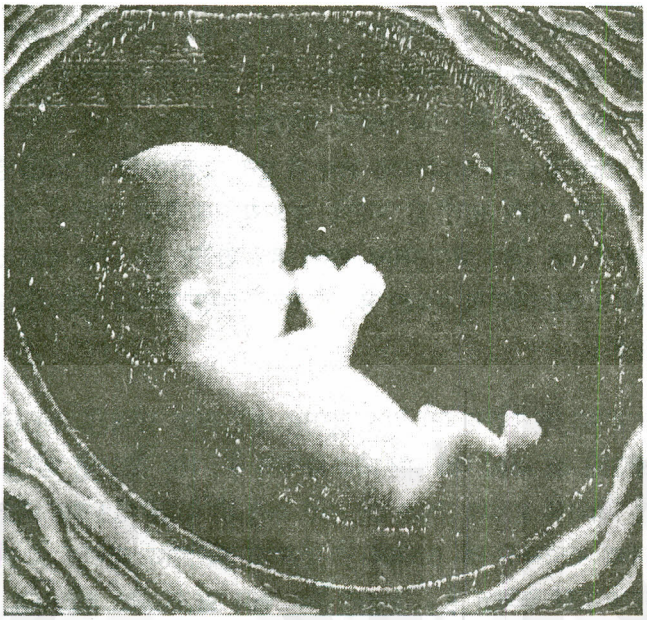

केवल शराब ही गर्भावस्था में शिशु को हानि नही पहुँचाती है अपितु धूम्रपान सहित अनेक मनोसंवेदी माद्क द्रव्य भ्रूण संरचना में विकार पैदा कर सकते हैं। नाभिकाल (प्लेसेंटा) की रुकावटें स्वापक के लिए प्रभावशाली नहीं रहती यथा व्यसनकर्ता के बच्चों में जन्म से ही मादक द्रव्य लेने की ललक पैदा हो सकती है।

मस्तिष्क (बुद्धि)

सभी मादक द्रव्यों का बुरा प्रभाव होता है। परंतु सबका प्रभाव समान रूप से हानिकारक नहीं होता। अधिकतर मादक द्रव्यों का सबसे बुरा प्रभाव मस्तिष्क पर होता है। इसलिए हम मनोसंवेदी मादक द्रव्यों पर अपना ध्यान अधिक केंद्रित करते हैं। कुछ ऐसे मादक द्रव्य मादक द्रव्य दुरुपयोग और उसके परिणाम हैं जो मस्तिष्क के कार्य को परिवर्तित करने में समर्थ हैं। इस भाग में हम मादक द्रव्यों द्वारा व्यक्ति में मानसिक परिवर्तन करने के विभिन्न तरीकों के सबंध में विचार करेंगे। मनोवैज्ञनिक प्रभाव केंद्रीय स्नायुतंत्र प्रणाली (सी एन एस) में विकार होने के कारण ही होता है।

केंद्रीय स्नायु तंत्र प्रणाली में मस्तिष्क और संदेश नियंत्रित करने वाले स्नायु शामिल हैं। ये स्नायु मस्तिष्क से संदेश प्राप्त कर शरीर के दूसरे हिस्सों में इस संदेश को भेजते हैं। प्रायः सभी मादक द्रव्य केंद्रीय स्नायु तंत्र प्रणाली के कार्यों को या तो कम कर देते हैं या उसकी प्रक्रिया में और अधिक गति बढ़ा देते हैं।

मादक द्रव्य रक्त वाहिनियों के माध्यम से मस्तिष्क के केंद्रीय स्नायु तंत्र प्रणाली में प्रवेश करते हैं। एक बार रक्त वाहिनी में मादक द्रव्य के पहुँचने पर वह द्रव्य पूरे शरीर में प्रवेश

कर जाता है। तथापि ये केवल उसी हिस्से को प्रभावित करते हैं जहाँ ग्रहण किया जाता है। इस नियम में केवल एक ही बाधा आती है कि कुछ मादक द्रव्य रक्त की मस्तिष्क बाधाओं को पार नहीं कर पाते हैं, जो केंद्रीय स्नायु तंत्र प्रणली की रक्षा करते हैं। केंद्रीय स्नायु तंत्र प्रणाली में अधिकतर मनोसंवेदी मादक द्रव्य सूत्र युग्मन के जिम्मेदार होते हैं। क्योंकि स्वाभाविक मार्ग के लिए होती है जिसके साथ-साथ मस्तिष्क के सिग्नल चलते हैं उसकी कोशिकाओं में अतंराल होता है। प्रायः ये तब तक इस प्रतिक्षा में रुके रहती हैं जब तक सूत्रयुग्मन में भंडारित रसायनिक तंत्रिका संचारणों का निकास नहीं हो जाता और उन्हें निकासी की मार्ग नहीं दिया जाता।

मादक द्रव्य तंत्रिका संचारण को उत्तेजित या बाधित कर सकते हैं। अथवा वे आवेग के सूत्र युग्मन को पार करने के बाद उन्हें समाप्त करने से रोक सकते हैं। उदाहरण के लिए तंत्रिका संचालन समूह, एक सिग्नल (मानो एमाइंस) प्रेषित किया जाता है तथा युग्मन अँतंराल से बाहर आता है। वह आवश्यक रूप से पुनः चक्रीय क्रिया होती है। कोकीन इस प्रेषण को बाधित करती नज़र आती है जबकि सूत्र युग्मन तैरते रहते हैं तथा आवेश संदेश को पुनः प्रेषित करने के लिए प्रवाहमान रहते हैं। शरीर के पास एक तरीका होता है जिससे वह इन्जायम का निर्माण करता है जो मोनो एमाइंस का प्रतिरूप तैयार कर उन्हें समाप्त कर देता है।

अधिकांश मादक द्रव्यों से भिन्न जो सूत्र युग्मन की कार्य प्रणाली को विकृत करते हैं। शराब तंत्रिका झिल्ली के कार्य को प्रभावित करती है। यह झिल्ली को और लचीला या तरल बना देती है जिससे आवेश प्रवाह की गति कम हो जाती है। इस प्रक्रिया में मस्तिष्क अपने पास उपलब्ध रसायनों के माध्यम से इसका प्रतिरोध करता है और झिल्ली को कठोर बनाने का प्रयास करता है। अप्राकृतिक रूप से कठोर हुई तंत्र कोशिकाओं के कारण इसके परिणामस्वरूप संयम संलक्षण (शराब के लक्षण त्याग) पैदा हो जाते हैं तथा आवेश की गति तेज हो जाती है। यह प्रवाह करने की प्रक्रिया आरंभ कर देती है।

मादक द्रव्य के दुरुपयोग के स्वास्थ्य संबंधी परिणाम

मादक द्रव्य स्वास्थ्य को नष्ट कर देते हैं। स्वास्थ्य बिगड़ने की सीमा इसकी डिग्री और प्रकार प्रयोग किए जाने वाले मादक द्रव्य पर निर्भर होता है जो निम्न प्रकार हैं:

- मादक द्रव्य के प्रकार
- मादक द्रव्यों के सेवन की अवधि
- प्रयोग करने का तरीका
- उपयोग की मात्रा
- अवैध आपूर्ति में मिलावट
- अन्य उच्च जोखिम वाले व्यवहार

फ्रीस्चर ने 1994 में अपने एक अध्ययन में बताया है कि पूरे विश्व में मादक द्रव्यों के दुरुपयोग से हर साल लगभग 2,00,000 लोगों की मृत्यु हो जाती है। इस संबंध में सरकारी आँकड़े बहुत कम दर्शाते हैं। अधिकतर देशों के पास मादक द्रव्यों के दुरुपयोग से होने वाले नुकसान की सूचना एकत्रित करने के लिए समूचित साधन नहीं हैं।

मादक द्रव्य जैसे कि हेरोईन की अधिक मात्रा का सेवन करने से मृत्यु हो सकती है। शराब की अधिक मात्रा लेने पर मृत्यु की संभावनाएँ नहीं होती। लम्बे समय तक मादक द्रव्यों का दुरुपयोग करने से स्वास्थ्य को खतरा हो जाता है। अधिकांश व्यसनकर्ता जो स्वापक और उत्तेजक मादक द्रव्यों का सेवन करते हैं वे अकाल मौत के ग्रास बन जाते हैं। शराब और गांजा पीने वाले अधिक लम्बी अवधि में व्यसनी बनते हैं, इसलिए उनमें स्वास्थ्य समस्याएँ विलम्ब से सामने आती हैं। जिन मादक द्रव्यों को मुँह से लिया जाता है उनके अधिक मात्रा में लेने की संभावनाएँ कम हैं। यदि कोई व्यक्ति अधिक मात्रा में मादक द्रव्यों का सेवन कर भी लेता है तो उसे उल्टी हो जाती है जिससे विषैला प्रभाव कम हो जाता हैं। मादक द्रव्यों में मिलावट से गंभीर स्वास्थ्य समस्याएँ पैदा हो जाती है। मादक द्रव्यों में मिलावट इसलिए की जाती है कि एक तो उनकी मात्रा और क्षमता में वृद्धि हो जाए। इसमें मिलावट के लिए जहरीले द्रव्यों को मिलाया जाता है। गलियों में बेचे जाने वाले मादक द्रव्यों मे चूहे मारने का विष, डी डी टी तथा अन्य विषैले तत्वों को मिलाया जाता है।

मादक द्रव्य दुरुपयोग अनेक जोखिम वाले कार्यों की ओर ले जाते हैं। मतिभ्रम से व्यक्ति को दूरी और आवाज़ की गलत अनुभूति हो सकती है। अनेक दुर्घटनाएँ मतिभ्रम के कारण होती हैं। मादक द्रव्यों से व्यक्ति में जोखिम भरी लैंगिक आदत पड़ जाती है जिससे वह एच आई वी से संक्रमित हो सकता है।

2.3 अंतरवैयक्तिक संबंध और मादक द्रव्य दुरुपयोग

संबंध व्यक्तिगत और सामाजिक दोनों ही तरह के होते हैं। मादक द्रव्यों के दुरुपयोग का प्रभाव केवल किसी व्यक्ति पर अकेले नहीं होता है बल्कि यह सामाजिक स्तर पर भी होता है। इनसे परिवारिक समस्याएँ भी पैदा होती हैं। मादक द्रव्यों के दुरुपयोग के परिणामस्वरूप प्रमुख समस्याएँ आती हैं जैसे आर्थिक असुरक्षा, परिवार में हिंसा, समाज में हिंसा और बच्चों की उपेक्षा आदि।

परिवार घटकों और माद्क द्रव्यों के बीच बहुत ही जटिल संबंध होते हैं। मादक द्रव्यों के दुरुपयोग के कारण अनेक परिवार टूटते हैं यह भी तथ्य है कि टूटे हुए परिवार व्यसन के प्रमुख घटक का एक हिस्सा है।

भावनात्मक चिंताओं से पीड़ित व्यक्ति, इसके सामाधान के लिए मादक द्रव्यों का प्रयोग करता है। अपनी मानसिकता के कारण व्यक्ति जीवन में आने वाली समस्याओं का सामना नहीं कर पाता। अंतरवैयक्तिक संबंधों की समस्याएँ हल करने के लिए संतुलित बुद्धि की आवश्यकता होती है।

मादक द्रव्यों का प्रयोग समस्या का समाधान करने के स्थान पर समस्याओं को और अधिक जटिल बनाते हैं। व्यसनकर्ता अपनी लत को पूरी करने के लिए हमेशा अपने परिवार तथा मित्रों से अलग रहने का प्रयास करता है। इसके परिणामस्वरूप, योजनाएँ समाप्त हो जाती हैं। लैंगिक उपेक्षा, तर्क–वितर्क और तनाव में वृद्धि हो जाती है। संबंधियों और मित्रों से संवाद समाप्त हो जाता है क्योंकि व्यसनकर्ता पीछे हट जाता है। उनमें भावनात्मक दूरी बन जाती है। साथ ही व्यसनकर्ता अपनी आदत में हस्तक्षेप को सहन नहीं करता। व्यसनकर्ता अविश्वसनीय बन जाता है तथा किसी भी वायदे को पूरा

नहीं करता और इस प्रकार उसके प्रति अविश्वास पैदा हो जाता है। जब अविश्वास पैदा हो जाता है तो वहाँ पर कोई संबंध नहीं बनता।

इस अवस्था में व्यसनकर्ता को दूसरों से भावनात्मक सहारे की आवश्यकता होती है। इसे प्राप्त करने के लिए वह चालाकी, झूठ और धोखे का सहारा लेता है। यद्यपि उसे सामाजिक भावनात्मक संबंधों की आवश्यकता महसूस होती है तो भी उसका महत्वपूर्ण संबंध अपने मनपसंद मादक द्रव्य प्राप्त करने का होता है चाहे वह शराब हो अथवा कोई अन्य मादक द्रव्य। वह व्यर्थ में ही अपने संबंधों को वास्तविकताओं के विपरीत संयोजित करने का प्रयास करता है। ये विपरीत अवस्थाएँ हैं, एक ओर मादक द्रव्य हैं और दूसरी ओर परिवार/मित्रगण। वह इनमें से किसी को भी छोड़ नहीं सकता, परंतु उसकी पसंद मादक रसायन ही होते हैं और वह टूटते रिश्तों के बीच अपने आप को फंसा हुआ पाता है तो वह अपने व्यसन के लिए उन लोगों को दोष देता है जो उसके संबंधी होते हैं। यह जानना महत्वपूर्ण है कि सुधार कार्यक्रम में वह अपने संबंधों को धोखा देने का प्रयास करता है तथा अपने व्यसन व्यवहार को बनाए रखने में उनको साधन बनाने का भी प्रयास करता है।

मनोवैज्ञानिक परिवर्तन

मादक द्रव्यों का प्रयोग इसलिए किया जाता है कि प्रयोग करने वाला व्यक्ति अपने आपको अच्छा महसूस करे। आरंभ में व्यक्ति को अच्छा महसूस भी होता है। उसमें आत्मविश्वास आ जाता है तथा वह स्वयं को चिंताओं और तनाव से मुक्त पाता है। लगातार मादक द्रव्यों का प्रयोग करते हुए वह एक ऐसी स्थिति में पहुँच जाता है, जहाँ सामान्य रहने के लिए ही उसे मादक द्रव्यों को प्रयोग करना आवश्यक हो जाता है। इस स्थिति में व्यक्ति को मादक द्रव्य कोई आनंद नहीं देते। इस समय वह ऐसे बिंदु पर होता है कि पीड़ा को कम करने के लिए उसे मादक द्रव्य लेने पड़ते हैं। यही वह स्थिति है जिसे मादक द्रव्यों का प्रयोग न करने वाले लोग गलत समझते हैं। उन्हें ऐसा लगता है कि व्यसनकर्ता मादक द्रव्यों का प्रयोग मौज–मस्ती के लिए प्रयोग कर रहा है। परंतु सच्चाई यह है कि मादक द्रव्य उसे कुछ आनंद नहीं देते। वह मादक द्रव्यों को लेने के लिए इसलिए बाध्य है कि वह इन्हें छोड़ नहीं सकता है।

मादक द्रव्य दुरुपयोग भावनात्मक मुद्दा भी है। एक व्यक्ति व्यसनी होने से पूर्व भावनात्मक मुद्दों को समझने व समाधान करने में असमर्थ होता है। अब मादक द्रव्यों के प्रयोग से उसकी मनःस्थिति बदलने लगती है तथा उसका व्यक्तित्व बदल जाता है। वह विवश होकर अपराध भावना, हीनता, क्रोध और अलगाव से संघर्ष करता है। व्यसन की अंतिम अवस्था में पहुँचने के बाद वह भाव शून्य हो जाता है और अपने चारों ओर के परिवेश से विरक्त हो जाता है।

मादक द्रव्य केंद्रीय तंत्रिका प्रणाली को प्रभावित करता है। यह उसके विवेक और तर्क संगत कार्य प्रणाली को प्रभावित करता है। मादक द्रव्यों का लगातार प्रयोग करने से उसकी ही छवि विकृत हो जाती है। अपने अस्तित्त के उद्देश्य की कमी का अनुभव तथा अपने चारों ओर वास्तविकता को समझने के विभ्रम में वृद्धि होने लगती है।

आरंभ में व्यसनकर्ता अपनी समस्याओं के समाधान के लिए मादक द्रव्यों का प्रयोग करता हैं, किंतु वही अब उसकी समस्याएँ बन जाती है। परंतु वह उन्हें समझने में सक्षम नहीं होता है।

बोध प्रश्न I

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) मादक द्रव्य दुरुपयोग का क्या मनोवैज्ञानिक प्रभाव होता है?

.....

.....

.....

.....

.....

2.4 व्यसन की स्थिति (अवस्था)

व्यसन एक रोग है। यह रोग बढ़ता जाता है। जब तक व्यक्ति इसके वश में नहीं हो जाता है या उसका अंत नहीं होता यह विभिन्न स्तरों से गुजरता है। व्यसनकर्ता के व्यसन में वृद्धि होने की निम्नलिखित अवस्थाओं को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है:

प्रारंभिक स्थिति

- मादक द्रव्य की ली गई मात्रा तथा ली गई खुराकों में वृद्धि हो जाती है। माद्क द्रव्य लेते हुए काफी समय व्यतीत होने के बाद और अधिक रसायनों की इच्छा पैदा होती है।

- व्यसनकर्ता के विचार हमेशा मादक द्रव्य के संबंध में होते हैं। वह हमेशा मादक द्रव्य के बारे में विचार करता है, उनकी बात करता है तथा मादक द्रव्यों की उपलब्धि के उपायों की खोज करता है ताकि मादक द्रव्यों की आपूर्ति बनी रहे।

- अपनी मादक द्रव्य की लत को बनाए रखने के लिए जीवन की सभी स्थितियों में परिवर्तन करता है वह मादक द्रव्यों के अलावा सभी खर्चों में कटौती करता है ताकि मादक द्रव्य प्राप्त करने के लिए समुचित धन हो।

  मादक द्रव्यों के सेवन को तर्कसंगत बताएगा। वह अनजाने में स्वयं को तथा दूसरों को विश्वास दिलाने का प्रयास करेगा कि मादक द्रव्य हानिकारक नहीं होते। सभी मादक द्रव्यों के प्रयोग के खतरे से बचने की चेतावनी को गलत मानता है और उसे तथ्यों पर आधारित नहीं मानता।

मध्य स्थिति

- मादक द्रव्य लेने के लिए उसकी सहन शक्ति में वृद्धि हो जाती है। व्यसनकर्ता उसी मादक द्रव्य को और अधिक लेना आरंभ करता है क्योंकि अब पहले वाली कम मात्रा से उसकी इच्छा पूरी नहीं होती।

- व्यसनकर्ता समय और प्रयुक्त मादक द्रव्य की मात्रा निर्धारित करने में असमर्थ हो जाता है। इस स्थिति से पहले ही वह व्यसनी हो चुका होता है। इससे पहले जब आवश्कता होती थी वह मादक द्रव्य लेने से परहेज कर लेता थाः उदाहरण के लिए परीक्षा के समय वह परहेज कर लेता था।

- सामान्य रहने के लिए उसे मादक द्रव्य लेने की आवश्यकता पड़ती है। यदि वह मादक द्रव्य का सेवन रोकता है तो परित्याग के लक्षणों से उसे भय लगता है। वह मादक द्रव्यों को कई अवसरों पर न लेने के लिए प्रयास करता है किंतु वह ऐसा निरंतर करने में असमर्थ रहता है।

- एक मादक द्रव्य के स्थान पर दूसरा मादक द्रव्य का प्रयोग करता है। एक शराब पीने वाला व्यक्ति बीयर के स्थान पर विहस्की या हेरोइन के स्थान पर पीड़ानाशक दवा का प्रयोग करने लगता है।

- आपूर्ति बनाए रखने के लिए द्रव्यों को छिपा कर रखता है क्योंकि उसके बिना उसके जीवन को खतरा हो सकता है।

- कार्यस्थल पर समस्याएँ आने लगती हैं और स्कूल इसका प्रमाण है। इसका कारण कार्य सही न होना या उपस्थिति कम होना है।

- अपनी स्वच्छता का ध्यान न रखा जाना। कम भोजन करने और कम संवरने की आदत।

- अपराध भावना, शर्म और चिंताओं में वृद्धि।

- व्यक्तित्व में स्पष्ट परिवर्तन। चिड़चिड़ापन और अलग रहने में वृद्धि।

- परिवारिक संबंधों में गड़बड़ी आना। पिता, आदि की जिम्मेदारियों को न निभाना और व्यसनकर्ता पूर्ण रूप से अविश्वासी बन जाता है।

- भावनात्मक समस्याओं के हल के लिए मादक द्रव्यों का प्रयोग करता है। जब वह प्रसन्न होगा तो मादक रसायन लेगा और जब दुखी होगा उस समय भी मादक रसायनों का प्रयोग करेगा।

- इस स्थिति में व्यसनकर्ता का जीवन केवल मादक द्रव्यों के चारों ओर घूमता है।

उच्चतम स्थिति

- इस स्थिति में माद्क द्रव्य पर नियंत्रण का पूरी तरह अभाव हो जाता है। यद्यति अब उसे मादक द्रव्य लेने में कम से कम आनंद आता है तो भी वह लगातार इसका प्रयोग करता रहता है क्योंकि उसे परित्याग के लक्षणों का भय होता है।

- स्थान परिवर्तन, माद्क द्रव्य और प्रयोग करने के तरीकों में परिवर्तन करके समस्या से बचना चाहता है। परंतु उसके ये सब प्रयास व्यर्थ हो जाते हैं।

- व्यसनकर्ता पूर्ण रूप से अपने जीवन के लिए दूसरों पर निर्भर हो जाता है। वह भोजन भी इसलिए करता है कि उसके निकट संबंधियों का उस पर दबाव होता हैं।

- समाज से अलग–थलग रहने की आदत में वृद्धि हो जाती है। वह समाज से बिल्कुल कट जाता है तथा उन लोगों के साथ रहता है जो मादक द्रव्यों का प्रयोग करते हैं।
- यदि समय पर व्यसनकर्ता का इलाज न किया गया तो निश्चित रूप से उसकी असमय मृत्यु हो जाती है।

2.5 रोग के रूप में व्यसन

इस इकाई का यह महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस इकाई के आरंभ में तथा अन्य इकाइयों में आपने पढ़ा होगा कि व्यसन एक रोग है। इस भाग में यह स्पष्ट किया जाएगा कि व्यसन क्यों और कैसे एक रोग है।

वर्ष 1956 में एक गहन अनुसंधान के बाद अमरीका मेडीकल एसोसिएशन ने निष्कर्ष निकाला कि व्यसन एक रोग है। चिकित्सीय भाषा में निम्नलिखित चीज़ों के होने पर रोग माना जाता है:

प्रतिनिधि (An Agent) : वह जो रोग का कारण बनता है।

मेजबान (The Host) : जब कारण प्रतिनिधि दूसरे के संपर्क में आता है तो कुछ घटित होता है।

वातावरण (The Environment) : वह हालत जिसके कारण प्रतिनिधि मेजबान के संपर्क में आता है।

संलक्षण (The Syndrome) : कुछ ऐसे चिह्न दिखाई देते हैं जिनसे साबित होता है कि प्रतिनिधि मेजबान के संपर्क में आया है।

व्यसन के मामले में रसायन प्रतिनिधि है तथा उसका मेजबान रसायन का प्रयोग करने वाला वह व्यक्ति है। वातावरण वह व्यक्तित्व है जिसका पहले से ही इसकी और झुकाव या प्रवाति बनी हुई है। संलक्षण स्पष्ट रूप से व्यसनकर्ता के शारीरिक और मानसिक परिवर्तनों में जा सकते हैं।

रोग की संकल्पना : रोग की संकल्पना व्यक्ति के नियत्रंण से परे तथ्यों के कारण अनिच्छा से रसायनों पर निर्भरता की होती है। कोई भी व्यक्ति मादक द्रव्यों को व्यसनाकर्ता बनने के लिए सेवन नहीं करता। इसके अतिरिक्त वे हृदय से मादक द्रव्यों का प्रयोग नहीं करना चाहते हैं फिर भी करने को बाध्य हैं। इस तरह से वे व्यसनकर्ता बन जाते हैं।

कुछ ऐसे व्यक्ति भी होते हैं जो बिना किसी शारीरिक, मनोवैज्ञानिक और सामाजिक जीवन को हानि पहुँचाए मनःस्थिति परिवर्तन करने वाले रसायनों का प्रयोग करते हैं। कुछ लोग ऐसा करने में असमर्थ रहते हैं। यह रोग रसायन लेने के कारण होता है जैसे कि किसी रोगी को मलेरिया हो जाए और वह ठंड से कांपने लगे। वह कपकपाँना बंद करना चाहता है किंतु वह ऐसा नहीं कर सकता। यह उसके नियंत्रण में नहीं होता। इसी प्रकार जब कोई व्यक्ति एक बार व्यसनकर्ता बन जाता है वह रसायन लेना नहीं छोड़ सकता। यद्यपि

व्यसन रोग की परिभाषा में पूरी तरह से सटीक नहीं है तो भी इसमें रोग की विशेषताएँ अवश्य मौजूद हैं। वे हैं:

- यह एक बुनियादी रोग है। व्यसन मनोवैज्ञानिक लक्षण नहीं है। व्यसन मानसिक, भावुकता और शरीरिक समस्या का कारण है। इससे परहेज़ में सफलता मिल जाए तो इसका समाधान हो सकता है। यह माद्क द्रव्य है जो समस्या का कारण है समस्या मादक द्रव्यों को लेने कारण नहीं है। व्यसन एक वास्तविक रोग है, तथा दूसरे रोग के लक्षण नहीं हैं।

- यह स्थायी रोग है इसका इलाज संभव नहीं हैं, फिर भी मधुमेह की तरह इसका उपचार किया जा सकता है और इस पर नियंत्रण किया जा सकता है। मधुमेह रोग में मुख्य रूप से शक्करँ समस्या का मुख्य कारण होता है, इसी तरह मादक द्रव्य दुरुपयोग में रसायन समस्या का मुख्य कारण होता है।

- यह निरंतर बढ़ने वाला रोग है। यदि इसका समय पर इलाज नहीं कराया जाए तो यह रोग इतना बढ़ जाता है कि स्थिति गंभीर से गंभीर होती चली जाती है। कभी–कभी ऐसा लगता है कि इसमें सुधार हो रहा हैं किंतु कुछ समय के पश्चात् यह रोग भंयकर रूप ले लेता है।

- यह एक अंतिम सीमा तक जाने वाला रोग है। यदि इसका इलाज न कराया जाए तो व्यसनकर्ता मर जाता है। हो सकता है कि व्यसनकर्ता की किसी दुर्घटना या ज़िगर के निष्क्रिय हो जाने से मृत्यु हो जाए। परंतु इतना तो सत्य है कि उसकी मृत्यु का कारण केवल माद्क द्रव्य ही होता है।

व्यसन को इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है कि व्यसनकर्ता यह जानता है कि माद्क द्रव्य उसके लिए हानिकारक है, इसके बावजूद वह न चाहते हुए भी मादक द्रव्यों के सेवन पर नियंत्रण नहीं कर पाता। व्यसन को रोग माना जा सकता है क्योंकि व्यसनकर्ता द्वारा सेवन किए जाने वाले मादक द्रव्य के सेवन पर उसका कोई नियंत्रण नहीं होता।

बोध प्रश्न II

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) व्यसन को रोग के रूप में परिभाषित कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2.6 नकारना

उपर्युक्त कारणों के सम्मिश्रण से व्यसन हो सकता है। परंतु व्यसन के पैदा होने की भूमि नकारना है। यह एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है जो अचेतन अवस्था के स्तर पर पैदा होती है जिसमें वह एक भ्रम को इस विश्वास के साथ पाल लेता है कि वह उसे वास्तविक समझने लगता है। उसकी सोच में होने वाले परिवर्तन का उसे ज्ञान नहीं होता। चिर परिचित उदाहरण यहाँ दिया जा सकता है। मान लीजिए किसी व्यक्ति के प्रियजन की मृत्यु का उसे पता लगे लेकिन किसी न किसी प्रकार वह सोचता है कि यह सत्य नहीं है। एक और अन्य उदाहरण देखिए कि रोगी की चिकित्सीय जाँच की प्रक्रिया चल रही हैं, रोगी को चिकित्सक के द्वारा बताया जा रहा है कि उसे कैंसर का रोग है अथवा वह कैंसर से पीड़ित है। सभी प्रकार की जाँच की गई रिपोर्ट के परिणाम उसके हाथ में हैं इसके बाबजूद वह यह स्वीकार करने को तैयार नहीं है कि वह कैंसर से पीड़ित है।

व्यसनकर्ता अपनी समस्या को क्यों नकारता है?

माद्क द्रव्य व्यक्ति को कुछ अच्छा अनुभव करने तथा जीवन की उन वास्तविकताओं से पलायन करने में सहायता करते हैं जो कभी–कभी अप्रिय होती हैं। दूसरी ओर मादक द्रव्य की आदत शारीरिक और भावनात्मक समस्याओं का कारण बनती हैं। इस स्थिति में उसके समक्ष दो ही विकल्प आते हैं, या तो वह माद्क द्रव्य की लत का त्याग करे या जीवन की वास्तविकता का सामना करे। दोनों ही विकल्प ही पीड़ादायक हैं। इसलिए वह माद्क द्रव्य लेना पसंद करता और जीवन की वास्ताविकता को नकार देता है। यह उसी तरह है मानो उसके समक्ष मित्र मृत पड़ा है और वह इसे स्वीकार नहीं करता। मस्तिष्क की अपनी सुरक्षा प्रणाली होती है जिससे वह दबाव में आने से अपनी रक्षा करता है। व्यसनकर्ता मादक द्रव्य का सेवन बंद करने में असमर्थ होता है क्योंकि वह उसके जीवन की बहुत महत्वपूर्ण वस्तु बन जाती है।

नकारने का मुख्य कारण यह है कि व्यक्ति भी स्थिति में मादक द्रव्यों के प्रयोग में किसी प्रकार की बाधा नहीं आने देना चाहता। व्यसनकर्ता कभी भी समस्याओं का सामना नहीं करना चाहता चाहे वे व्यसन से उत्पन्न हुई हों क्योंकि यदि वह उन्हें समस्या मानेगा तो उन्हें वह देखना–सुनना नहीं चाहेगा जो उसने स्वयं पैदा की हैं या हो गई हैं। तो उसे निश्चित रूप में उनके लिए कुछ करना होगा। एक बार व्यसन आरंभ करने के बाद वह इस प्रकार के विचार सहन नहीं करता। इससे उसको भ्रम पालने में सहायता मिलती है कि सब कुछ ठीक–ठाक है और अपनी गलती, शर्म और आरोपों से अपना बचाव करता है जो व्यसन के साथ जुड़े होते हैं। जैसे–जैसे व्यसन बढ़ता रहता है, इसे रोकना असंभव हो जाता है। जीवन की वास्तविकताएँ उसे अधिक भंयकर दिखाई देने लगती हैं:

- व्यसन के साथ नैतिकता का कंलक लगा होता है, इसलिए वह नकारने के लिए आधार प्रस्तुत करता है।
- व्यसन के परिणामों को परिवार और मित्रगण अपने व्यवहार से पर्दा डालने या छिपाने का प्रयास करते हैं जिससे व्यसनकर्ता को नकारने के लिए समुचित वातावरण उपलब्ध होता है जिससे उसका का उत्साह बढ़ता है।
- व्यक्ति की यह प्रवृत्ति होती है कि आंतरिक कलह को किसी तरह से टाला जाए। यह अप्रिय वास्तविकताओं के नकारने के लिए साहस पैदा करता है।

बोध प्रश्न III

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) नकारना क्या है? यह किस प्रकार से व्यसन को बढ़ावा देता है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2.7 व्यसन के आर्थिक परिणाम

मादक द्रव्यों के व्यापक दुरुपयोग से विश्व के राष्ट्रों और लोगों पर अत्यधिक आर्थिक भार पड़ता है। मादक द्रव्य दुरुपयोग के आर्थिक दुष्परिणाम प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों तरह के हो सकते हैं। व्यक्ति और संपूर्ण समाज भी इन आर्थिक दुष्परिणामों का शिकार होता है।

व्यक्तिगत पर प्रत्यक्ष दुष्परिणाम

मादक द्रव्य महंगे होते हैं। मादक द्रव्यों की लत को बनाए रखने की प्रतिदिन की लागत व्यक्ति द्वारा उपयोग किए जाने वाले द्रव्य के प्रकार पर निर्भर करती है। इसलिए यह संभव नहीं है कि व्यय किए गए धन का सही आकलन किया जाए। कुछ व्यसनकर्ताओं के अपने स्रोत होते हैं। दूसरे लोग अपने परिवार अथवा संबंधों पर निर्भर करते हैं। सभी मामलों में, व्यक्ति अपनी सभी आवश्यकताओं को छोड़ कर सारा धन अपनी लत को बरकरार रखने में व्यय कर देता है। देखा गया है कि बेरोज़गार लोग मादक द्रव्यों का अधिक प्रयोग करते हैं। मादक द्रव्यों के प्रयोग से उत्पादकता में कमी, अनुपस्थिति, रोग एवं दुर्घटनाएँ होती हैं। इन सबसे आर्थिक स्थिति कमजोर होती है। माद्क द्रव्य की लत से एक व्यक्ति समाज का एक उत्पादक सदस्य कम हो जाता है। इसके बदले वह केवल उपयोग करने वाला ही बनकर रह जाता है।

माद्क द्रव्यों के दुरुपयोग के अप्रत्यक्ष दुष्परिणाम

माद्क द्रव्यों के दुरुपयोग के प्रत्यक्ष दुष्परिणामों से अधिक अप्रत्यक्ष परिणाम होते हैं। व्यसनकर्ता के इलाज और उसकी देखभाल पर व्यय का अत्यधिक भार सीधे परिवार पर

पड़ता है। अधिकतर व्यसनकर्ता ऐसे रोगों से पीड़ित हो जाते हैं जिन्हें लगातार इलाज की आवश्यकता पड़ती है। स्वयं व्यसन का इलाज भी जीवन भर तक चल सकता है।

व्यसन के कारण अनेक दुर्घटनाएँ होती हैं। इसे भी आप स्वास्थ्य देखभाल व्यय के रूप में भी देख सकते हैं। परिवार की लापरवाही और कुप्रबंधन के कारण व्यसनकर्ता के परिवार वालों को भी अपने स्वास्थ्य की ओर ध्यान देने की आवश्यकता होती है। आम तौर पर यह भी देखा गया है कि व्यसनकर्ता के माता–पिता एवं जीवन साथी भी बीमार हो जाते हैं। उनका इलाज भी परिवार पर अत्यधिक आर्थिक भार डालता है।

मादक द्रव्य दुरुपयोग और अपराध दोनों का निकट संबंध है। जब हम समस्या के इस पक्ष को समझ लेते हैं तो मादक द्रव्य दुरुपयोग के कारण आर्थिक स्थिति डावांडोल हो जाती है। यदि हम उसे आर्थिक समस्या मान लें तो इसकी लागत की गणना असंभव है।

बोध प्रश्न IV

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) व्यसन के परिणामस्वरूप आर्थिक दुष्परिणाम क्या हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2.8 व्यसन और धार्मिक विश्वास

प्राचीन काल से ही अनेक प्रकार के धार्मिक विश्वास मानवता के अभिन्न अंग रहे हैं। यह देखा गया है कि धार्मिक विश्वास व्यसन एवं इलाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस संबंध में आपकों 'इलाज भार' में और अधिक पढ़ने को मिलेगा। फिर भी यहाँ पर मादक द्रव्य दुरुपयोग के संबंध में धार्मिक विश्वासों की कुछ विशेषताओं से अवगत करना महत्वपूर्ण होगा।

हम पहले ही देख चुके हैं कि व्यसनकर्ता अपनी वास्तविकता पर नियंत्रण करना चाहता है जो कि वह उसे करने में असमर्थ होता है। रसायनों से उसे ऐसा प्रतीत होने लगता है कि वह अप्रिय वास्तविकता को नियंत्रण कर सकता है। धार्मिक विश्वास उसे आभास कराता है कि कोई एक शक्ति है जो प्रत्येक वस्तु को निर्देशित करती है इसलिए उस शक्ति के समक्ष समर्पण कर देने से व्यक्ति को शांति और खुशियाँ प्राप्त होती हैं। व्यसन और धार्मिक विश्वास एक दूसरे के अनुरूप है।

व्यसनकर्ता की एक विशेषता यह है कि वह अपना अलग दृष्टिकोण रखता है। कुछ इलाज कार्यक्रमों में इसे 'ईश्वर का खेल' माना जाता है। परंतु व्यसनकर्ता दूसरे ढंग से सोचता है। उसकी अपनी विशिष्ट इच्छा होती है। जब व्यसनकर्ता बड़ा हो जाता है तो वह समझने लगता है कि यद्यपि वह प्रौढ़ है किंतु उसे अन्य लोगों के विचारों और सोच के साथ जुड़ना चाहिए। जो व्यक्ति ईश्वर में अत्यधिक आस्था रखते हैं वे इस मज़बूरी को आसानी से स्वीकार कर लेते हैं। कुछ लोग इसे ईश्वर का विधि–विधान या अपने कर्मो का फल मान कर स्वीकार कर लेते हैं। व्यसनकर्ता इस तरह के किसी भी विश्वास का विरोधी होता हैं जब वास्तविकता का दबाव बहुत ही सशक्त होता है तो उसके इसमें माद्क द्रव्यों की सहायता से परिवर्तन करने के अतिरिक्त उसके समक्ष अन्य स्रोत नहीं होता है। इससे उसे अस्थाई रूप से नियंत्रण की भावना का अनुभव होता है।

2.9 सारांश

इस इकाई में आपने माद्क द्रव्यों के दुरुपयोग के विभिन्न शारीरिक, मानसिक और आर्थिक प्रभावों के बारे में पढ़ा है। माद्क द्रव्य शरीर विशेषकर केंद्रीय तन्त्रिका प्रणाली पर अपना प्रभाव छोड़ते है उसके कार्यों में परिवर्तन कर देते है। मादक द्रव्य शरीर के अन्य भागों पर भी दुष्प्रभाव डालते हैं। मादक द्रव्य व्यसनकर्ता के व्यक्तित्व को उसके आचरण और व्यवहार में परिवर्तित कर देते हैं।

मादक द्रव्य व्यसनकर्ता के सामाजिक संबंधों को नुकसान पहुँचाते हैं। व्यसन विभिन्न स्तरों से गुजरता है जिन्हें आसानी से अलग किया जा सकता है। व्यसन एक रोग है जो रसायन उपयोग की विवशता के कारण पैदा होता है। रसायनों का प्रयोग करना चाहिए अथवा नहीं करना चाहिए, यह निर्णय करना व्यसनकर्ता के नियंत्रण से बाहर होता है। इसलिए इसे रोग की संज्ञा दी गई है। व्यसनकर्ता विवश आचरण से पीड़ित होता है। यद्यपि वह धार्मिक संस्कारों को आजमा सकता है, क्योंकि वास्तव में वह अपने जीवन पर नियंत्रण करना चाहता है धार्मिक व्यक्ति इसे ईश्वर की देन के रूप में देखता है।

2.10 शब्दावली

कैफ़ीन : एक उत्तेजक रसायन है जो चाय की पत्तियों और कॉफी की फलियों में उपलब्ध होता है।

के.त.प्र. (सी एन एस) : केंद्रीय तंत्रिका प्रणाली मस्तिष्क और तंत्रिकाओं से संबद्ध होती है और शरीर के अंगों में संप्रेषण करती है।

भ्रूण : पैदा होने से पूर्व का शिशु, यह गर्भ में आठ या इससे अधिक सप्ताहों की अवधि का होता है।

नाक से सूंघने वाला : पेट्रोल और समरूप खनिज आदि को सांस से खींचना।

प्रतिरक्षी : रोगाणु वायरस इत्यादि के आक्रमण से मुक्त करने में सहायता करता है।

अंतर्बाध : अपने मनोभाव या संवेदना को प्रस्तुत करने में असमर्थ।

दीर्घकालीन जोखिम : लम्बे समय के बाद दिखाई देने वाला परिणाम।

श्वेत रक्तता (ल्यूकीमिया) : एक प्रकार का रक्त कैंसर।

अधिक खुराक : माद्क द्रव्यों की अधिक मात्रा जो मृत्यु का कारण हो सकती है।

तंत्रिका संचार : तंत्रिका वाहिनी से निकलने वाला रसायन तत्व जो वाहिनी में आवेश को दूसरी तंत्रिका में संप्रेषित करता है।

नाभिनाल (प्लेसेंटा) : एक समतल गोल शारीरिक अंग जो गर्भाशय में गर्भ झिल्ली को ढकता है और भ्रूण को पोषण पहुंचाता है।

ग्रहण करने वाला : एक अंग जो बाहरी उत्तेजना की प्रतिक्रिया करने में उत्तर देने में समक्ष हो।

सूत्र युग्मन : दो तंत्रिका कोशिकाओं के मध्य का स्थान।

2.11 कुछ उपयोगी पुस्तकें

आर्नाल्ड वास्टन एंड डोना बॉउंडी (1989); *विल पॉवर इज नाट एनफ,* हार्पर पेरीनियल, न्यूयार्क।

डेनिस ई पोपलीन स्कॉट (1978); *सोशल प्राब्लम्स,* फोरस्मेन एंड कं. इलीनॉइज।

यू एन डी सी पी (1999); *ड्रग डिमांड रिडक्शन रिपोर्ट* ,रीजनल ऑफिस, नई दिल्ली।

टी टी के फाउंडेशन (1989); *एल्कोलिज्म एंड डिपेडेंसी,* चेन्नई।

2.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न I

1) माद्क द्रव्य दुरुपयोग एक मानसिक समस्या भी है। मनोवैज्ञानिक प्रभावों का मुख्य रूप से व्यावहारिक परिवर्तनों के माध्यम से जाना जाता है। व्यसन में व्यक्ति अपने महत्व को कम मानता है। इसका आरंभ अपनी प्रतिष्ठा, शर्म, गलती और चिड़चिड़ेपन से पीड़ित होने से होता है। यह विरोध करने, नकारने और अस्थिरचित वृत्ति के द्वारा किया जाता है। व्यसन व्यक्ति को चिंताओं व ग्लानि से भी पीड़ित करता है। हम देख सकते हैं कि व्यसनकर्ता के सम्पूर्ण व्यक्तित्व में परिवर्तन हो जाता है। वह बिना रसायनों के जीवन की भावनाओं को नियंत्रित करने में असमर्थ होता है।

बोध प्रश्न II

1) चिकित्सीय शब्दावली में रोग की चार शर्तें होती हैं। प्रतिनिधि, मेजबान, वातावरण, और संलक्षण। व्यसनकर्ता में रसायन व्यसन रोग का कारण है। व्यसनकर्ता अपनी व्यवस्था द्वारा मादक द्रव्यों को नियंत्रित करने में असमर्थ होता है जिस प्रकार रोगाणु बीमारी का कारण होता है उसी प्रकार मादक रसायन व्यसनकर्ता को रोगी बनाता है। वातावरण व्यसनकर्ता का व्यक्तिगत है। संलक्षण वे शारीरिक और मानसिक प्रभाव हैं जो उसे रोगी बनाते हैं।

बोध प्रश्न III

1) नकारना एक प्रकार का रक्षा तंत्र है। एक व्यसनकर्ता यह स्वीकार नहीं करेगा कि वही एकमात्र ऐसा है। तथा वह तर्क देगा कि व्यसन के कारण उसकी कोई समस्या नहीं है। व्यसन की वास्तविकता को स्वीकार करते हुए उसके व्यवहार में परिवर्तन लाने की आवश्यकता है। उसके व्यवहार में परिवर्तन लाने का अर्थ है कि उसे मादक द्रव्य छोड़ देना चाहिए। वह किसी भी रूप में इसके लिए तैयार नहीं होता। वह नकार देगा कि वह एक व्यसनकर्ता है।

   नकारने में व्यसन दो प्रकार से बढ़ता है। पहले वह अपनी श्रेष्ठ प्रतिष्ठा को बनाए रखेंगे। व्यसन को स्वीकार करना बहुत ही दर्दनाक है क्योंकि व्यसन समाज को स्वीकार नहीं है। दूसरे नकारने से उसे वह अपने व्यसन के लिए दूसरों पर दोषारोपण करने में सहायता मिलती है। इस प्रकार से वह दूसरों को छलता है और जानबूझकर अपने व्यसन का समर्थन करता है।

बोध प्रश्न IV

1) व्यसन एक महंगी लत है। इसमें प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से अत्यधिक व्यय होता है। व्यसनकर्ता अपनी व्यसन लत को बनाए रखने के लिए अत्यधिक धन का व्यय करता है। यह धन अपराधिक समूहों के पास जाता है। व्यसन से स्वास्थ्य को भारी हानि होती है। इसके कारण परिवार के अन्य लोगों का स्वास्थ्य बिगड़ता है। इसलिए परिवार के सदस्यों के स्वास्थ्य पर होने वाला खर्च परिवार पर एक भारी आर्थिक बोझ होता है। व्यसनकर्ता समाज का एक अनुउत्पादक सदस्य होता है। व्यसनकर्ता की अपराधिक आदतें समाज पर अप्रत्यक्ष रूप से आर्थिक बोझ डालती हैं। कार्य से अन–उपस्थितिता दुर्घटनाएँ इत्यादि से परिवार और समाज पर अतिरिक्त आर्थिक भार पड़ता है। इसी तरह से कानूनी व्यवस्था लागू करने और नियंत्रण करने में भी अत्यधिक आर्थिक खर्च पड़ता है।

इकाई 3 मादक द्रव्य दुरुपयोग का परिवार और राष्ट्रीय विकास पर प्रभाव

इकाई की रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 मादक द्रव्य दुरुपयोग – परिवार और राष्ट्र

3.3 व्यसनी परिवार की व्यावहारिक प्रतिक्रिया

3.4 सह–निर्भरता

3.5 मादक द्रव्य दुरुपयोग और राष्ट्रीय विकास

3.6 मादक द्रव्य दुरूपयोग और अपराध

3.7 मादक द्रव्य मुक्त राष्ट्र के लिए प्रयास

3.8 सारांश

3.9 शब्दवाली

3.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

3.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

3.0 उद्देश्य

इस इकाई का उद्देश्य मादक द्रव्य दुरुपयोग से परिवार और राष्ट्र को होने वाली हानि के बारे में वर्णन करना है। इसमें आपको बताया जाएगा कि मादक द्रव्य दुरुपयोग राष्ट्र विकास में कितनी गंभीर बाधाएँ डालते हैं। इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप जान सकेंगे:

- मादक द्रव्य दुरुपयोग, परिवार और राष्ट्र के बीच संबंध;
- परिवार के सदस्यों पर मादक द्रव्य दुरुपयोग के नकारात्मक प्रभाव;
- किस प्रकार मादक द्रव्य दुरुपयोग राष्ट्र विकास में हानिकारक हैं;
- हमारे विद्यालयों, कार्यस्थलों और राष्ट्र को मादक द्रव्य मुक्त करने का महत्व; और
- आपके अपने जीवन अनुभवों तथा मादक द्रव्य दुरुपयोग के विभिन्न पक्षों का संबंध।

3.1 प्रस्तावना

आपने नशें में धुत चालक द्वारा की गई यातायात दुर्घटनाओं को अवश्य देखा होगा। कुछ महामारियों की तरह ही मादक द्रव्य दुरुपयोग से व्यापक मौतें होती हैं। व्यसनकर्ता स्वयं,

परिवार और समाज की सुरक्षा के लिए खतरा होता है। व्यसन अपने कलंक के धब्बे आगे आने वाली पीढ़ियों के लिए भी छोड़ता है।

व्यसनी के बच्चों का सामान्य विकास नहीं हो पाता है क्योंकि उनके परिवार में उन्हें भावनात्मक वातावरण नहीं मिल पाता है जो बच्चों के सामान्य विकास के लिए आवश्यक होता है। शराबी पिता के होने वाले अनेक बच्चे भी बड़े होने पर शराबी बन जाते हैं।

व्यसन राष्ट्र विकास के लिए गंभीर चुनौती है। व्यसनी प्रायः समाज में अनुत्पादक तत्व होता है। व्यसनी सामाजिक स्वास्थ्य देखभाल पर अतिरिक्त भार है। व्यसन के कारण बहुत सारी दुर्घटनाएँ भी होती हैं।

इस इकाई में समाज के विभिन्न स्तरों पर मादक द्रव्य दुरुपयोग के परिणामों को प्रस्तुत किया गया है। इसमें परिवार में बच्चों पर और समाज और राष्ट्र के लिए आर्थिक विकास पर पड़ने वाले प्रभावों के रूप में मादक द्रव्य दुरुपयोग के परिणामों का विस्तृत वर्णन किया गया है।

3.2 मादक द्रव्य दुरुपयोग – परिवार और राष्ट्र

विश्व में प्रत्येक वस्तु आंतरिक रूप से परस्पर जुड़ी हुई हैं। एक राष्ट्र में परिवार समाज की मूल इकाई है। राष्ट्र की हालत परिवार के स्वास्थ्य से मापी जाती है। व्यसन प्रायः परिवारों को प्रभावित करता है। व्यसन के कारण बच्चों का चरित्र बिगड़ जाता है। जब परिवार का एक व्यक्ति चाहे अभिभावक, बच्चा हो या रिश्तेदार जब मादक द्रव्य का दुरुपयोग करने लगता है, विकृत्त होने लगता जिससे शांति भंग हो जाती है। वहीं पर परिवार के प्रत्येक सदस्य को इसकी हानि उठानी पड़ती है। व्यसनी प्रायः अपनी आदतों से इतना पीड़ित हो जाता है कि सब कुछ उस पर केंद्रित हो जाता है यहाँ तक कि परिवार के अन्य सदस्यों की आवश्यताओं और उनकी स्थिति की भी उपेक्षा की जाती है, इस कारण परिवार की एकता संधि की तरह टूट जाती है।

राष्ट्र को आर्थिक और मानवता के रूप में मादक द्रव्य दुरुपयोग के लिए भारी कीमत चुकानी पड़ती है। अधिकतर, मादक द्रव्यों का प्रयोग करने वाले लोग 18 से 25 वर्ष की आयु वर्ग के होते हैं। इनमें से कुछ रोज़गारशुदा होते हैं तो कुछ बेरोज़गार। रोज़गारशुदा व्यक्ति अपने कार्य स्थल पर गंभीर समस्याएँ खड़ी कर देता है। कार्य से अनुपस्थिति, काम धीमे करना, कार्य स्थल पर दुर्घटनाएँ और साथी कर्मियों के साथ खराब संबंध आदि मादक द्रव्य दुरुपयोग के परिणाम होते हैं।

अधिकतर किशोर अवस्था के व्यसनी बेरोज़गार होते हैं। वे राष्ट्र के उत्पादक सदस्य नहीं बनते। वे राष्ट्र के संसाधनों पर बोझ बन जाते हैं। वे अपराध समूहों का रूप धारण कर लेते हैं। उनके स्वास्थ्य की देखभाल करना भी राष्ट्र पर अतिरिक्त भार होता है। वे अनजाने में ही महामारियों, रोगों तथा लाइलाज रोगों के वाहक या माध्यम बन जाते हैं।

मादक द्रव्य दुरुपयोग की एक और भी कीमत चुकानी पड़ती है – पर्यावरण की कीमत। वन कटाई, भूमि कटाव, जल स्रोतों का प्रदूषण, व्यापक वनस्पति नाशक छिड़काव, पर्यावरणीय व्यवस्था में असंतुलन, जलीय योजना में परिवर्तन, जनसंख्या का दवाव, लोगों का अप्रवर्जन आदि मादक द्रव्य उत्पादन के कुछ अप्रत्यक्ष परिणाम हैं। गैर–कानूनी मादक द्रव्य की फसल पैदा करने वाले माहौल का विस्तार हो जाता हैं दक्षिण अमरीका, अफ्रीका तथा एशिया में लाखों छोटे किसानों पर इनकी खेती करने के लिए अत्याचार किए जाते हैं। जिससे विश्व की अर्थव्यवस्था प्रभावित होती है। इसमें इनकी अस्थिर हालत की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया जाता। जीवन को बचाने के लिए इन लोगों को अब कोकीन, अफीम, पोस्त, या भांग की फसल में कमी करनी चहिए। मादक द्रव्य उत्पादन के लिए राष्ट्र या विश्व द्वारा चुकाई जाने वाली कीमत बेशक अप्रत्यक्ष हो लेकिन यह बहुत विशाल है। अनेक मादक द्रव्य जैसे कि पोस्त, कोका, अफीम तथा तम्बाकू का उत्पादन पौधों अर्थात् फसल से होता है। चूँकि ये फसलें प्रायः गैर–कानूनी होती हैं इसलिए इनका कार्य करने वाले लोग फसल उगाने के लिए जगंलों में चले जाते हैं और बेरहमी से जंगलों की कटाई करते हैं।

मादक द्रव्य दुरुपयोग और परिवार

परिवार पर मादक द्रव्यों के जो भयंकर प्रभाव पड़ते हैं मुख्यतः वे वही हैं जो राष्ट्र के लिए गंभीर खतरा बने हुए हैं। व्यसनी अपने आपराधिक व्यवहार से परिवार का वातावरण बिगाड़ देता है। परिणामस्वरूप परिवार के सदस्य शारीरिक और मानसिक रूप से व्यथित होते हैं। एक प्रियजन, जो प्रायः कमाने वाला होता है, के इस तरह से व्यसनी होने के कारण परिवार के सदस्यों को बहुत दुख होता है। यह स्थिति बहुत दर्दनाक होती है। इसका एक और गंभीर पक्ष यह भी है कि जब कोई बड़ी आयु का व्यक्ति व्यसन में लिप्त हो जाता है तो उससे छोटी आयु के लोगों पर अत्यंत भयंकर प्रभाव पड़ता है। वे समझते हैं कि जब इतनी बड़ी आयु का व्यक्ति ऐसा करता है तो हमें ऐसा करने में क्या नुकसान है। वे भी मादक द्रव्यों का दुरुपयोग करने लगते हैं। प्रायः इस पक्ष की उपेक्षा की जाती है इस प्रकार परिवारिक कार्यों की हानि होती है। अभिभावक इस तथ्य का सामना नहीं कर पाते हैं कि उनके बच्चे मादक द्रव्यों का प्रयोग करने लगे हैं अथवा वे उस विपरीत व्यवहार को स्वीकार नहीं करते जो उन्होंने बच्चों का पालन करते समय नहीं किया है। अधिकांशतः शर्म और निराशा के कारण वे यह स्वीकार नहीं करते कि उनका बच्चा व्यसनी बन गया है। समस्या का सामना करने में असमर्थ लोग बच्चे को मादक द्रव्य न लेने के लिए उपयुक्त उपाय ढूँढने में उसको प्रोत्साहित नहीं कर पाते।

मादक द्रव्यों के दुरुपयोग करने वाले छोटे बच्चों के माता–पिता प्रायः अपने परिवार के अंदर ही गहन भावनात्मक तनाव पीड़ित रहते देखे गए हैं। उन लोगों को यह, बिछुड़ने चाहे वह मृत्यु, तलाक, त्यागने अथवा उपेक्षा के कारण अपने माता–पिता के खोने का दुख होता है। वे लगाव और बिछुड़ने की हानि और लाभों के विपरीत मुद्दों में तनाव युक्त और चिंतित रहते है।

शराब के नशे को प्रायः पारिवारिक रोग की संज्ञा दी जाती है। इसका अर्थ है कि शराब के व्यसनी के परिवार के सभी सदस्य उसके रोग के भागीदार होते हैं। ऐसा कोई मार्ग नहीं है जिसके माध्यम से व्यसनी की आदतों के प्रभाव से परिवार के सदस्य बच सकें। उन्हें प्रतिदिन व्यसनी के व्यवहार का सामना करना पड़ता है। इस तरह से परिवार के लोग उसके व्यवहार के प्रति क्रोध, भय, शर्म या लज्जा तथा उलझन के रूप में प्रतिक्रिया करते हैं। इसी तरह की प्रतिक्रिया व्यसनी की ओर से परिवार के विरुद्ध होती है।

अधिकतर व्यसनी विवाहित होते हैं। उनमें से बहुसंख्यक में परिवार वाले लोग होते हैं। परंतु वे उस बिंदु तक अपनी सामाजिक, परिवारिक रिश्तों की भूमिका निभाने में असमर्थ हो जाते हैं कि वे पति–पत्नी, माता–पिता और जीविका उपार्जन के क्षेत्र मे संतोषजनक भूमिका नहीं निभा पाते। शराब के नशे के कारण वे उचित समय, स्नेह या प्यार या बाहर आना–जाना भी समूचित रूप से पूरा नहीं करते। अनेक अवसरों पर उनका व्यवहार बदमिजाज, चिड़चिडा, निराशा भरा और अनुचित हो जाता है। शराबी का परिवार तलाक अथवा अलग रहने के कारण टूट सकता है।

जब शराब की लत बढ़ती जाती है, शराबी के परिवार वाले कुछ क्रमिक समस्याओं के साथ सामंजस्य करने का प्रयास करते हैं। पहले उसे परिवार के टूटने की संभावनाएँ जैसे कि किसी महिला का पति शराब पीना आरंभ कर देता है उस स्थिति में महिला इस समस्या को नकारना आरंभ कर देती है और समस्या के साथ सामंजस्य करने कर प्रयत्न करती है। समस्या को सुलझाने के लिए आरंभ में अपने पति से विवाद करती है, शराब की उपलब्धता को नियंत्रण करने का प्रयास करती है तथा कुछ नियम बनाती है। कई बार ऐसा भी देखा गया है कि पत्नी अपनी कुछ एक बिंदु पर दोनों के द्वारा शराब छोड़ने की शर्त के साथ पति के साथ शराब का सेवन करने लगती है। परंतु यह तरीका सफल नहीं हो पाता है और समस्या विकट रूप धारण कर लेती है। पति–पत्नी के रिश्तों में कड़वाहट पैदा हो जाती है और संबंध विच्छेद के कगार पर पहुँच जाते हैं अथवा संबंध विच्छेद हो जाते हैं।

शराब की लत बढ़ने के कारण परिवार संभालने के लिए पति की आय नहीं रहती और मज़बूरी में पत्नी को यह भूमिका निभानी पड़ती है। कई बार पत्नी कुछ अनुशासनसत्मक कदम उठाने लगती है। कई बार उसे बच्चों के पिता के स्थान पर अपने उत्तरदायित्व को निभाना पड़ता है। सबसे दुखदाई स्थिति यह होती है कि मरने वाला व्यसनी शराब की बोतल के आस पास घूमता रहता है, इसी प्रकार परिवार के अन्य लोग भी उसी शराब की बोतल के चारों और घूमने लगते हैं, इससे केवल व्यवहार या तरीकों में अन्तर आ जाता है। उदाहरण के लिए पत्नी अपने पति से कई बार इस बात को स्वीकार नहीं करती कि उसका पति उसे पत्नी न समझ कर नौकरानी समझता है या पति की समस्या के लिए वह जिम्मेदार है।

दो शराबियों के परिवार एक जैसे नहीं होते और न ही उनकी प्रतिक्रिया एक जैसी होती है। शराब के प्रभाव गरीब और अमीर परिवारों पर अलग–अलग होंगे। जो भी हो शराबी

के कारण विवाह और परिवारिक जीवन पर अत्यधिक बुरा प्रभाव पड़ता है। परिवार में व्यसन का किसी भी प्रकार का मामला क्यों न हो वह परिवार में विषाद व विपदा के कारण के साथ ही अनर्थकारी होता है।

मादक द्रव्य दुरुपयोग और घरेलू हिंसा

दैनिक अनुभवों और अनुसंधानों से विदित होता है कि 'मादक द्रव्य दुरुपयोग' करने वाले परिवारों में घरेलू हिंसा आम बात है। विशेषकर बच्चे और महिलाएँ इसकी शिकार होती हैं। बच्चों को गाली देना, पत्नी को मारना–पीटना, दहेज हत्या, शारीरिक हिंसा की सामान्य आम बात है" (यू एन डी सी पी : 1999)। मादक द्रव्य दुरुपयोग और हिंसा दोनों एक साथ चलते हैं।

आक्रमण या हिंसा मूलरूप से पशुवत स्वभाव होता है। मानव भी इस जंगल राज में भागीदार है। इस प्रकृति प्रदत्त संवेदना का उद्देश्य अपना संरक्षण करना होता है। केवल मानव के लिए यह उसका विवेक ही होता है कि वह अपनी हिंसक प्रवृत्ति को नियंत्रित रखता है। पशुओं में यह प्रवृत्ति पाई जाती है कि जब उसको जरा भी यह महसूस हो कि उस पर हमला हो सकता है जैसे कि शेर ऐसा समझ कर आक्रमण कर सकता है।

जैसे कि हम पहले ही चर्चा कर चुके हैं कि सभी मानसिक क्रियाशीलताओं को प्रभावित करने वाले मादक द्रव्य मस्तिष्क की उस झिल्ली पर प्रभाव डालते हैं जो हमारे विवेक पर नियन्त्रण करती है। इस लिए मनुष्य सामाजिक–धार्मिक और राजनीतिक शर्तो के दबाओं के कारण अपनी हिंसात्मक भावनाओं को अपने नियन्त्रण में रखता है। परन्तु जब व्यक्ति मादक द्रव्यों जैसे शराब का दुरुपयोग करता है, ऐसी स्थिति में उसके मस्तिष्क में विकार उत्पन्न हो जाते हैं और सभी दमित भावनाएँ, संवेदनाएँ सतह पर आ जाती है। वह अपनी सभी बाध्यताओं को त्याग देता है। वह हिंसात्मक रूप धारण कर लेता है। भावनाओं के व्यक्त करते समय हिंसात्मक और उग्र बन जाता है। इसे हम सरलता से समझ सकते हैं कि एक व्यसनी अनेक संवेदनाओं को अपने मस्तिष्क में दबाए रखता है जैसे कि अपराध भावना, क्रोध और निराशा, विसाद जिसे वह नशे की स्थिति में हिसांत्मक तरीके से व्यक्त करता है।

मादक द्रव्यों का व्यसनी सामाजिक रूप से अस्वीकार्य आचरण के अनेक पक्ष प्रकट करता है। हिंसा, आक्रमण, आडम्बरता, गैर जिम्मेदारी, स्वार्थी, जुआ खेलना जैसे दुर्गुण, रसायनों पर निर्भर रहने वाले की जीवन शैली के हिस्से होते हैं। दक्षिण एशियाई देशों में मादक द्रव्यों से संबंधित अपराधों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि हुई है। जो कुल अपराधों का नेपाल में 70 प्रतिशत और भारत में 20 प्रतिशत आँका गया है (यू एन डी सी जी रिपोर्ट: 1999)।

1999 में यू एन डी सी पी द्वारा दी गई रिपोर्ट बताती है कि श्रीलंका में हिंसा के अध्ययन में देखा गया है कि 60 प्रतिशत महिलाएँ घरेलू हिंसा का शिकार हैं, हिंसा, 29 प्रतिशत महिलाओं के साथ हुई मारपीट के आँकड़ों में बताया गया कि उनके पतियों ने अपने बच्चों पर भी हिंसा की। इस रिपोर्ट में 82 प्रतिशत महिलाओं की भाग्यवादी प्रवृत्ति यह होती है कि उन्हें अपने पुत्रों, पतियों और भाइयों के अत्याचारों को सहन करना चाहिए। इस प्रकार की सोच के कारण ही उन्होंने शराब सेवन की आदत को बनाए रखने में अपना योगदान दिया है। (विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट, 1996)

नेशनल कांउसिल ऑफ अल्कोहलिज्म (यू एस ए) का आंकलन है कि 63 प्रतिशत शराब पीने वाले परिवारों का इलाज अस्पतालों में चल रहा है जिनका कारण घरेलू हिंसा है। शराबी परिवारों के इतने ही बच्चे शारीरिक अत्याचार का शिकार हुए हैं या उन्होंने निरन्तर अपने परिवारों में लगातार इस तरह की हिंसा होते देखी है।

व्यसनी परिवार और बच्चे

व्यसनी अन्य सभी श्रेणियों के अलावा बच्चों को सबसे अधिक प्रभावित करते हैं। वयस्कों के पास ऐसी स्थिति में परिवार में रहने या उसे छोड़ने का विकल्प होता है। बच्चों के पास परिवार छोड़ने का विकल्प नहीं होता और न ही यह अभीष्ट है। पत्नी या जीवन साथी किसी परिवारिक सदस्य के व्यसन से असहाय हो सकते हैं लेकिन वास्तव में बच्चे असहाय होते हैं। स्वाभाविक रूप से स्वतः और चिंता मुक्त होना बचपन की विशेषता है। व्यसनी के परिवार में बच्चा चिंता मुक्त नहीं रह सकता। वह हमेशा उपेक्षित, चिंताग्रस्त एवं डरा हुआ रहता है। ऐसे परिवार में बच्चों को मिलने वाली सामान्य देखभाल तथा पोषण प्राप्त नहीं होता। परिवार में किसी सदस्य द्वारा व्यसन करने से संपूर्ण परिवार का ध्यान उस पर केंद्रित हो जाता है। ऐसे वातावरण का बच्चे पर हमेशा विपरीत प्रभाव होता है। वे अपनी पहचान खो देते हैं। अवसाद, चिंता और तनाव से पीड़ित रहते हैं। उन्हें समाज में सामंजस्य करने में अपनी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। चूँकि उन पर सकारात्मक ध्यान नहीं दिया जाता इसलिए वे आवारा बनते जाते हैं और विपरीत प्रभाव ग्रहण कर लेते हैं। हो सकता है ऐसे कुछ बच्चे अति क्रियावादी, परेशान और गंभीर मामलों पर ध्यान केंद्रित करने वाले बन जाएँ।

अनुसंधानों से पता चलता है कि घरेलू हिंसा बच्चों की संवेदनाओं और विकास के लिए पूरी तरह से हानिकारक है। यहाँ तक कि यदि उन पर शारीरिक अत्याचार न भी किया जाए तो भी वे इस तरह की हिंसा को देखने के आदी होने से वे लोग बड़े होने पर भी जीवन में उसी तरह की हिंसा होते देखते हुए बड़े होकर दुरुपयोगकर्ता बन जाते हैं। अनेक बच्चे जो शराबी परिवार से संबंध रखते हैं, बाद में भी स्वाभाविक रूप से शराबी बन जाते हैं।

भारत तथा अन्य देशों में किए गए अध्ययनों से ज्ञात होता है कि मादक द्रव्यों का सेवन करने वाले परिवारों में घरेलू हिंसा होना आम बात है। इस हिंसा में प्रमुख रूप से महिलाएँ और बच्चे ही पीड़ित होते हैं। इस हिंसा में बच्चों पर सबसे अधिक दुराचार होता है। एक आकलन के अनुसार 4 प्रतिशत महिलाओं के साथ लैंगिक दुराचार किया जाता है, ये महिलाएँ नाबालिग होती हैं।

अमेरिका में किए गए अध्ययन से पता चलता है कि शराब से व्यसनी समस्याओं वाले परिवारों के 66 प्रतिशत बच्चों ने या तो स्वयं ही दुराचार किया था अथवा दूसरों के अत्याचारों का सामना किया। जिनमें से 25 प्रतिशत ऐसे बच्चे थे जिनके साथ शारीरिक बुरा व्यवहार भी किया गया। 1976 में एक और अध्ययन किया गया जिसमें शराबी परिवारों के बच्चों की सभी तरह की समस्याओं का विश्लेषण किया गया है। इस अध्ययन के कुछ निष्कर्ष नीचे दिए जा रहे हैं:

- अन्य बच्चों की तुलना में तीन गुना अधिक शराबी बच्चों को पालन–पोषण गृहों में रखा गया था।

- 16 वर्ष से कम आयु में की गई शादीशुदा बच्चों की संख्या दूसरें बच्चों की तुलना में दो गुणा थी।
- बाल अपराध के मामलों की संख्या बहुत अधिक थी जो 50 प्रतिशत पहुँच गई थी।
- 21 प्रतिशत तक बच्चे मानसिक रूप से रोगी पाए गए।
- अभावग्रस्त समुदाओं के बच्चों की तुलना में शराबी बच्चों ने आत्महत्याएँ अधिक करने का प्रयास किया।
- व्यसनियों के बच्चों में व्यक्तिगत विकृति के अधिक मामले पाए गए थे।

उपर्युक्त को देखने के पश्चात् तथ्य निकलता है कि शराबी परिवारों के बढ़ते हुए बच्चों में व्यक्तित्व और पहचान की समस्या अत्यधिक पाई गई है। यहाँ पर हम इनमें से कुछ की चर्चा करेंगे:

आदर्श भूमिका की कमी : बच्चे चाहे सही या गलत परिवार से हों विशेषतः अपने माता पिता से ही सीखते हैं। इसी से व्यक्ति की पहचान होती है। शराबी परिवार में इस तरह के व्यवहार सीखने को नहीं मिलते हैं। वे अपने माता-पिता से केवल नकारात्मक नजरिये, गलतियाँ, क्रोध और अन्य विपरीत आचरण के ही साक्षी होते हैं। इन बच्चों को प्रायः उस अपराध का दण्ड मिलता है जो वे कभी नहीं करते।

व्यसनी परिवारों द्वारा किया जाने वाले व्यवहार से बच्चे भ्रमित हो जाते हैं। जब पिता शराब का सेवन नहीं करते उस स्थिति में बच्चों से प्यार किया जाता है किंतु शराब पीने के बाद बच्चों को प्रताड़ित किया जाता है। इस आयु में बच्चे यह समझने में असमर्थ होते हैं कि स्नेह क्या होता है और हिंसा क्या होती है। पिता केवल विरोधी भावों का एक पुलिंदा होता है तथा बच्चे अपने माता-पिता का अनुकरण करना सीख लेते हैं।

स्वाभिमान की कमी : आत्मसम्मान और स्वाभिमान व्यक्तित्व का प्रमुख अंग है। इसी से किसी व्यक्ति की पहचान की जाती है। बच्चे उनके व्यवहार से आत्म-सम्मान सीखते हैं जो उनके लिए महत्वपूर्ण है। यदि बच्चों को स्वीकार किया जाता है, उसके माता-पिता उन्हें स्नेह देते हैं तो बच्चा धीरे-धीरे महसूस करेगा कि वह अच्छा है, उसकी ज़रूरत है और वह प्यार के लायक है। बचपन से ही यदि बच्चे के साथ दुर्व्यवहार किया जाए और उसको सम्मान न दिया जाए तो वह समझेगा कि वह बेकार है, उसको कोई नहीं चाहता और न ही कोई उससे प्रेम करता है। इस प्रकार नकारात्मक विचार पनपने से उसका परिणाम लड़ाई-झगड़े, वाद-विवाद, सजा और उपेक्षा होता है जो परस्पर एक दूसरे से संबद्ध हैं।

ईमानदारी की कमी : शराबी या नशेबाज व्यक्ति प्रायः झूठे होते हैं। यहाँ तक कि जहाँ वे सच भी बोल सकते हैं तो भी झूठ ही बोलते हैं। ऐसे परिवारों से बच्चे झूठ बोलना सीखते हैं। पिता अपनी शराब पीने की आदत के संबंध में सदैव झूठ बोलता है। बच्चे की माँ अपने परिवार की प्रतिष्ठा को बचाने के लिए झूठ बोलती है। पिता हमेशा वायदे करता रहता है किंतु उन्हें कभी भी पूरा नहीं करता। यह सब बच्चा अपनी आँखों से देखता और सुनता है कि उसका परिवार झूठा है। बच्चा सीखता है कि झूठ बोलना सही होता है। कुछ मामलों में बच्चे को ईमानदार होने और अपनी सच्ची भावनाओं को व्यक्त करने पर दण्डित किया जाता है।

नकारना : बेईमानी का एक रूप है। शराबी अपनी प्रतिष्ठा या सम्मान को बनाए रखने के लिए झूठ बोलता है। सत्य को स्वीकार करना उसके लिए बहुत ही पीड़ादायक होता है। इसी तरह बच्चा भी स्वीकार नहीं करता है कि उसके पिताजी एक शराबी है। इसलिए वह नकारता है और बढ़ती आयु के साथ इसे नकारने की आदत हो जाती है।

अवसाद या ग्लानि : शराबी परिवार के सदस्य की बहुत सारी आश्यकताएँ पूरी नहीं होती हैं। किसी स्वस्थ भावनात्मक व्यक्ति के विकास में शारीरिक, भावनात्मक और मानसिक बुनियादी आवश्यकताएँ उपयुक्त समय पर पूरी होना नितांत आवश्यक होता है। मानव की मूलभूत आवश्यकताएँ पूरी न होने के परिणामस्वरूप जब बच्चे को यह सब नहीं मिलता है तो उसे निराशा और ग्लानि होती है। इस संबंध में यह महत्वपूर्ण है कि अनेक बच्चे जो बहुत अच्छे परिवारों में पलते हैं और हो सकता है वे 'शराबी' न हों, और माता–पिता के पास अपने बच्चों की देखभाल करने का समूचित समय हो क्योंकि वे लोग अपने जीवन में बहुत व्यस्त होते हैं। ऐसे बच्चे प्रायः नर्सों या दाइयों की देखभाल में पाले–पोसे जाते हैं। वे बच्चे भी इस प्रकार के अवसाद के शिकार हो जाते हैं।

इस का निष्कर्ष यह है कि जो परिवार शराब में लिप्त होते हैं वे अपने बच्चों को अस्वस्थ नागरिक बनाते हैं। इनमें से कुछ बच्चे बहुत ही उत्साही और महत्वाकांक्षी हो सकते हैं और कुछ विद्रोही हो सकते हैं। इनमें से कुछ ऐसे हो सकते हैं जो सभी को प्रसन्न करना चाहें, वहीं पर ऐसे भी हो सकते हैं जो सभी को अपना दुश्मन बना लें।

इस प्रकार के व्यवहार का मुख्य कारण यह है कि उन्होंने अपने माता–पिता से ठीक समय पर समुचित अच्छी जीवन शैली नहीं सीखी है क्योंकि उनके माता–पिता परिवार ने जब उन्हें कुछ सिखाना था, तब शराब की समस्या में अत्यधिक व्यस्त रहे।

व्यसन के संबंध में पारिवारिक प्रतिक्रिया

हम पहले ही चर्चा कर चुके हैं कि परिवार पहली और महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था है, जहाँ पर जीवन में कठिनाइयाँ आने पर शरण और सुरक्षा मिलती है। मादक द्रव्य दुरुपयोग इस बात का संकेत है कि परिवार बच्चे के पालन–पोषण करने की प्रक्रिया में, उसकी सहायता

करने में असफल रहा है। जब एक व्यक्ति आत्महत्या का प्रयास करता है तो यह इस बात के चिह्न है कि परिवार आत्महत्या का प्रयास करने वाले व्यक्ति की समस्याओं का समाधान करने में असमर्थ है। परिवार व्यसन की समस्या का विभिन्न प्रकार से सामना करता है। सभी मामलों में देखा गया है कि जो प्रणाली अपनाई जाती है वह संतोषजनक नहीं होती है बल्कि अप्रत्यक्ष रूप से व्यसन को प्रोत्साहित किया जाता है।

यदि परिवार व्यसन की समस्या को अच्छे ढंग से सुलझाने का प्रयास करता है तो वह इसे सफलतापूर्वक सुलझा सकता था। परिवार की व्यसन के प्रति विभिन्न प्रतिक्रियाओं को निम्नांकित शब्दों में वर्णन किया जाएगा। आप स्वयं देख सकते हैं कि सभी नकारात्मक हैं।

जब एक जीव को जीवन का खतरा होता है तो वह जीवन के अनावश्यक अन्य पक्षों की कीमत पर अपने जीवन को बचाना चाहता है। भूकम्प के मामले में एक व्यक्ति ऊँची छत से कूद कर जान बचाने का प्रयास कर सकता है। अपने वस्त्रों में आग लगने के स्थिति में व्यक्ति जान बचाने के लिए घबराहट के कारण भाग सकता है। यदि आपके सिर पर कोई घातक वार करता है तो आप अपने सिर को बचाने के लिए हाथ ऊपर करेंगे ताकि चोट सिर में न लग कर हाथ पर झेली जाए अर्थात सिर बचाने के लिए हाथ को जख्मी होने का जोखिम उठाया जा सकता है। इसी तरह से व्यसनी के परिवार व्यसन के प्रति कुछ प्रतिक्रियाएँ करते है जो प्रायः गलत होती हैं। इस संबंध में निम्नलिखित छः प्रतिक्रियाएँ दी गई हैं।

1) **नकारना** : समस्या को नकारा जाता है और उसे उचित ठहराने का प्रयास किया जाता है। जब परिवार इस समस्या को जान लेता है तो समस्या स्वीकार नहीं करता है, या नकारता है। परिवार के लोग व्यसनी के मादक द्रव्य दुरुपयोग के अन्य कारण बता कर उसे उचित ठहराने का प्रयास कर सकते हैं। परिवार में कुछ व्यवस्था करके उसे व्यसन न करने के लिए दबाव भी डालेंगे। परिवार वाले मादक द्रव्यों को छोडने के लिए उसे कुछ पुरस्कार या उसे रिश्वत देने का वायदा भी कर सकते हैं।

2) **परिवार द्वारा समाज से अलग रहना** : परिवार समाज से अलग रहना आरंभ कर देता है, वे सामाजिक गतिविधियों में भाग नहीं लेते हैं ताकि परिवार की इस समस्या का अन्य लोगों को पता न चले। वे लोगों को व्यसनकर्ता के लिए कुछ प्रयास करके मादक द्रव्य दुरुपयोग के परिणामों से सुरक्षित रखने का यत्न करेंगे। यह भी हो सकता है कि शराबी की बोतल तोड़ कर या उसके साथ नियंत्रित रूप से पीकर उसकी लत को नियंत्रण करने का प्रयास भी किया जा सकता है। कुछ मामलों में पत्नी अपने पति पर नियन्त्रण करने के लिए शराब पीने में शामिल हो सकती है।

3) **नियन्त्रण खोना** : इस अवस्था में व्यक्ति अपने ऊपर नियंत्रण खो देते हैः जब परिवार लम्बे समय तक व्यसनी के इशारों पर नाचता रहता है और व्यसनी लगातार परिवार के सदस्यों की सवेच्छा का लाभ उठाते हुए अपने व्यवहार में तनिक भी परिवर्तन नहीं करता है तब परिवार के लोग क्रोध करना आरंभ कर देते हैं। हो सकता है कि इस क्रोध को वे स्पष्ट रूप से प्रदर्शित न करें परंतु वे समझ जाते हैं कि नियंत्रण के प्रत्येक उपाय बेकार हो गए है।

4) **परिवार की व्यवस्था को पुनर्गठित करना** : परिवार की व्यवस्था को पुनर्गठित किया जाता है। आरंभ में किए जाने वाले उपायों में से इसी उपाय को प्रभावी माना गया है। परिवार के लोग अपनी जिम्मेदारियाँ स्वयं संभाल लेते हैं और चाहते हैं, कि

व्यसनी भी इसमें शामिल हो। यह स्थिति उस समय और अधिक स्पष्ट हो जाती है जब व्यसनी स्वयं परिवार का मुखिया अथवा महत्वपूर्ण सदस्य हो।

यह भी हो सकता है कि घर के खर्च को चलाने के लिए दो पारी में काम करने लगे अथवा परिवार में से बड़े बच्चे को काम पर लगा दिया जाए।

5) **व्यसनी से दूर भागना** : व्यसनी से दूर भागने लगते हैं क्योंकि व्यसन जब सहन करने योग्य नहीं रहता है तो परिवार के लोग शराबी या व्यसनी से अपने आपको अलग कर लेते हैं। यदि व्यसनी विवाहित है तो तलाक भी लिया जा सकता है। परिवार व्यसनी को त्याग दे, उसे पुलिस गिरफ्तार कर सकती है। हो सकता यदि समाज अनुमति दे तो पत्नी उसे तलाक भी दे सकती है।

6) **व्यसनी की वास्तविकता को प्रकट करना** : व्यसनी को वास्तविकता बता दी जाती है, वह सबसे अधिक सहायता पूर्ण स्थिति होती है जहाँ परिवार के लोग अपनी समस्या से इंकार करना छोड़ देते हैं और व्यसनी को स्वयं ही कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

व्यसनी परिवार की भावनात्मक प्रतिक्रिया

हम यहाँ फिर से बताना चाहेंगे कि व्यसन एक पारिवारिक रोग है। परिवार के एक सदस्य के व्यसनी होने के परिणामों से कोई भी सदस्य बच नहीं सकता है। वे शारीरिक और मानसिक रूप से पीड़ित होते हैं। यहाँ पर हम यह बताना चाहते हैं कि किस प्रकार से व्यसन के प्रति परिवार के लोग अपनी भावनात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।

अपराध बोध : परिवार के लोग यह समझने लगते हैं कि उनके प्रियजन के व्यसनी बनने में उनकी भी कुछ गलतियाँ हैं। व्यसन के साथ जुड़े सामाजिक कलंक भी इस प्रतिक्रिया को मजबूत बनाते हैं। परिवार के सदस्य अपने आप पर या किसी बाह्य व्यक्ति पर दोष आरोपित करते हैं। दोषारोपण करने से अपराध बोध और शर्म महसूस होती है। हो सकता है ऐसी स्थिति में परिवार के लोगों में क्रोध के भाव पनपने लगते हैं। इस क्रोध को दबाने से इन लोगों में भी किसी प्रकार का मानसिक रोग पैदा हो सकता है।

संताप या दुख : परिवार जीवन के प्रति निराश हो जाता है। वे अपने प्रियजन के नष्ट होने को भी समझ सकते हैं। इसके अतिरिक्त भी हानियाँ होती हैं जैसे कि सामग्री, वस्तु, धन, परिवार का अच्छा नाम, व्यक्तिगत प्रतिष्ठा आदि। दुख को व्यक्त करने के लिए उसे उसी तरह से आवश्यकता होती है जैसे अन्य भावनाएँ होती हैं। पंरतु वे महसूस करते हैं कि उन्हें कोई भी समझने का प्रयास नहीं कर रहा है। वे अपनी चिंताओं व दुखों को दबाते रहते हैं और स्वयं ही दुखी और पीड़ित रहने लगते हैं।

लज्जा या शर्म : व्यसनी का परिवार में रहना बहुत ही तनावपूर्ण होता है। व्यसनी का व्यवहार बहुत ही अप्रत्याशित होता है। सदस्य नहीं जानते हैं कि व्यसनी क्या कर बैठेगा। वे अपने जीवन और भविष्य के लिए भी चिंतित रहते हैं। उनके संबंधों में अत्यधिक तनाव बना रहता है।

एकाकीपन : शर्म, कष्ट और भय को अनदेखा नहीं किया जा सकता है, इसलिए इनका संयोजन एकाकीपन का निर्माण करता है। आगे और होने वाली भावनात्मक पीड़ा से बचने के लिए वे अपनी भावनाओं को छिपाने का प्रयास करते हैं और उन्हें किसी को भी बताना नहीं चाहते वे बहुत बातें करेंगे किंतु अपनी भावनाओं को कभी भी व्यक्त नहीं करेंगे। वे एकदम अकेले हो जाते हैं।

बोध प्रश्न I

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) परिवार पर मादक द्रव्य दुरूपयोग का क्या प्रभाव पड़ता हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

3.3 व्यसनी परिवार की व्यावहारिक प्रतिक्रिया

सभी तरह के व्यवहार भावनाओं की अभिव्यक्ति हैं। व्यसनी परिवारों के कुछ निश्चित व्यवहार होते हैं। इन व्यवहारों की गहराई अलग–अलग हो सकती है किंतु इनके घटक समान होते हैं।

बचाव करना : परिवार के सदस्य चाहते हैं कि व्यसनी को समस्या से बचाया जाए। इसलिए वे लोग व्यसनी के कार्यों और जिम्मेदारियों को स्वयं संभाल लेते हैं। उसे अपने गैर–जिम्मेदारी से उत्पन्न समस्याओं को महसूस कराने व सामना करने देने के स्थान पर वे उसके सभी कार्यों को पूरा करते हैं, उसका ऋण चुकाते हैं और अनुपस्थिति के लिए झूठ बोलते हैं। इस प्रक्रिया को योग्य बनाने के नाम से जानते हैं। इस संबंध में अगले भाग में अधिक चर्चा करेंगे अर्थात् सह–निर्भरता में इसके बारे में और अध्ययन करेंगे।

नियंत्रण करना : परिवार के लोग व्यसनी की व्यसन की लत पर नियंत्रण करने के लिए सभी तरह के भरसक प्रयास करते हैं। वे लोग उसके लिए निश्चित मात्रा में मादक द्रव्य खरीद सकते हैं ताकि वह घर पर इनका सेवन कर सके। मादक द्रव्य उसके पास जितने मादक द्रव्य हैं उन्हें नष्ट करने का प्रयास कर सकते हैं और वह जहाँ जाता है वहाँ उसके साथ जाने की कोशिश करते हैं। जितना भी व्यसनी पर नियंत्रण किया जाता है उतना ही वह अपनी प्रतिक्रिया और तेजी से करता है, तथा अपने परिवार के लोगों को ही जिम्मेदार ठहराता है।

दोषारोपण करना : व्यसनी के कार्यकलाप परिवार को क्षति पहुँचाने वाले होते हैं। इसमें परिवार के सदस्य क्रोध करते हैं। परंतु प्रायः वे इसे व्यक्त नहीं करते हैं। क्योंकि वे कलह से बचने का प्रयत्न करते हैं। जब कभी परिवार में कुछ अधिक ही गंभीर घटना घटती है तो वे लोग व्यसनी को दोष देने लगते हैं या उसे मनहूस मानने लगते हैं।

नकारना : कोई भी व्यक्ति अप्रिय वास्तविकता जो उसके नियंत्रण में नहीं है, को कभी भी स्वीकार नहीं करेगा। इसको संभालने का एक ही उपाय होता है कि वह इस तरह की स्थिति को नकारने लगता है।

बोध प्रश्न II

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) किस प्रकार से परिवार व्यसन के प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता है?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

3.4 सह-निर्भरता

रोबर्ट सब्बी के अनुसार, "सह–निर्भरता एक भावनात्मक, मानसिक और व्यावहारिक स्थिति है जो लम्बे समय से व्यक्ति के लिए ऐसे दमनकारी नियमों से वास्ता पड़ने, निरंतर जारी रहने के कारण उत्पन्न होती है। ये नियम व्यक्ति को भावनाओं की मुक्त अभिव्यक्ति एवं वैयक्तिक तथा अन्तरवैयक्तिक समस्याओं पर प्रत्यक्ष चर्चा करने से रोकते हैं। दमित नियमों का समूह है– ये वे नियम हैं जो अपनी भावनाओं को खुले में व्यक्त करने", दूसरे शब्दों में इसका अर्थ है निर्भरता में सहयोगी बनना।

जब कोई व्यक्ति नशा करना आरंभ करता है तो कोई उसके कार्यों के परिणामों का सामना करने में उसकी सहायता न करे तो वह अपनी लत को अधिक दिनों तक बरकार रखने में असमर्थ होगा। उसके बिना वह अपनी द्रव्य लत को व्यसन की चरम सीमा पर पहुँचने से पूर्व समस्याओं का सामना करने के लिए विवश होगा। यहाँ तक कि व्यसन की प्रारंभिक अवस्था में भी व्यसनी का व्यवहार बहुत खराब और असामाजिक हो जाता है जो कि स्वाभाविक परिणाम है। ये उसे और अधिक व्यसन में जाने से रोक सकते हैं। परंतु जो लोग उससे प्रेम करते हैं वे उसे संरक्षण प्रदान करते हैं। ज्यों ज्यों वह रोग बढ़ता चला जाता है उसे और अधिक संरक्षण दिया जाने लगता है। इसे हम योग्य बनाना कह सकते हैं। जो व्यक्ति उसकी इस कार्य में सहायता करता है उसे हम सह–निर्भरता कहते हैं। ये लोग अपनी प्रतिक्रिया करते हैं। वे अपने दुखों और समस्याओं, दुखों और दूसरों के व्यवहार के प्रति प्रतिक्रिया करते हैं। वे अपने दुखों और समस्याओं के प्रति भी प्रतिक्रिया करते हैं। उन्हें प्रतिक्रिया के स्थान पर सामना करने का मार्गदर्शन दिया जाना चाहिए सामना करना स्थिति का उत्तर होता है, प्रतिक्रिया करना स्थिति को नकारना होता है।

बोध प्रश्न III

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) सह–निर्भरता क्या होती है?

.....

.....

.....

.....

.....

3.5 मादक द्रव्य दुरुपयोग और राष्ट्रीय विकास

हाल के वर्षों में मादक द्रव्य दुरुपयोग ने बहुत ही नाटकीय ढंग से सीमाओं को लांघ दिया है। इसमें बेहद वृद्धि हुई है। मादक द्रव्यों का दुरुपयोग करने वालों व्यक्ति अधिकतर युवा वर्ग के हैं जिनमें से कुछ धनी हैं और अधिकतर गरीब हैं। मादक द्रव्यों के दुरुपयोग से बहुमूल्य मानव और प्राकृतिक स्रोत नष्ट हो जाते हैं जिनका सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए प्रयोग किया जा सकता था। मादक द्रव्य दुरुपयोग से व्यक्ति, परिवार, समुदाय तथा अविकसित राष्ट्र की अर्थव्यवस्था बर्बाद हो जाती हैं। इसलिए इस पर प्रतिबंध लगाना अत्यंत आवश्यक है।

राष्ट्रीय विकास का अर्थ मानव और प्राकृतिक संसाधनों का विकास होता है। मादक द्रव्य दुरुपयोग मानव और प्राकृतिक संसाधनों दोनों पर ही भारी बोझ है। मानव विकास में मादक द्रव्य दुरुपयोग युवा पीढ़ी को नष्ट करता है जो देश का भविष्य है। प्राकृतिक संसाधनों की ओर से विचार करें तो राष्ट्र को इसकी प्रत्यक्ष रूप में भारी कीमत चुकानी पड़ती है।

मादक द्रव्य दुरुपयोग का प्रत्यक्ष प्रभाव उत्पादकता की हानि के रूप में होता है जो व्यसनी और राष्ट्र से भी संबंधित है। कुछ मामलों में व्यसनी मुख्य उत्पादक हो सकता है। जब व्यसनी किसी भी काम करने के योग्य नहीं रहता है तो इससे पूरी व्यवस्था को हानि उठानी पड़ती है। इसलिए अनेक प्रकार से हानि हो सकती है।

मादक द्रव्य दुरुपयोग का सेवन राष्ट्र पर बहुत बड़ा भार है क्योंकि यह युवा वर्ग को समाप्त कर देता है। व्यसन अनेक लोगों को मौत के घाट उतार देता है वहीं पर बहुत सारे लोगों को अक्षम बना देता है। लोग ही राष्ट्र की वास्तविक सम्पत्ति होते हैं। व्यसन इस विशाल क्षेत्र को ही चोट पहुँचाता है। जैसे कि हम पहले देख चुके हैं कि व्यसन परिवार को नष्ट करने में व्यापक प्रभाव डालता है। इससे अनेक असामाजिक तत्वों का निर्माण होता है। इसलिए अब हम आपराधिक गतिविधियों और व्यसन के बीच संबंधों की भी चर्चा करेंगे। इस दृष्टि से व्यसन राष्ट्रीय विकास में बहुत बड़ी बाधा है।

राष्ट्र व्यसन के लिए बहुत बड़ी कीमत चुकाता है जैसे कि अपराध, परिवहन और कार्यस्थल पर दुर्घटनाएँ और सार्वजनिक स्वास्थ्य देखभाल व्यवस्था के अंतर्गत व्यसनियों के इलाज पर खर्च करना पड़ता है। समुदायों, विद्यालयों तथा व्यापार को भी खर्च करना पड़ता है। "मादक द्रव्यों के दुरुपयोग में वृद्धि हाने के कारण सरकार को इसकी रोकथाम के लिए अनेक छोटे–छोटे कदम तुरंत उठाने पड़ते हैं जैसे कि: (1) मादक द्रव्य व्यसन की रोकथाम और उसका इलाज तथा, (2) सार्वजनिक स्वास्थ्य देखभाल व्यवस्था के अंतर्गत मादक द्रव्यों से संबंधित रोगों का इलाज आदि। क्या एशियाई देशों की विकासशील सरकारें बिना किसी अंतरराष्ट्रीय सहायता अथवा अपनी प्राथमिकताओं में कटौती करके इस अतिरिक्त भार को वहन कर सकती हैं? क्या इस क्षेत्र में, सामाजिक क्षेत्र में रोकथाम के लिए खर्च करके अन्य विकसित स्रोतों को कुचल दिया जाए? इसका उत्तर स्पष्ट रूप में नकारात्मक ही मिलेगा। भारत सरकार ने 1994 में लगभग 14 करोड़ रुपये इसकी रोकथाम और चिकित्सा सेवाओं के लिए आबंटित किए थे। इस धनराशि से प्रत्येक व्यसनी पर 1500 रुपये खर्च आता है।

मादक द्रव्यों की खरीद पर जो राशि व्यय की जाती है। वह संगठित आपराधिक समूहों के हाथों में जाती है। हम देख चुके हैं कि गैर अवैध मादक द्रव्य व्यवसाय एक संगठित आपरधिक गतिविधि है। मादक द्रव्य दुरुपयोग करने वाले लोग इन आपराधिक समूहों की आय में वृद्धि करते हैं। ऐसा करके वे काले धन को एकत्रित करने की योजना में शामिल हो जाते हैं।

मादक द्रव्य के दुरुपयोग के कारण अनेक संक्रमण रोग महामारी के रूप में फैलते हैं जैसे कि एच आई वी/एड्स आदि। इस तरह अमूल्य मानव संसाधन नष्ट हो जाते हैं। इससे सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यवस्था पर भी बोझ पड़ता है।

3.6 मादक द्रव्य दुरुपयोग और अपराध

घरेलू हिंसा में मादक द्रव्यों की भूमिका के संबंध में जब हम पिछले भाग में चर्चा कर रहे थे तो हमने बताया था कि व्यसनी अपने मादक द्रव्यों की आपूर्ति के लिए किसी भी तरह की हिंसा कर सकता है। यद्यपि उसके द्वारा किए गए अपराधों के प्रकारों और सीमाओं को बताया नहीं जा सकता है। व्यापारी व्यवस्थापक अपनी मादक द्रव्यों की आपूर्ति के लिए कम्पनी के धन को चुरा लेता है, इस प्रकार की अनेक कहानियाँ सुनी जाती हैं। व्यसनी मादक द्रव्य प्राप्त करने के लिए किसी भी तरह का आपराधिक व्यवहार कर सकता है यहाँ तक कि किसी की हत्या भी कर सकता है।

मादक द्रव्य दुरुपयोग से संबंधित चार प्रकार के अपराध हो सकते हैं: (क) मादक द्रव्य प्राप्त करने के लिए व्यसनी द्वारा किए जाने वाले अपराध, (ख) मादक द्रव्य बेचने वालों के द्वारा मादक द्रव्य बाज़ार में अपना दबदबा बनाने के लिए किए जाने वाले संघर्ष, (ग) मादक द्रव्य माफिया अपने गैर–कानूनी व्यापार को बचाने के लिए भंयकर हिंसा कर सकते हैं और (घ) वित्तीय अपराध जैसे कि काला धन एकत्रित करना, गैर–कानूनी मादक द्रव्यों का उत्पादन और उसका व्यापार करना आदि।

एक अनुमान के अनुसार अमेरिका में 70 प्रतिशत बड़े अपराध मादक द्रव्यों से संबंधित होते हैं। प्रत्येक वर्ष ड्रग माफिया हजारों अरवों रुपयों का इस गैर–कानूनी व्यापार में लेन–देन करता है। इन अपराधियों के पास सरकारी पुलिस से कई मायनों में अच्छे हथियार होते

हैं। ये माफिया किसी भी देश की सरकार को गिराने या अपने अनुसार बदलने में समर्थ होते हैं जैसे दक्षिण अमेरिका में हुआ।

मादक द्रव्य दुरुपयोग तथा मादक द्रव्यों का गैर–कानूनी व्यापार अप्रत्यक्ष रूप से आतंकवादी संगठनों से जुड़ा होता हैं। वे बाज़ार में उनके दवाब से मादक द्रव्यों की माँग को बढ़ा सकते हैं। हमारे देश में अनेक आतंकवादी संगठनों का मादक द्रव्य धन ही उनकी आय का मुख्य स्रोत है। यह एक दूसरे प्रकार की आपराधिक गतिविधि है जो मादक द्रव्य दुरुपयोग से संबंधित हैं। अतः संक्षेप में कह सकते हैं कि मादक द्रव्य का अवैध व्यापार एक संगठित गतिविधि है।

बोध प्रश्न IV

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) किस प्रकार से व्यसन राष्ट्रीय विकास को प्रभावित करता है?

.....

.....

.....

.....

.....

3.7 मादक द्रव्य मुक्त राष्ट्र के लिए प्रयास

सम्पूर्ण रूप से राष्ट्र को मादक द्रव्यों से मुक्त करने का विचार अव्यावहारिक ही माना जाएगा। मादक द्रव्य मानव इतिहास के आरंभ से ही मौजूद है। यह यहाँ हमेशा रहेंगे। जैसे कि प्रत्येक प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग मानवता के लिए किया जाता है उसी प्रकार से मादक द्रव्यों का भी लाभ उठा सकते हैं। मादक द्रव्य युवाओं के जीवन को नियंत्रित करने लगा है। यह एक अपशकुन है।

हानिकारक मादक द्रव्यों के उपयोग को कम करने के लिए विश्व की चिन्ताओं में वृद्धि हुई है। यह प्रक्रिया युवा लोगों को शिक्षित करने से आरंभ की गई है। विश्व में मादक द्रव्यों के संबंध में दो विचार प्रचलित किए गए हैं: पहला मनो–संवेदन मादक द्रव्यों के प्रयोग की कानूनी अनुमति दी जाए, या इन पर पूर्ण रूप से प्रतिबंध लगा दिया जाए। प्रतिबंध लगाना सफल नहीं रहा है। कानूनन अनुमति देने से जीवन की गुणवत्ता सुधार में कोई सहायता नहीं मिलेगी। हम मादक द्रव्य से नशा करने के पक्ष में या उसके विपरीत अपना मत नहीं दे सकते। हमारा मानना है कि मादक द्रव्यों से मुक्त राष्ट्र की मुख्य कुंजी शिक्षा, सूचना और रोकथाम हो सकती है।

3.8 सारांश

इस इकाई में हमने परिवार तथा राष्ट्र पर मादक द्रव्य के दुरुपयोग के प्रभावों के संबंध में चर्चा की है। हमने व्यक्ति और राष्ट्र के जीवन में परिवार के कार्यों और उसकी भूमिका का वर्णन किया है। हमने देखा है कि किस प्रकार से व्यसन परिवार के वातावरण में परिवर्तन कर देता है और किस प्रकार से परिवार की संपूर्ण कार्य प्रणाली को विकृत कर देता है। व्यसन परिवार में हिंसा को प्रोत्साहित करता है और बच्चों के व्यक्तित्व पर बुरा प्रभाव डालता है।

जब व्यसन परिवार को अस्त–व्यस्त कर देता है, इस स्थिति में संतुलन बनाए रखने के लिए अस्वस्थ प्रतिक्रिया व्यक्त की जाती है। अधिकतर परिवार व्यसन के संबंध में लगातार नकारात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं। इससे व्यक्ति का व्यसनीय व्यवहार में वृद्धि होने में सहायता मिलती है।

राष्ट्र भी अपने नागरिकों के व्यसन के लिए बहुत भारी कीमत चुकाता है। मादक द्रव्यों के दुरुपयोग से अपराध, आतंकवाद और काले धन को पनपने का अवसर प्राप्त होता है। इनके राष्ट्रीय विकास पर विपरीत प्रभाव पढ़ते हैं।

3.9 शब्दावली

सामंजस्य की समस्या : एक व्यक्ति के लिए व्यक्तिगत या सामाजिक संबंधों की माँग की प्रतिक्रिया में कठिनाइयाँ अनुभव करना।

काला धन : गैर–कानूनी धन।

सामना करने की कला : व्यक्तिगत जीवन की चुनौतियों का सामना करने का कौशल।

जन सांख्यिकीय : जनसंख्या से संबंधित।

परिस्थिति विज्ञान व्यवस्था : शरीर की अंतरक्रिया व्यवस्थाएँ और उनके शारीरिक वातावरण के जैविक समुदाय।

जल मंडल : पृथ्वी का जलमग्न क्षेत्र।

वनस्पति नाशक : वे रसायन जो पौधों को नष्ट करा सकते है।

पहचान की समस्या : व्यक्ति की स्वयं को एक अच्छे व्यक्ति के रूप में प्रदशित करने की अयोग्यता।

आंतरिक स्वीकृति : अपना महत्व या मूल्य स्वयं स्वीकार करना।

धन धोना : एक ऐसी गैर–कानूनी प्रक्रिया जिसके माध्यम से काले धन को कानूनी धन के रूप में परिवर्तित करना।

नकारात्मक प्रक्रिया : दूसरे व्यक्ति की असहयोगी प्रतिक्रिया।

अपने आपको महत्व देना : स्वयं को अच्छा मानने की प्रवृत्ति।

सहोदर भाई या बहन : एक ही माता–पिता की संतान।

अव्यावहारिक : अंसगत जो वास्तविक न हो।

अलगाव : समूह से दूर रहना।

3.10 कुछ उपयोगी पुस्तकें

सारॉन वेगस्चीडर क्रुस (1989), *अनोदर चांस : साइंस एंड बिहेवियर बुक्स*, कैलिफोर्निया।

स्कॉट (1978), *सोशल प्राब्लम्स*, फॉरमैन एंड कम्पनी, इलीनॉइजस।

टाटा इंस्टीटयूट ऑफ सोशल साइंस (1969), *हेल्थ हेबिट्स हेल्दी लाइफ*, मुम्बई

यू एन डी सी पी (1999), *ड्रग डिमांड रिक्डक्शन रिपोर्ट*, रीजनल आफिस, नई दिल्ली

टी टी रंगनाथन (1989), *अल्कहोलिज्म एंड ड्रग डिपेंडेंसी*, क्लिनिक्ल रिसर्च फाउंडेशन, चेन्नई।

3.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न I

1) व्यसन एक परिवारिक रोग है। यद्यपि परिवार में केवल एक व्यक्ति व्यसनी होता है किंतु इसके परिणामों से परिवार के सभी सदस्य पीड़ित होते हैं। व्यसन से परिवार में अप्रत्याशित समस्याएँ ऐसी रहती हैं। इनमें से कुछ वित्तीय, कुछ स्वास्थ्य संबंधी और कुछ कानूनी समस्याएँ हो सकती हैं। परिवार का संतुलन बिगड़ जाता है और परिवार की सामान्य कार्य प्रणली विकृत हो जाती है। व्यसन से पूरे परिवार का वातावरण दूषित हो जाता है।

बोध प्रश्न II

1) परिवार के लोग अपने एक सदस्य के व्यसन के संबंध में अलग–अगल दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। व्यसन का सामना करते हुए परिवार नकारात्मक, दोषारोपण, एकाकीपन तथा नियंत्रण करने आदि जैसी प्रतिक्रिया करता है। ये सभी प्रयास बेदम होते है। और कुछ प्रयास अप्रत्यक्ष रूप से व्यसन को बढ़ावा देते हैं।

बोध प्रश्न III

1) यह एक व्यावहारिक प्रतिरूप है जो परिवार के एक या उसके अधिक सदस्य व्यसन की प्रतिक्रिया को अपनाते हैं। व्यसनी के व्यवहार के परणिामस्वरूप भय के कारण परिवार के अन्य सदस्यों द्वारा अपनाए गए व्यवहार वे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से व्यसन परिणामों का सामना करने में व्यसनी को रोकने का प्रयास करते हैं। यह निर्भरता व्यवहार (आदत) का एक सहयोगी हिस्सा बन जाता है।

बोध प्रश्न IV

1) कुछ मादक द्रव्य दुरुपयोग से प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में राष्ट्रीय विकास अत्याधिक प्रभावित होता है। व्यसन से नागरिक का स्वास्थ्य और धन का नाश होता है। व्यसन से राष्ट्र की उत्पादन क्षमता लोगों को मादक द्रव्यों से दूर रखा जाए।

आपूर्ति में कमी करना—मादक द्रव्यों को लोगों तक पहुँचने से रोकना अथवा माद्क द्रव्यों का गैर–कानूनी व्यापार परागमन केंद्र का वर्णन किया जाए।

श्री जोनाथन जी द्वारा दिए गए सभी 6 सुझाव भाग 5.6 में दिए गए हैं।

आप सरकार की जिम्मेदारियों और उसकी भूमिका से अवगत हैं। आप अपने शब्दों में लिखिए कि किस प्रकार से सरकारी तंत्र गैर–कानूनी मादक द्रव्यों के व्यापार पर पाबंदी लगा सकता है। स्पष्ट कीजिए कि सरकार कानूनी मादक द्रव्यों की आपूर्ति में क्या कर सकती है।

इकाई 4 स्वापक (उपविष) औषध और मनोपरिवर्तक मादक द्रव्य अधिनियम, 1985 (एन डी पी एस एक्ट, 1985)

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 मौजूदा औषध कानूनों में प्रमुख कमियाँ

4.3 एन डी पी एस एक्ट में 1989 का संशोधन अधिनियम

4.4 महत्वपूर्ण धाराएँ, अपराध और सजाएँ

4.5 सारांश

4.6 शब्दावली

4.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

4.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

4.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप जान सकेंगे:

- एन डी पी एस एक्ट में प्रयुक्त प्रमुख शब्दावली की परिभाषा;
- एन डी पी एस एक्ट की प्रमुख विशेषताएं; और
- एन डी पी एस एक्ट में सम्मिलित किए गए विभिन्न प्रकार के अपराध और दण्ड।

4.1 प्रस्तावना

जबकि हम शराब, मादक द्रव्यों और एच आई वी से संबंधित विभिन्न पहलुओं की चर्चा कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में यह वांछनीय होगा कि हम मादक द्रव्यों से संबंधित कानूनों में से कम से कम एक अधिनियम की समीक्षा करें। इसलिए आइए अब हम इस इकाई में एन डी पी एस अधिनियम, 1985 की समीक्षा करते हैं।

एन डी पी एस अधिनियम, जो बहुत प्रसिद्ध है, एक महत्वपूर्ण सामाजिक समस्या, मादक द्रव्यों का अवैध व्यापार की रोकथाम करने के संबंध में जाना जाता हैं। यह एक विशेष अधिनियम भी है जिसके अंतर्गत प्रायः बहुत सारे मामले न्यायालयों में प्रस्तुत किए जाते है तथा अनेक विवादास्पद निर्णय दिए जाते हैं जिनसे साधारण आदमी उलझन में पड़ जाता है।

एन डी पी एस एक्ट के बनने से पहले "भारत में अनेक केंद्रीय और राज्य अधिनियमों के माध्यम से स्वापक द्रव्यों पर नियंत्रण किया जाता था। तीन प्रमुख केंद्रीय अधिनियम, जैसे कि अफीम अधिनियम, 1857, 1878 .तथा खतरनाक मादक द्रव्य अधिनियम, 1930 बहुत पहले लागू किए गए थे। लम्बे समय के अंतराल और राष्ट्र तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मादक द्रव्य कानूनों को लागू करते समय अनेक खामियाँ देखने में आई हैं।

4.2 मौजूदा औषध कानूनों में प्रमुख कमियाँ

एन डी पी एस अधिनियम में पाई गई प्रमुख कमियों को हम चार श्रेणियों में विभाजित कर सकते हैं जो निम्न प्रकार हैं:

1) तात्कालिक कानून तस्करों के संगठित गिरोहों की चुनौतियों का सामना करने, उन्हें दण्डित करने के लिए समुचित नहीं थे। भारत मादक द्रव्यों के अवैध व्यापार के आवागमन की समस्या का सामना कर रहा है जिसका लक्ष्य पड़ोसी देशों से पश्चिमी देश होते हैं। मादक द्रव्य अधिनियम 1930 के प्रावधानों के अनुसार ऐसे अपराधों के लिए जुर्माने सहित या अलग से तीन वर्ष की सजा तथा दोबारा अपराध करने का जुर्माना सहित या अलग से 4 वर्ष की सजा का प्रावधान है। मादक द्रव्यों के अवैध व्यापार के अपराधों से निपटने के लिए न्यूनतम दण्ड निर्धारित नहीं किया गया है तथा ऐसे तस्करों को बहुत बार सामान्य रूप से दण्डित करके छोड़ दिया जाता था।

2) उस समय के केंद्रीय कानूनों में स्वापक, सीमा शुल्क, उत्पादक एवं आबकारी जैसी महत्वपूर्ण एजेंसियों के अधिकारियों को इन कानूनों के तहत इन अपराधों की रोकथाम एवं जाँच अधिकार उपलब्ध नहीं कराए गए थें।

3) जब तक उपर्युक्त तीनों केंद्रीय कानूनों के लागू होने के बाद से विभिन्न अतर्राष्ट्रीय संधियों और विज्ञप्तियों के माध्यम से स्वापक नियंत्रण के क्षेत्र में एक व्यापक अंतर्राष्ट्रीय कानून संगठन बनाया गया। भारत इन सम्मेलनों, संधियों और समझौतों में शामिल था जिनमें अनेक शर्तें थी जो इन मौजूदा कानूनों के अंतर्गत नहीं आते थे अथवा आंशिक रूप से आते थे।

4) हाल के वर्षों में मनोपरिवर्तक के रूप में व्यसन के नए मादक द्रव्यों का उदगम हुआ है जिनसे राष्ट्रीय सरकारों के समक्ष बहुत समस्याएँ हो पैदा गई हैं। 1971 में मनोपरिवर्तक मादक द्रव्यों पर हुए समझौते, जिसमें भारत भी एक सदस्य था, के अनुसार ऐसे व्यापक कानून नहीं थे जिनके अनुसार मादक द्रव्यों पर प्रतिबंध लगाया जा सकें।

उपर्युक्त कारणों को ध्यान में रखते हए स्वापक मादक द्रव्यों और मनो–परिवर्तक द्रव्यों पर व्यापक कानून बनाने की अत्यंत आवश्यकता महसूस की गई जिन्हें स्वापक मादक द्रव्यों के नियंत्रण के संबंध में तात्कालिक कानूनों को समन्वित करने, और संशोधित करना, मादक द्रव्य दुरूपयोग पर नियंत्रण को कठोरता से लागू करना, मादक द्रव्यों के अवैध व्यापार से संबंधित अपराधों के लिए व्यापक रूप से दण्डित करना, मनो–परिवर्तन द्रव्यों पर प्रभावशाली नियंत्रण के लिए प्रावधान लागू करना तथा स्वापक द्रव्यों ओर मनो–परिवर्तन मादक द्रव्यों से संबंधित अंतर्राष्ट्रीय समझौतों का जिसका भारत एक पक्ष है लागू करने के लिए प्रावधान लागू करने की आवश्यकता थी

4.3 एन डी पी एस एक्ट में 1989 का संशोधन अधिनियम

एन डी पी एस एक्ट 1989 में संशोधित किया गया। इस बिल में शामिल उद्देश्य और शामिल कारणों को नीचे दर्शाया गया है:

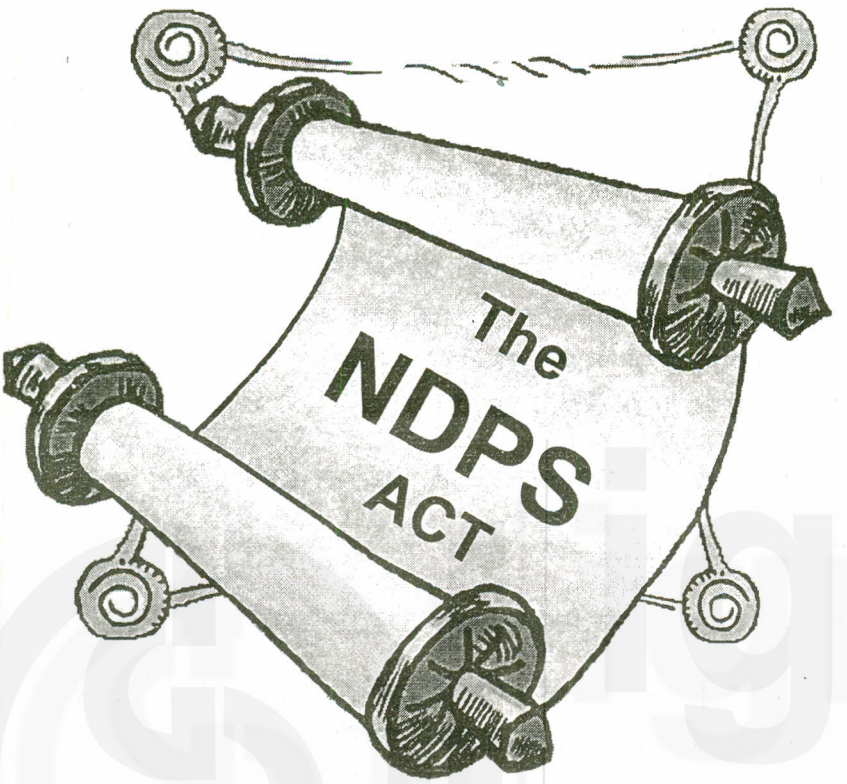

हाल के वर्षों में भारत गैर–कानूनी मादक द्रव्यों के अवैध व्यापार संचालन की समस्या का सामना कर रहा है। इस प्रकार के अवैध व्यापार से मादक द्रव्यों के दुरुपयोग और व्यसन की घातक समस्या पैदा हो गई है। एन डी पी एस एक्ट, 1985 में मादक द्रव्यों के अवैध व्यापार को रोकने के लिए कठोर दण्ड निर्धारित किए गए हैं। यहाँ तक इससे संबंधित प्रमुख अपराधों में सजा के स्तर पर गिरफ्तारी को गैर–जमानती अपराध घोषित किया गया है किंतु अपराधी तकनीकी आधारों पर जमानत देकर छूट जाते हैं।

एन डी पी एस एक्ट, 1985 को लागू करने में जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है इसको ध्यान में रखते हुए अधिनियम को और शक्तिशाली बनाने तथा संशोधन करने की अत्यंत आवश्यकता है।

1) अवैध मादक द्रव्यों व्यापार मादक द्रव्य दुरुपयोग के निवारण में संघर्ष के लिए किए जाने वाले उपायों में होने वाले खर्च की पूर्ति के लिए राष्ट्रीय मादक द्रव्य नियंत्रण निधि की स्थापना करना।

2) एन डी पी एस एक्ट के प्रावधानों के अंतर्गत स्वापक मादक द्रव्य और मनोपरिवर्तक द्रव्यों के उत्पादन के लिए आवश्यक पदार्थों को शामिल करना और इन नियमों का उल्लंघन करने पर कड़ी सजा का प्रावधान करना।

3) अधिनियम के तहत सजा को न तो क्षमा करना और न ही उस में कमी करना।

4) पकड़े गए मादक द्रव्यों को नष्ट करने के लिए पूर्व अभ्यास का प्रावधान।

5) विनिर्दिष्ट अपराध और कुछ मादक द्रव्यों का विनिर्दिष्ट निर्धारित मात्रा के संबंध में दूसरी बार अपराध करने पर मृत्युदण्ड का प्रावधान करना।

6) इसी अपराध में सम्पत्ति को कुर्क करना अथवा जब्त करना और विस्तृत प्रक्रिया को अपनाना तथा

7) अपराध संज्ञेय और गैर–जमानती बनाना।

अधिनियम का क्षेत्र/विस्तार

इस अधिनियम की 83 धाराएँ तथा एक अनुसूची दी गई है जिसमें मनो–परिवर्तक मादक द्रव्यों के नाम दिए गए हैं। इस अधिनियम के अध्याय 3 में पर्याप्त प्रावधानों को शामिल किया गया है जिसमें कुछ गतिविधियों पर प्रतिबंध नियंत्रण और नियमों का संकलन किया गया है। अध्याय 4 में अपराधों और दण्डों को फिर से सशक्त प्रावधानों से जोड़ा गया है। यह सबसे बड़ा अध्याय है जिसमें प्रावधानों को शामिल किया गया है इनको निम्नांकित रूप से श्रेणीबद्ध किया जा सकता है।

1) धारा 15 ए 27 ए विभिन्न अपराधों की सजा से संबंधित है।

2) अवशिष्ट दण्ड प्रावधान–धारा 32

3) धारा 28 से 30 (प्रयत्न, भड़कना और तैयारी करना)

4) अपराधी सिद्ध होने के बाद कठोर दंड देना–धारा 31 से 31ए (धारा 31 क कुछ अपराधों के लिए मृत्युदण्ड का प्रावधान करती है।)

5) कम्पनियों द्वारा किए गए अपराध – धारा 38

6) सजा को समाप्त करना आदि तथा परिवीक्षा पर छोड़ने के प्रावधान समाप्त करना – धारा 32 ए तथा 33)

7) सुरक्षा – धारा 34

8) आपराधिक मानसिक स्थिति की संभावना धारा 35 (53 ए, 54 और धारा) तथा

9) विशेष न्यायालय – धारा 36 से 36 डी।

एन डी पी एस, 1985 एक्ट की कुछ महत्वपूर्ण धाराओं की स्पष्टता के लिए उनकी व्याख्या की गई है।

परिभाषाएँ

इस अधिनियम की धारा 2 में परिभाषाएँ दी गई हैं। इनमें से कुछ महत्वपूर्ण परिभाषाएँ नीचे दी जा रही है।

1) व्यसनी का अर्थ है जो व्यक्ति किसी भी प्रकार का स्वापक या मादक द्रव्य के प्रयोग का आदि हो।

2) (क) चरस चाहे कच्ची हो या परिष्कृत तथा इसमें हशीश या भांग का तेल हो या तरल भांग, शामिल है। (ख) गांजा भांग के पौधे पर लगा फूल या फल है चाहे उसका कोई भी नाम हो (इसमें ऊपरी भाग रहित बीच और पत्तिया शामिल नहीं है) तथा (ग) कोई भी मिश्रण, चरस या गांजा जिसमें कोई प्राकृतिक सामग्री हो या न हो के साथ या कोई पेय जो इसके द्वारा बनाया गया हो।

3) कोका तत्व का अर्थ है (क) अपरिष्कृत कोकेन या कोका की पतियों का कोई भी तत्व हो जिसे कोकेन बनाने में प्रयोग किया जाता है (ख) एकॉगोनाइन तथा इसके सभी तत्व (ग) कोकेन तथा (घ) सभी उत्पाद जिनमे प्रतिशत से अधिक कोकेन की मात्रा हो।

4) कोक पौधों का अर्थ एरीथ्रोक्सीलोन (Erythroxylon) वंश का कोई भी पौधा।

5) मादक द्रव्य अवैध व्यापार के अर्थः

क) किसी कोका पौधे की कृषि या कोका पौधे के किसी भाग को एकत्रित करना,

ख) अफीम/पोस्त भांग के किसी पौधे की खेती करना,

ग) किसी भी मादक द्रव्य या मनो–परिवर्तक द्रव्य के उत्पादन, निर्माण में रखना विक्रय, क्रय, परिवहन, भण्डारण, छिपाकर रखना, उपभोग करना, अंतर्राज्यों स्थानांतरण, भारत में आयात करना, भारत से निर्यात करना अथवा नौकांतरण कार्यों में शामिल होना।

i) उपर्युक्त कार्यकलाओं के अतिरिक्त अन्य कार्यों में सक्रिय होना, अथवा

ड.) उपर्युक्त क से घ में दिए गए किसी कार्यकलापों में संबंधित गतिविधियों को करना या करने के लिए किराये पर स्थान उपलब्ध कराना, तथा इसमें शामिल होना हैः

i) ऊपर दिए गए किसी भी कार्यकलाप के लिए प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से वित्तीय सहायता देना।

ii) उपर्युक्त कार्यकलापों के लिए उत्साहित करना, किसी तरह का षडयंत्र करना अथवा ऐसा करने में किसी भी प्रकार की सहायता करना तथा

iii) उपर्युक्त किसी भी गतिविधि में शामिल व्यक्तियों को आश्रय देना।

6) निर्माण का अर्थ (i) इस प्रकार के मादक द्रव्य या पदार्थों को उत्पादन के अतिरिक्त अन्य प्रक्रिया से प्राप्त किया जा सकता हो। (ii) इस तरह के मादक द्रव्यों या पदार्थों को परिष्कृत करना (iii) इस तरह के मादक द्रव्यों और पदार्थो का रूपांतरण करना, तथा (iv) इनको तैयार करना (औषधालयों और विनिर्देशन के अलावा) जिसमें इस प्रकार के मादक द्रव्य या पदार्थ शामिल हों।

7) तैयार/निर्मित मादक द्रव्य का अर्थ (i) सभी कृत्रिम कोका, चिकित्सकीय भांग या चरस, अफीम पोस्त पोयाल व तूण सान्द्र, (ii) या इसी तरह से सरकार द्वारा घोषित कार्य।

8) स्वापक मादक द्रव्य का अर्थ कोका की पत्तियों, भांग (पोस्त) अफीम, अफीम पौधे के भाग तथा निर्मित मादक द्रव्य।

9) अफीम का अर्थ अफीम पोस्त का जमा हुआ रस और इसी के मिश्रण जो किसी प्रकार के निष्क्रिय करने वाले।

10) पोस्त अंगों का अर्थ है ;बीजों के अतिरिक्तद्ध कटाई के पश्चात् अपने मूल रूप में कटे हुए, कुचले हुए या भूसा बनाये हुए हों, चाहे उसका रस निकाला गया हो या न निकाला गया हो शामिल हैं।

11) पोस्त अंग संक्रेदन का अर्थ है कोई भी पदार्थ चाहे प्राकृतिक हो या कृत्रिम, अथवा कोई प्राकृतिक सामग्री या किसी प्रकार का मिश्रण या इन पदार्थों अथवा मिश्रण से तैयार कोई सामाग्री इस अधिनियम की सूची में शामिल की गई है।

12) कृत्रिम अफीम का अर्थ है (i) चिकित्सीय अफीम, चाहे वह चूर्ण या दानेदार हो या प्राकृतिक सामग्रियों में मिश्रित हो (ii) तैयार अफीम का किसी भी प्रकार का तैयार पदार्थ जो ऐसे रूप में निर्मित हो जिसमें धूम्रपान के बाद अपशिष्ट के योग्य हो और या अवशिष्ट बचे रहें (iii) फेनाथ्रीन क्षार जैसे मार्फीन, कोडेन, थिबेन तथा उनके कारण (iv) डाइसेटिल मार्फीन जो कि क्षारणीय भी है जिसे मार्फीन या हेरोईन कहा जाता है और इसके लवण तथा (v) 0.2 प्रतिशत से अधिक मार्फीन या किसी भी प्रकार के डाईसेटिल मार्फीन शामिल वाले सभी पदार्थ।

13) अफीम पोस्त का अर्थ है (i) स्वापक एल पेपवर वर्ग का पौधा तथा, (ii) पेपवर वर्ग का कोई अन्य पौधा जिससे अफीम या फेनाथ्रीन क्षार निकाला जा सके और जिन्हें इस प्रकार सरकार ने घोषित किया हो।

14) पोस्त अंग का अर्थ अफीम के सभी हिस्से (बीच को छोड़कर) जो कटाई के बाद चाहे वे अपने मूल रूप में हो या कुटे हुए या चूर्ण बनाए या रस इनसे निकाला गया हो।

15) स्वापक या मनो–परिवर्तक तैयार पदार्थ का अर्थ है, इस प्रकार के एक या अधिक माद्क द्रव्य या पदार्थ जो खुराक के रूप में किसी भी प्रकार के घोल या मिश्रण के रूप में हो जिसमें एक या अधिक ऐसे मादक द्रव्य हों।

16) उत्पादन का अर्थ है अफीम, पोस्त अंग, कोका पत्तियों या भांग को उनके पौधों से अलग किया जाए।

'व्यसनी' की अभिव्यक्ति उस व्यक्ति पर लागू होती है जो किसी मादक द्रव्यों को लत के रूप में प्रयोग करता है। अफ्रीका में भांग को मैरीजूना कहते हैं। भारत में इसकी परिभाषा में पत्तियों, और बीजों को छोड़ा गया है जब उनमे पौधे के ऊपरी भाग शामिल न हो, भांग को अधिनियम में सम्मिलित नहीं किया गया है जबकि चरस इसमें शामिल है (धारा 10 (i) (ए) के उद्देश्यों के अतिरिक्त) 'हेरोइन' एक तैयार मादक द्रव्य है जिसे अफीम के सारे तत्व से तैयार किया जाता है जिसकी मात्रा कितनी भी हो।

संस्थाएँ और अधिकारी

इस अध्याय में मादक द्रव्यों के अवैध व्यापार के प्रभावों को रोकने एवं इसके विरूद्ध संघर्ष करने के उपाय करने के लिए केंद्र सरकार को अधिकृत किया गया है। कुछ उपाय इस प्रकार हैं:

1) संस्थाओं/राज्य सरकारों आदि के बीच समन्वय करना।

2) अंतर्राष्ट्रीय समझौते के तहत निर्णयों का पालन करना।

3) मादक द्रव्यों के अवैध व्यापार को रोकने और उसे समाप्त करने या कम करने के लिए संबंधित विदेशी और अतंर्राष्ट्रीय संस्थाओं को सहायता देना ताकि समन्वय और सार्वभौमिक कार्रवाई की जा सके।

4) व्यसनियों की पहचान, उपचार, शिक्षा, देखभाल, उनका पुनर्वास और समाज में उन्हें फिर से सम्मिलित करना।

5) इस अधिनियम के प्रावधानों को प्रभावकारी रूप में लागू करने से संबंधित ऐसे अन्य मामले।

धारा 4 : यह धारा केंद्र सरकार को मादक द्रव्य पदार्थों के विरुद्ध अधिकार देती है। (क) दुरुपयोग और (ख) स्वापक मादक द्रव्य तथा मनो–परिवर्तक पदार्थों पर रोक लगाना। इस धारा के अतंर्गत मार्च, 1986 में स्वापक नियंत्रण ब्यूरो की स्थापना की गई।

अधिनियम की धारा 5 के अंतर्गत केन्द्रीय सरकार ने स्वापक आयुक्त तथा इसी तरह के अन्य अधिकारीयों की नियुक्ति की है जो अफीम पोस्त की कृषि और अफीम के उत्पादन का निरिक्षण व निगरानी तथा इससे संबंधित कार्यों की देखभाल और उनका संचालन करते हैं।

इस अधिनियम की धारा 6 के अंतर्गत : केंद्र सरकार ने एक सलाहकार समिति स्थापित की है जिसे दि नारकोटिक ड्रग्स एंड साइकोट्रोपिक सब्सटांस कंस्लटेटिव कमेटी कहते हैं। यह समिति इस अधिनियम को लागू करने से संबंधित मामलों पर परामर्श देती है।

धारा 7 (ए) : केंद्र सरकार की तरह ही राज्य सरकारों को भी इस अधिनियम को लागू करने के लिए आवश्यकतानुसार अधिकार दिए गए हैं। यह अधिकारियों की नियुक्ति अधिकार देती है।

मादक द्रव्य दुरुपयोग को नियंत्रित करने के लिए राष्ट्रीय कोष

धारा 7 ए केंद्र सरकार को एक फंड स्थापित करने का अधिकार प्रदान करती है। इसे मादक द्रव्य दुरुपयोग नियंत्रक राष्ट्रीय फंड कहते हैं। इस फंड का प्रयोग मादक द्रव्यों के अवैध व्यापार को रोकने तथा स्वापक मादक द्रव्यों एवं मनो–परिवर्तक पदार्थों के दुरुपयोग पर नियंत्रण करने में खर्च किया जाता है। धारा 7 बी के अनुसार केन्द्रीय सरकार को वित्त पोषित गतिविधियों का वार्षिक हिसाब देना होता है।

निषेध, नियंत्रण एवं विनियमन

एन डी पी एस अधिनियम की धारा 8 निम्नांकित संचालन को प्रतिबंधित करती है। इसमें कहा गया है कि कोई भी व्यक्ति निम्नलिखित कार्यों को नहीं करेगाः किसी कोका पौधे की खेती नहीं करेगा या उसके किसी भाग को एकत्रित नहीं करेगा, या अफीम पोस्त या भांग की खेती नहीं करेगा, या स्वापक मादक द्रव्यों मनो–परिवर्तक द्रव्यों का उत्पादन, निर्माण अधिग्रहण, किसी विक्रय, क्रय, परिवहन भंडारण, प्रयोग, उपभोग, अन्तरराज्यों, आयात, निर्यात, भारत में आयात–निर्यात अथवा जहाज द्वारा भेजना आदि नहीं करेगा।

इसमें चिकित्सा या वैज्ञनिक उद्देश्य के लिए छूट दी गई है जो अनुमति के अनुसार किए जाएँगे। (इस प्रकार लाइसेंस, अनुमति या प्राधिकृत की शर्तों के अनुसार होगा)।

स्वामित्व या कब्जे के दो तत्व हैं: (क) भौतिक रूप से नियंत्रण अथवा भौतिक रूप से नियंत्रण करने की शक्ति रखना, तथा (ख) ज्ञान है कि अमुक वस्तु किसी के कब्जे में है या किसी भौतिक नियंत्रण में है। अतः भौतिक तत्व (कब्जा या नियंत्रण) इसी प्रकार मानसिक तत्व (प्रज्ञान) के सिद्ध होने पर इस धारा के अंतर्गत अपराधी को दण्डित किया जा सकता है।

बोध प्रश्न I

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) एन डी पी एस अधिनियम, 1985 के पहले क्या आप चार प्रमुख कमियों को सूचीबद्ध कर सकते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2) एन डी पी एस अधिनियम 1985 का क्षेत्र क्या है?

.....

.....

.....

.....

.....

4.4 महत्वपूर्ण धाराएँ, अपराध और सजाएँ

हम मौजूदा मादक द्रव्य कानूनों की प्रमुख कमियों का अध्ययन कर चुके हैं। आइए अब संशोधित एन डी पी एस अधिनियम 1989 की महत्वपूर्ण धाराओं, अपराधों और दण्डों के विषय की चर्चा करते हैं।

धारा 15 : पोस्त पौधे के अंगों से संबंधित अपराध करने पर दण्ड : जो व्यक्ति इस अधिनियम के प्रावधानों का, इसके नियमों या आदेशों का या स्वीकृत लाइसेंस के अंतर्गत मादक द्रव्यों के निर्माण, स्वामित्व, परिवहन, आयात–निर्यात (अंतर राज्यों में) क्रय, विक्रय, पोस्त त्रूण, प्रयोग या भंण्डारण, छुपाना या हटाना या पोस्त त्रूण भण्डारण का प्रयोग करना अथवा उनके भण्डारण सें संबंधित नियमों का उल्लंघन करने पर या कोई अन्य कार्य करना दण्डनीय होगा जिसमें कम से कम 10 वर्ष की कड़ी सजा दी जाएगी। इस कड़ी

सजा की अवधि 20 वर्ष की हो सकती है और साथ में जुर्माना जो एक लाख रुपये से कम न होगा तथा वह राशि दो लाख रुपये तक हो सकती है। न्यायालय दो लाख रूपये से अधिक भी जुर्माना कर सकता है। परंतु निर्णय में इस राशि को बढाने के कारणों का उल्लेख भी किया जाएगा।

धारा 16 : इस धारा में कोका पौधों और कोका पत्तियों के संबंध में नियमों का उल्लंघन करने पर दण्ड का प्रावधान है। इस की धारा के अंतर्गत नियम या आदेश या इस अधिनियम के अंतर्गत स्वीकृत किए गए लाइसेंस की सेवा शर्तों के उल्लंघन को दण्डनीय अपराध माना जाएगा। इस अधिनियम के अंतर्गत (i) कोका पौधों की खेती करना या किसी हिस्से को एकत्रित करना या (ii) कोका पत्तियों से संबंधित 8 कार्यों में से किसी एक के उल्लंघन पर भी दण्डनीय अपराध होगा।

धारा 17 : अफीम निर्माण करने से संबंधित कुछ कार्यों को करने पर दण्ड का प्रावधान है।

धारा 18 : अफीम पोस्त की कृषि कार्य करने से संबंधित अथवा अफीम से संबंधित किसी भी प्रकार का उल्लंघन करने पर या नियमों का पालन न करने पर दण्डित किया जाएगा।

धारा 19 : कृषक द्वारा अफीम का अपहार या गबन करने के संबंध में किसी भी प्रकार का उल्लंघन दण्डनीय अपराध है।

एन डी पी एस अधिनियम के अनुसार कृषक द्वारा पोस्त त्रूण, कोका पौधे तथा इसकी पत्तियों, अफीम का निर्माण, अफीम, पोस्त और अफीम का उपहार या उसको गबन करने के कार्य को या उल्लंघन को अत्यंन्त गंभीर माना गया है। सभी अपराधों के लिए 10 से 20 वर्ष की कड़ी कैद और एक से दो लाख या इससें भी अधिक जुर्माने के साथ दण्ड देने का प्रावधान है।

धारा 20 : भांग के पौधे और भांग से संबंधित किसी भी उल्लंघन के लिए इस अधिनियम की इस धारा में दंड का प्रावधान है इस अधिनियम के तहत दिए गए लाइसेंस के किसी भी नियम व शर्तों तथा आदेश के उल्लंघन दण्डनीय अपराध हैं। ये निम्न प्रकार है:

क) भांग की किसी भी प्रकार की कृषि करना या,

ख) भांग का उत्पादन, निर्माण, स्वामित्व, विक्रय, क्रय, परिवहन, अंतर्राज्यीय आयात–निर्यात या प्रयोग करना।

i) गांजा या भांग की कृषि करने से संबंधित किसी प्रकार के उल्लघंन के लिए कड़ी सजा का प्रावधान है। यह सजा वर्णित पूरी अवधि के साथ बढ़ा कर 5 वर्ष की और इससे अधिक हो सकती है जिसके साथ अर्थिक दंड जो 50 हजार रुपये भी दिया जा सकता है।

ii) गांजा के अतिरिक्त भांग की कृषि से संबंधित किसी भी नियम का उल्लंघन करने की स्थिति में कड़ी सजा दी जाएगी जिसकी अवधि 10 वर्ष से कम न होगी और यह 25 वर्ष तक बढ़ाई जा सकती है। इसके साथ ही कम से कम एक लाख रुपये जुर्माना हो सकता है, जो 2 लाख रुपये तक भी हो सकता है। न्यायालय यदि जुर्माना राशि बढ़ाना चाहे तो निर्णय में कारणों का उल्लेख करना होगा।

धारा 22 : मनो–परिवर्तक मादक द्रव्यों से संबंधित उल्लंघन के लिए दण्ड का **प्रावधान** : इसके अनुसार कोई भी इस अधिनियम के प्रावधानों या नियमों या आदेशों का अथवा स्वीकृत लाइसेंस की शर्तों का जिसे माद्क द्रव्यों के निर्माण, स्वामित्व, विक्रय, क्रय, परिवहन, अंतर्राज्यीय स्तर पर आयात–निर्यात के नियम हैं। इनमें से किसी नियम, आदेश व शर्तों का उल्लंघन करने पर कड़ी सजा दी जाएगी जो 10 वर्ष की अवधि से कम न होगी और यह सजा 20 वर्ष तक बढ़ाई जा सकती है इसके साथ ही न्यूनतम एक लाख रुपये के जुर्माने का प्रावधान है, जुर्माने की रशि दो लाख रुपये से अधिक भी की जा सकती है। न्यायालय अपने निर्णय में इसे बढ़ाने के कारणों का उल्लेख करेगा।

जहाँ तक 'मनो–परिवर्तन मादक द्रव्य' का अर्थ है यह नाम अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत किया गया नाम है। यह व्यापारिक नाम नहीं है। अधिनियम की सूची में अंतर्राष्ट्रीय नामों को सूचीबद्ध किया गया है।

धारा 23 : भारत से स्वापक मादक द्रव्यों और मनो–परिवर्तक पदार्थों के अवैध आयात–निर्यात या नौपरिवहन के किसी भी प्रकार के उल्लंघन करने पर इस अधिनियम के तहत बने नियम, आदेशों या इसके तहत स्वीकृत लाइसेंस की शर्तों के उल्लंघन करने पर तथा संबंधित किसी नियम–कानून के उल्लंघन पर 10 वर्ष की कड़ी सजा का प्रावधान है जो 20 वर्ष है तक की जा सकती है साथ ही न्यूनतम एक लाख रुपये का जुर्माना जो 2 लाख रुपये से भी अधिक किया जा सकता है। इसके साथ ही न्यायालय अपने निर्णय में सजा बढ़ाने के कारणों का उल्लेख करेगा।

धारा 25 : परिसर की अनुमति देने पर दण्ड के लिए प्रयुक्त धारा के अनुसार "जो कोई अपने स्वामित्व या कब्जे या नियंत्रण या प्रयोग में आने वाले घर, आवास, कक्ष, साथ में लगा स्थान, खाली स्थान, जगह, पशु या वाहन के प्रयोग की जान बूझ कर किसी व्यक्ति को अनुमति देता है तो यह इस अधिनियम का उल्लंघन माना जाएगा और दण्ड का भागीदार होगा। इसमें किसी भी प्रावधान के अंतर्गत 10 वर्ष की बड़ी सजा दी जा सकती है जिसकी अवधि 20 वर्ष तक बढ़ाई जा सकती है। साथ में न्यूनतम राशि का जुर्माना किया जाएगा जो एक लाख से कम न होगी। यह जुर्माना राशि 2 लाख रुपये तक की हो सकती है। न्यायालय अपने निर्णय में अपराध की गंभीरता के कारणों का उल्लेख करेगा।

धारा 29 : इस धारा के अंतर्गत द्रव्य तैयार करने में किसी प्रकार के अपराधिक षडयंत्र करना या उकसाना या किसी साक्ष्य को मिटाना जो इस अधिनियम के तहत आपराधिक कार्यकलाप माना जाता है, दण्डनीय है।

धारा 31: यह धारा पहले किए गए अपराधों में से कुछ अपराधों को पुनः करने से संबंधित है। इस संबंध में यह दण्ड को बढ़ाने का अधिकार प्रदान करती है। किसी भी भारतीय न्यायालय में पहले किए गए अपराध को पिछले कोर्ट में दी गई सजा का प्रमाण–पत्र सजा की प्रमाणित प्रति का सारांश, अपराधी ने जिस जेल में सजा काटी है उस जेल प्रभारी के हस्ताक्षरों से प्रमाणित प्रमाण–पत्र, तथा दी गई सजा के न भुगतने पर उससे संबंधित जारी वारंट प्रस्तुत करने पर सिद्ध किया जा सकता है। यह साक्ष्य उसी स्थिति में प्रस्तुत किए जाएँगे जब अपराधी ने दूसरी बार भी अपराध किया है और वह अपराध प्रमाणित हो गया है।

धारा 31 (क) : अधिनियम की इस धारा में एक बार अपराध करने और कुछ की पुनरावृति करने पर मृत्युदण्ड का प्रावधान है। इस धारा में कुछ अपराधों के लिए अनिवार्य मृत्युदंड का वर्णन है तो भी इसके अतिरिक्त इस दण्ड के संविधान के अनुच्छेद 14 और 21 के संदर्भ में संभावित विरोधाभास हैं। इसी तरह से भारतीय दण्ड संहिता की धारा 303 के समान किसी व्यक्ति की हत्या करने के संबंध में मृत्युदण्ड का प्रावधान है। परंतु इस धारा के तहत उम्र कैद का भी प्रावधान मौजूद है। यह ध्यान रहे कि भारतीय दण्ड संहिता की धारा 303 को पहले ही असंवैधानिक घोषित किया हुआ है। इसी तरह की विडम्बना धारा 31 (ए) के साथ भी हो सकती है। यह धारा भी अनौचित्य निवारण से संबद्ध है और दण्ड के विशिष्टीकारण को पूर्ण रूप से नकारती है। सजा के वैयक्तिक पक्ष को पूरी तरह नकारने के कारण अनुप्रयुक्त हो जाती है। क्योंकि यह न्यायालय को अपराधी के अपराध की गंभीरता को मापने से परहेज करती है।

बोध प्रश्न II

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) एन डी पी एस अधिनियम के अंतर्गत आने वाले चार अपराधों की सूची बनाइए।

.....

.....

.....

.....

.....

2) कुछ अपराधों के मृत्युदण्ड को प्रावधान धारा 23 (ए) में निहित है, इस धारा को स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

4.5 सारांश

इस इकाई में एन डी पी एस एक्ट के कानूनी प्रावधानों से आपको परिचित कराने का प्रयास किया गया है। एक्ट के प्रावधानों का अध्ययन करने के पश्चात् आप इसमें मादक

द्रव्यों के प्रयोग में की गई शब्दावली, उपलब्ध कुछ मादक द्रव्य तथा मादक द्रव्य व्यसनी, अवैध मादक द्रव्यों के नियमों का उल्लघंन करने वालों के लिए कठोर सजा से अवगत होंगे। इस विषय की गंभीरता इस प्रावधान से स्वयं स्पष्ट हो जाती है कि माद्क द्रव्यों से संबंधित अपराधियों के लिए मृत्युदण्ड भी निर्धारित किया गया है।

4.6 शब्दावली

व्यसनी (नशा करने वाला) : वह व्यक्ति जो लत के कारण माद्क द्रव्यों को दुरुपयोग करता है।

भांग : मारीजूना

अफीम : अफीम के पौधों या पोस्त से तैयार किए गए द्रव्य।

4.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

एन डी पी एस एक्ट (1985) की मूल प्रति

बक्सी, पी एम : *दि नारकोटिक ड्रग्स एंड साइकोट्रोपिक सब्स्टांस एक्ट*, 1985 तथा एन डी पी एस रूल्स (1985) (अन्य संबंधित अधिनियमों, नियमों के साथ इसी पुस्तक को आधार बनाकर इस इकाई का निर्माण किया गया)

4.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न I

1) i) संगठित गिराहों, तस्करों से निपटने के लिए दण्ड पर्याप्त नहीं थे।

   ii) कानून लागू करने एवं दण्ड दिलाने वाली एजेंसियों को सम्पूर्ण जाँच करने की शक्ति प्रदान नहीं की गई थी।

   iii) मौजूदा कानूनों में अंतर्राष्ट्रीय समझौतों के अनुसार प्रावधान शामिल नहीं थें।

   iv) व्यसन के नए मादक द्रव्य जैसे कि मनो–परिवर्तक मादक द्रव्यों से गंभीर भयानक स्थिति पैदा हो गई थी जिनकी रोकथाम के लिए उपयुक्त प्रावधान नहीं।

2) एन डी पी एस एक्ट में 83 धाराएँ तथा मनो–परिवर्तक मादक द्रव्यों की एक सूची शामिल की गई हैं। एक्ट के वास्तविक प्रावधानों में कुछ गतिविधियों पर प्रतिबंध नियंत्रण मथा विनियमों का संकलन किया गया है। अपराधों और दंडों से संबंधित प्रावधानों के द्वारा उन्हें और अधिक शक्तिशाली बनाया गया है।

बोध प्रश्न II

1) i) अफीम पोस्त की खेती करना कानूनी अपराध है।

ii) खेतीहारों या कृषकों द्वारा अफीम का गबन करना या उसे चोरी से पैदा करके अवैध व्यापारियों को बेचना।

iii) भारत से स्वापक मादक द्रव्यों या मनो–परिवर्तक मादक पदार्थों का निर्यात या आयात करना और जहाजों अथवा अन्य साधनों से लाना–ले जाना आदि।

iv) इस अधिनियम में प्रतिबंधित गतिविधियों से संचालन में स्थान, प्रयोग की अनुमति देना।

2) **धारा 31 (ए)** में कुछ अपराधों की पुनरावृत्ति करने पर मृत्युदण्ड का प्रावधान निहित किया गया हैं। इस अधिनियम के अंतर्गत कुछ अपराधों के लिए मृत्युदण्ड का प्रावधान है जो भारतीय संविधान के अनुच्छेद 14 और 15 के विपरित माना जा सकता है। यह भारतीय दण्ड संहिता की धारा 303 के अनुरूप ही है जिसमें हत्या के अपराधी को मृत्युदण्ड अथवा उम्र कैद देने का प्रावधान है। वैसे भारतीय दण्ड संहिता की धारा 303 को असैंविधानिक घोषित किया जा चुका है। यही प्रतिक्रिया इस अधिनियम की धारा 31 (ए) के संबंध में हो सकती है।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

इकाई 5 मादक द्रव्यों की माँग और आपूर्ति में कमी करना

इकाई की रूपरेखा

5.0 उद्देश्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 माद्क द्रव्य दुरुपयोग कौन करता है?

5.3 माद्क द्रव्य दुरुपयोग क्यों होता है?

5.4 माँग कम करने का मूलाधार

5.5 माँग कम करने के लिए कार्यनीतियाँ

5.6 आपूर्ति में कमी करना

5.7 सारांश

5.8 शब्दावली

5.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

5.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

5.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप जान सकेंगे:

- कुछ लोग क्यों और कैसे व्यसनी बनते हैं;
- माँग और आपूर्ति कम करने की प्रासंगिकता;
- बोर्ड के बाहर माद्क द्रव्यों के दुरुपयोग; और
- माँग कम करने संबंधी कार्यनीतियों की समीक्षा।

5.1 प्रस्तावना

इस तथ्य के संकेत मिले हैं कि मादक द्रव्यों की माँग में वृद्धि हुई है। शराब तथा मादक द्रव्य मानव जाति के लिए हानिकारक हैं। सरकार और अनेक संगठनों ने मादक द्रव्यों के दुरुपयोग के बुरे प्रभावों के संबंध में लोगों से चर्चा की है। सम्पूर्ण विश्व यह महसूस कर रहा है कि आज के युवा वर्ग के इस जाल में फंसने की बहुत जोखिम है। परंतु यह सब कुछ होते हुए भी दिन-ब-दिन मादक द्रव्यों की माँग में वृद्धि हो रही है। अत्यंन्त चौकसी के बावजूद अंतर्राष्ट्रीय मादक द्रव्यों का अवैध व्यापार तेज़ी से फल-फूल रहा है। प्रतिवर्ष शराब के उपयोग में तेज़ी से वृद्धि हो रही है। संकेत है कि मादक द्रव्यों की माँग में भी वृद्धि हो रही है। हम समाचार पत्रों में भारत के प्रत्येक क्षेत्र से मादक द्रव्यों के भंडारों के जब्त होने के बारे में पढ़ते रहते हैं। लगभग सभी राज्यों से शराब से प्रतिबंध हटाने के

बाद अब शराब भारत में एक कानूनी द्रव्य बन गया है और हम भारत के प्रत्येक छोटे गाँव में भी शराब की खुदरा दुकानें पाते हैं। इसके बावजूद भारत में गैर–कानूनी शराब और ताड़ी की बिक्री एक आम बात है। यह इस बात का संकेत है कि केवल माँग में ही वृद्धि नहीं हुई है अपितु उसकी आपूर्ति में भी भारी वृद्धि हुई है। इस अध्याय में हम उन तरीकों पर चर्चा करेंगे जिनसे माँग और आपूर्ति दोनों को ही कम किया जा सके। माँग और आपूर्ति कम करने सें संबंधित कुछ उपयुक्त प्रश्नों के उत्तर देने के लिए बहुत ही आवश्यक है कि कुछ लोग क्यों और कैसे मादक द्रव्यों के व्यसनी होने के बाद क्या होता हैं? दुरुपयोग का शिकार होते है, और माँग और आपूर्ति कम करने के कौन से मूलाधार है जैसे महत्वपूर्ण सवालों पर चर्चा की जाएगी। आइए हम इस अध्याय में मादक द्रव्यों के दुरुपयेाग का इस दृष्टिकोण के आाधार पर विश्लेषण करने का प्रयास करें। हमें विश्वास है कि इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आपको माद्क द्रव्य दुरुपयोग के बारे में सभी सूचनाएँ उपलब्ध होगी ताकि आप भी इनकी माँग और आपूर्ति को कम करने के लिए कार्य कर सकें।

5.2 मादक द्रव्य दुरुपयोग कौन करता है?

चूँकि हम माँग और आपूर्ति कम करने के संबंध में चर्चा कर रहे हैं इसलिए यह जानना अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि मादक द्रव्यों का व्यसनी कौन बन सकता है? यदि आप पूछे कि "कौन व्यक्ति व्यसनी बन सकता है" तो उत्तर होगा कि "कोई भी" यह उत्तर तर्क संगत है क्योंकि भविष्यवाणी नहीं की जा सकती कि कौन व्यक्ति व्यसनी हो सकता है। युवा लड़का या लड़की, अमीर अथवा गरीब, शहरी अथवा ग्रामीण, शिक्षित या निरक्षर व्यक्ति कोई भी व्यसनी हो सकता है। डॉ. के राजरतनम् ने शांता किंगस्टन की पुस्तक 'द ड्रग पेरिल' की अपनी भूमिका में ठीक ही लिखा है। "व्यसनी आर्थिक, धार्मिक तथा सैद्धांतिक बंधनों को तोड़ देता है तथा वह व्यक्ति एवं छोटे समुदायों के नियंत्रण के वश में नहीं होता"।

यद्यपि यह सत्य है कि कोई भी व्यक्ति व्यसनी बन सकता है फिर भी कुछ व्यक्ति मादक द्रव्यों का प्रयोग करने में प्रवृत्त होते हैं। यदि हम वास्तव में माँग में कमी करना चाहते हैं

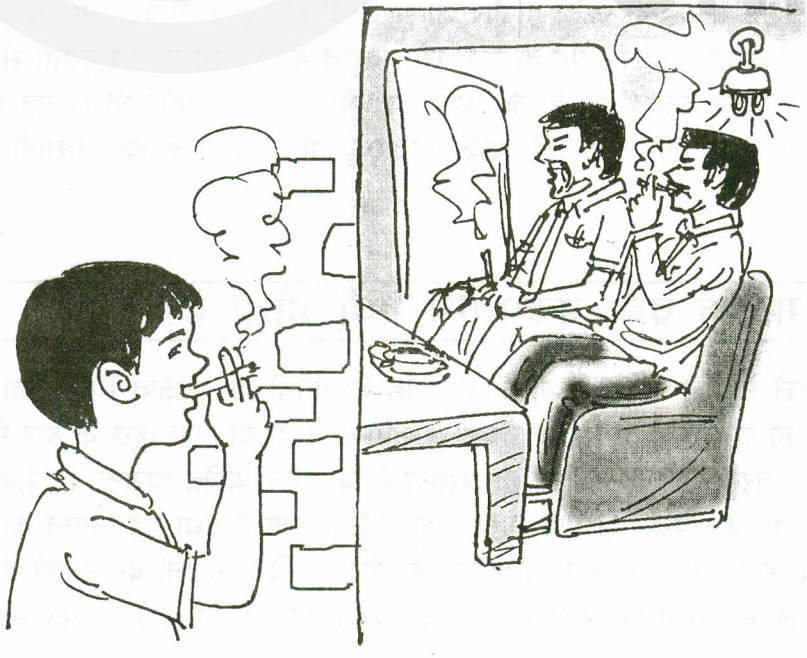

तो हमें इसकी रोकथाम के लिए 'इस उच्च जोखिम वाले समूह' पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता हैं। 'रोकथाम' के मुहावरे में कहा जाता है कि 'रोकथाम इलाज से बेहतर है'। यह मुहावरा मादक द्रव्यों के मामले में अधिक सार्थक है क्योंकि प्रायः अनेक मामलों में इलाज लगभग असंभव है। संभवतः अब आप यह पूछेंगे कि 'वे कौन लोग हैं जो उच्च जोखित वाले समूह से संबंधित हैं'? आइए अब हम इस पर चर्चा करें।

जिन बच्चों का जन्म व्यसनी परिवार में होता है, उनमें विभिन्न कारणों से मादक द्रव्यों के प्रयोग करने की प्रवृत्ति अधिक होती है। सबसे बड़ा कारण तो यह है कि वे जन्म से मादक द्रव्यों से परिचित होते हैं। वे अपने घर में व्यसनी द्वारा अपनाई गई भूमिका का अनुकरण करने की जिज्ञासा रखतें हैं। शराब अथवा माद्क द्रव्य उनको अपने ही घर–परिवार में आसानी सें उपलब्ध हो सकते हैं। इस बात की अधिक संभावना बनी रहती है कि वे अनुभव प्राप्त करने के लिए उनका प्रयोग कर सकते हैं। वे युवा लोग जो नए अनुभव प्राप्त करने के लिए जिज्ञासा रखते हैं वे आसानी से मादक द्रव्यों का प्रयोग करना आरंभ कर देते हैं, क्योंकि उनका विश्वास है कि मादक द्रव्य उन्हें एक गहन कलात्मक अनुभव प्रदान करेगा। वे अनुभव के नए संसार में पहुँच जाएँगे और वे स्वप्न संसार में जीने लगते हैं। यह बिल्कुल अजीब है कि जो युवा जीवन की चुनौतियों और माँगों को पूरा करने में असमर्थ रहते हैं, ऐसे युवा लोग अपनी चिंताओं से मुक्ति के लिए मादक द्रव्यों का दुरुपयोग करने लगते हैं। अहं को ठेस लगने वाले जिनमें स्वाभिमान की कमी वाले और अपने आप को छोटा समझने वाले या निकृष्ट मानने वाले मादक द्रव्यों का दुरुपयोग करना आरम्भ कर देते हैं। वे बच्चे जो परिवार से अलग सहते हैं अथवा उन्हें एकाकी रखा जाता है। विशेष कर वे बच्चे जिनके परिवार छिन्न–भिन्न हो गये हैं या टूट गए हैं, वे मादक द्रव्यों के विक्रेताओं के संभावित लक्ष्य बन जाते हैं। वे बच्चे जिनको माता–पिता से स्नेह या प्यार नहीं मिलता और न ही उनकी समुचित देखभाल होती है, वे बच्चे भी मादक द्रव्यों के संसार में प्रवेश कर जाते हैं। कुछ ऐसे युवा भी होते है जो अपने जीवन में रोमांच या नया कुछ करना चाहते है वे लोग भी आसानी से मादक द्रव्यों के लपेट में आ जाते हैं। क्या आपने कभी यह जानने का प्रयास किया है कि व्यसन गरीब आदमियों में सबसे अधिक क्यों व्याप्त है? गरीबी भी मादक द्रव्यों के दुरुपयोग का एक प्रमुख कारण है क्योंकि गरीब आदमी अपनी चिन्ताओं और दुखों को भूलने के लिए मादक द्रव्यों का सहारा लेता है। जो लोग कलाकार व प्रतिभाशाली होते हैं वे लोग जिन्हें मादक द्रव्य दवा के रूप में लेने के लिए सलाह दी जाती है और जो खिलाड़ी होते हैं वे भी प्रायः मादक द्रव्यों का प्रयोग करने लगते हैं। परंतु यह तो सभी लोग कहते हैं कि यदि व्यक्ति दृढ़ता से मादक द्रव्य लेने के लिए मना करता है फिर चाहे कुछ भी कारण हो, कोई भी हालात हो तथा कैसा भी वातावरण क्यों न हो, वह व्यक्ति मादक द्रव्यों से अपने आपको आसानी से बचा सकता है।

5.3 मादक द्रव्य दुरुपयोग क्यों होता है?

हमने पिछले भाग में मादक द्रव्यों के संभावित व्यसनियों का संक्षिप्त चित्रण का प्रयास किया है। हो सकता है आप सभी तथ्यों से सहमत न हों या आप कुछ के बारे में संदेह व्यक्त करें। परंतु यह कहना बहुत ही असंभव है कि कौन व्यक्ति व्यसनी बन सकता है। इन सभी पक्षों का पिछले अध्याय में विश्लेषण किया गया है तथा यह जानने का प्रयास किया गया है कि वे कौन लोग हो सकते हैं जो एक दिन व्यसनी बन सकते हैं। परंतु हमने पिछले अध्याय में जो व्यापक चर्चा की है यदि वह सच हो जाए तो फिर भी मादक

द्रव्यों की मांग को कम करने के उद्देश्य को आगे बढ़ाने से पहले हमें यह भी जान लेना चाहिए कि लोगों में मादक द्रव्यों को लेने की अभिलाषा क्यों होती है? यदि हम वास्तव में कुछ युवाओं को मादक द्रव्यों के सेवन से रोक सकते हैं तो हम मादक द्रव्यों की माँग को कम करने के लिए कुछ ठोस कार्य कर सकते हैं। अब हम इस प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास करेंगे कि 'लोग क्यों माद्क द्रव्यों का सहारा लेते हैं?'

लोग क्यों मादक द्रव्यों का प्रयोग करते हैं इसके अनेक कारण हैं। सबसे बड़ा कारण है मादक द्रव्यों की उपलब्धता। कानूनी और गैर कानूनी रूप से मादक द्रव्यों का उत्पादन और व्यापार किया जाता हैं मादक द्रव्य साबुन तथा टूथपेस्ट की तरह दुकानों पर आसानी से उपलब्ध होते हैं। समाज के विभिन्न आर्थिक स्तर के व्यक्तियों के लिए विभिन्न प्रकार के मादक द्रव्य उपलब्ध होते हैं। शराब उत्पादकों में भारी प्रतिस्पर्धा है इसलिए वे मीडिया के माध्यमों से विज्ञापन प्रसारित करते हैं। भारत में शराब की खुदरा दुकानों की संख्या बहुतायत में हैं, इसलिए कोई भी व्यक्ति आसानी से खुदरा दुकानों या मयखानों में जा सकता है और शराब पी सकता हैं। इसके अलावा यह धंधा बहुत ही लाभप्रद है, इसमें विक्रेता को 200 से 300 प्रतिशत लाभ आसानी से मिल जाता है। इसलिए आप देखते हैं कि मादक द्रव्यों के विक्रेताओं का गैर कानूनी जाल फैला हुआ है। मादक द्रव्य किसी भी स्थान पर, किसी भी समय, किसी भी व्यक्ति के पास आसानी से पहुँच सकता है और लोग आसानी से मादक द्रव्यों के व्यसनी बन जाते हैं।

मोहकता और मादक द्रव्यों के प्रभावों के संबंध में गलत धारणाओं के कारण लोग द्रव्यों का खुलकर प्रयोग करते हैं, इस प्रकार यह अलग कारण है। अनेक लोगों का विश्वास है कि शराब या मादक द्रव्यों के प्रयोग से सृजन कला में वृद्धि होती है। मादक द्रव्यों के बारे में बहुत सी कहानियाँ प्रचलित हैं कि कैसे मादक द्रव्यों से कल्पना व्यापक हो जाती है और व्यक्ति में कलात्मकता का उदय हो जाता है। अग्रेंज कवि एस. टी. कालीरज ने दावा किया है कि उसने अफीम के नशे की हालत में ही 'कुबला खान' कविता की रचना की है। यह भी एक धारणा है कि जब व्यक्ति नशें में होता है तो वह कठिन से कठिन काम भी कर लेता है। परंतु हमारा अनुभव है कि यह धारणाएँ नितांत आधारहीन हैं क्योंकि लोग बिना नशे के भी अच्छी कविताएँ कर लेते हैं। एक बूंद शराब के बिना भी कठिन से कठिन कार्य आसानी से कर लेते हैं।

इस इकाई में हम पहले ही बता चुके है कि परिवारों के अनेक सदस्य कुछ गलत तरीकों से अपनी भूमिका निभाते हैं। यह केवल परिवार तक ही सीमित नहीं है। अध्यापक, फिल्मी हस्तियाँ, धार्मिक नेता, खिलाड़ी तथा समाज में प्रतिष्ठित व्यक्ति भी युवाओं को अपने गलत आदर्शों से भ्रमित कर सकते हैं। यदि हम वास्तव में मादक द्रव्यों की माँग को कम करना चाहते हैं तो जो समाज के जिम्मेदार लोग हैं उन्हें वास्तव में ही एक अच्छी और निष्पक्ष भूमिका निभानी चाहिए।

अनेक व्यक्ति मादक द्रव्यों का प्रयोग इस लिए करते हैं कि वे विश्वास करते हैं कि नशा करने से वे अपनी चिंताओं और समस्याओं से मुक्ति पा लेते हैं। जैसे कि हम इस इकाई में बता चुके हैं कि व्यक्तिगत समस्या जैसे हीनभावना और आत्मविश्वास के अभाव की भावना से ग्रसित अनेक लोग माद्क द्रव्यों को ही इसका उपाय मान लेते हैं। निराश और चिंतित व्यक्ति प्रायः विश्वास कर लेते हैं कि माद्क द्रव्य चिंताओं से मुक्ति दिलाने और दुखों व पीड़ाओं से बचाकर काल्पनिक दुनिया में ले जाने में सक्षम हैं। परंतु यह एक दम आधारहीन कल्पना है। क्योंकि जब व्यक्ति नशें में होता है तो किसी व्यक्ति अथवा घटना को उसके विपरीत व उसके बारे में और अधिक सोचता है।

हमें ध्यान रखना चाहिए कि कोई भी व्यक्ति मादक द्रव्यों की खोज के लिए अकेला नहीं निकलता है व्यक्ति को नशें के जाल में डालने वाला कोई सगे संबंधी, मित्र या विद्यार्थी मित्र होगा। इसे हम छिपा हुआ दवाब (पीर प्रेसर) के नाम से जानते हैं। साथ रहने वाला साथी, सहपाठी, सहकर्मी या मित्र अथवा रिश्तेदार आपको 'आमोद–प्रमोद' की कहानी सुनाएगा और वह माद्क द्रव्य सेवन के लिए लुभाएगा। यह आपको किसी पार्टी में शामिल होने के लिए आमंत्रित करने के रूप में हो सकता है जहाँ पर अत्यधिक खुशामद उसे अपना साथी बनाने और एक बार अजमाने में सफल हो जाते हैं। हमारे अनेक युवा साथी केवल कम्पनी देने की उत्सुकता में आकर मादक द्रव्य का प्रयोग करना आरंभ कर देते हैं। क्या आप जानते हैं कि 'कुतूहल या जिज्ञासा ने बिल्ली को मारा'? मादक द्रव्यों के प्रयोग करने वालों से अनेक रोमांचकारी कहानियाँ सुनने से हमारे युवा लोग जिज्ञासा तथा अनजान होने से मादक द्रव्यों की दुनिया में झोंकने के लिए इस चक्कर में फंस जाते हैं। प्रायः इस तरह का प्रयोग हमारे युवा साथियों को बहुत ही मंहगा पड़ता है।

हमारे जनसंचार माध्यम भी असहाय युवकों के जीवन को नष्ट कर देता है। प्रायः जनसंचार के साधन शराब और मादक द्रव्यों की भव्यता को इस प्रकार प्रदर्शित करता है कि युवक आसानी से गुमराह हो जाते हैं। हमारे फिल्मी पर्दे के अनेक नायको को हमारे नवयुवक आदर्श मान लेते हैं और पर्दे पर शराब का सेवन करते हुए देखते हैं। फिल्मों में सफलता और संपन्नता को इस प्रकार दिखाया जाता है जैसे यह उसके व्यक्तिगत जीवन में प्राप्त हुआ हो। स्वाभाविक है कि इस तरह के फिल्मी प्रदर्शन हमारे युवकों के लिए गलत संदेश देते हैं इससे युवक भ्रमित होते हैं। गलती से वे यह मान बैठते हैं कि शराब और मादक द्रव्य प्रभावशाली जीवन और प्रतिष्ठित व्यक्तितत्व के अभिन्न अंग हैं। वास्तव में मादक द्रव्यों के प्रयोग को इस प्रकार प्रदर्शित किया जाता है मानों के भव्य मोहक जीवन के अंग हों।

उपर्युक्त दिए गए कारण ही सम्पूर्ण नहीं हैं। यदि हम वास्तव में मादक द्रव्यों की माँग को कम करने के लिए संघर्ष करना चाहते हैं तो हमें इन सबके विषय में जानकारी रखनी चाहिए।

अब आप मुकेश की कहानी को ध्यान से पढ़ें और नीचे दि गए प्रश्नों का उत्तर दें। हो सकता है आपके जीवन में भी कभी मुकेश जैसे किसी व्यक्ति से वास्ता पड़े।

मुकेश

मुकेश 17 वर्ष का प्रतिष्ठित परिवार से संबंधित एक अच्छा लड़का है। उसे विद्यालय से निकाल दिया गया और वह अब मानसिक वार्ड में मादक द्रव्य की समस्या के कारण भर्ती है। उसका पहला अनुभव थोड़ी सी मात्रा में शराब पीना था। जो उसके पिता छोड़ कर सोने को लिए चले गये थे। उसकी माँ सुषमा कहती है कि "मेरा पुत्र 13 वर्ष की आयु तक अपनी कक्षा में प्रथम रहता था। पंरतु धीरे–धीरे उसने पढ़ाई में रुचि लेना छोड़ दिया। जब वह 10वीं कक्षा में था अपने सहपाठी जैकब को गांजा देते हुए पकड़ा गया था जिससे उसे विद्यालय से निकाल दिया गया था। मेरा पुत्र अमीर बनने के बड़े–बड़े सपने लेता था। हमें उससे बहुत आशाएँ थी। परंतु एक ही झटके में सब कुछ नष्ट हो गया जब हमें यह पता लगा कि उसे मादक द्रव्य की समस्या है तो उसने अनेक प्रकार से अपने बचाव में तर्क दिए। उसने हम पर भी यह दोष लगाया कि हम उससे प्यार नहीं करते। जब हमने उससे प्यार से कहा कि वह इस लत को त्याग दे तो उसने कहा कि मेरा संसार बहुत विशाल है, मुझे आप व्यर्थ में तंग न करें। पिछले वर्ष मेरे पति का देहांत हो चुका है। यह मामला भी अधिक शराब पीकर गाड़ी चलाने से हुई दुर्घटना का है। अब केवल मुकेश ही मेरी आशा है।"

उपर्युक्त कहानी पढ़ने के पश्चात् आप निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास करें।

1) मुकेश के शराब पीने का पहला अनुभव क्या था?

2.) उसे शराब की दुनिया में ले जाने के लिए आपके विचार से कौन जिम्मेदार है?

3) उसकी इस लत के लिए क्या उसकी माँ पर दोषारोपण किया जा सकता है?

4) क्या मुकेश ने किसी और पर भी शराब की लत लगाने के लिए प्रयास किए?

5) यदि आप माँग को कम करने के लिए प्रभावकारी कदम उठाना चाहते हैं। आप क्या करेंगे यदि आप (क) मुकेश के पिता, (ख) मुकेश की माँ, (ग) मुकेश के मुख अध्यापक तथा (घ) जैकब के पिता होते।

बोध प्रश्न I

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) यह कहा जाता है कि कुछ लोगों में माद्क द्रव्यों के अनुभवों को प्राप्त करने की अधिक संभावनाएँ बनी होती हैं। वे कौन होते है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) "व्यसन आर्थिक, धार्मिक और सैद्धांतिक बंधनों को तोड़ देता है" क्या आप इस कथन से सहमत हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

3) क्या कोई व्यक्ति यह घोषित कर सकता है कि भविष्य में कौन व्यसनी बनेगा? क्यों और क्यों नहीं?

.....

.....

.....

.....

.....

4) वे कौन से घटक हैं जो युवाओं को माद्क द्रव्यों की और आकर्षित करते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

5) क्या आप इस विचार से सहमत है कि हमारा मीडिया शराब और मादक द्रव्यों को भव्य मोहक अंदाज में प्रस्तुत करता है?

.....

.....

.....

.....

.....

5.4 माँग कम करने का मूलाधार

कैसे और क्यों एक व्यक्ति मादक द्रव्यों के जाल में फँसता है, हमने इस संबंध में गंभीर विचार किया है। हमने इस प्रश्न पर चर्चा की है "कौन व्यक्ति बन सकता है?" मुकेश की कहानी भी बहुत दुखभरी है। कितना सुंदर जीवन अल्प आयु में नष्ट हो गया। यह घटना किसी भी परिवार में घट सकती है। क्या आपको इकाई में पहले बताया गया वाक्य याद है कि "व्यसन आर्थिक, धार्मिक तथा नैतिक बाधाओं को पार कर जाता है?" मादक द्रव्य दुरुपयोग से संघर्ष में इसलिए हमारा सबसे पहला कदम यह होना चाहिए कि नवयुवकों को इनसे दूर रखा जाए। हमें इस तथ्य पर अडिग रहना चाहिए कि "इलाज से बेहतर रोग की रोकथाम होती है।" हमारा कर्त्तव्य है कि हम द्रव्यों की माँग को कम करने के लिए भरसक प्रयास करें।

यद्यपि हम में से अनेक लोग ये जानते हैं कि मादक द्रव्यों का व्यसन अच्छा नहीं होता है। किंतु हम यह बताने में असमर्थ हैं कि प्रयोग किए जाने वाले रसायन से वास्तव में क्या बुरे प्रभाव पड़ते हैं? यदि हम लोगों को यह बताते हैं कि व्यसन से व्यक्ति मादक द्रव्यों पर निर्भर हो जाता हैं तो हम आसानी से माँग कम करने का कार्य कर सकते हैं। इसलिए इस भाग में हम मुख्य रूप से मादक द्रव्यों के बुरे प्रभावों के संबंध में जानकारी प्राप्त करेंगे कि इसके व्यक्ति, परिवार, समाज तथा राष्ट्र पर क्या बुरे प्रभाव होते हैं।

व्यसन किसी भी व्यक्ति के दोनों–शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को नष्ट कर देता है। व्यसन से स्वास्थ्य की अनेक स्मास्याएँ पैदा हो जाती हैं। कुछ अतिघातक मादक द्रव्यों से चक्कर आना कंपकपी पैदा होना, भूख न लगना, नाड़ी की गति धीमी होना इत्यादि आम लक्षण हैं और मादक द्रव्यों की अधिक मात्रा ले लेने से हृदय गति रुक सकती है और श्वास बंद हो सकता है। गाँजा पीने से श्वास की बीमारियाँ होती हैं यहाँ तक कि

फेफड़े का कैंसर जैसा भयंकर रोग भी हो सकता है। शराब सेवन से पेट के अनेक रोग होते हैं, इससे व्यसनी की भोजन पचाने की शक्ति नष्ट हो जाती है और जिगर में सूजन रोग पैदा हो जाता है। माद्क द्रव्यों को साझा प्रयोग में लाई गई सुई के परिणामस्वरूप एड्स और यकृतशोध (हैपेटाइटस) जैसे भयंकर रोग फैल जाते हैं। मादक द्रव्य हमारे शरीर की तंत्रिका व्यवस्था को नष्ट कर देते हैं और अंत में मानसिक रोग हो जाते हैं।

प्रायः व्यसनी में शर्म, लज्जा और गलती जैसी भावनाएँ व्याप्त होती हैं इससे उसका सम्पूर्ण व्यक्तित्व ही नष्ट हो जाता है। व्यसनी में अनेक बुराइयाँ पैदा हो जाती हैं जैसे कि वह अनुपस्थित रहेगा, उस पर निर्भर नहीं रहा जा सकता है, पक्का अविश्वासी एवं चिथड़ों में लिपटे रहना उसकी विशेषताएँ हो जाती है। व्यसनी निर्बाध रूप से व्यसन की ओर बढ़ता जाता है तथा मादक द्रव्यों की पूर्ति को सुनिश्चित करने के लिए अनेक उपाय करता है।

व्यसनी भीख माँग सकता है, उधार लेता है और चोरी कर सकता है। कहने का तात्पर्य यह है कि वह कोई भी अनैतिक कार्य करने के लिए तैयार करता है बशर्ते उसकी द्रव्य माँग पूरी होती रहे। वह अविश्वासी होता है साथ ही व्यसनियों के कारण ही औद्योगिक और सड़क दुर्घटनाएँ होती है।

व्यसन का परिवार पर प्रभाव पड़ता है। भारतीय स्थिति में परिवार में महिला ही सबसे अधिक पीड़ित होती हैं। प्रायः व्यसनी अपने दोषों को महिला पर डालता है व्यसन के लिए उसे ही वह दोषी मानता है। धन के लिए महिला को ही सताया जाता है और जब व्यसनी व्यक्ति प्रतिरोध करने अथवा उसे तंग करने के योग्य नहीं रहता है और न ही वह काम करने लायक रहता है ऐसी स्थिति में महिला ही पिता और माता की दोहरी भूमिका निभाती है। भारतीय पुरुष प्रधान समाज में उसे और अधिक सताया जाता है। अधिकतर घरेलू हिंसा के लिए व्यसनी पुरुष जिम्मेदार होता है। रसायनों पर निर्भरता से व्यक्ति का यौन जीवन भी प्रभावित होता है। शराबी व्यक्ति मद्य संभ्रांति रोग हो जाता है, इस तरह के व्यक्ति अपनी पत्नियों की वफादारी के प्रति शंकालु हो जाते हैं। व्यसनी परिवार के बच्चों को उनके माता–पिता से समुचित स्नेह और देखभाल प्राप्त नहीं होती और उनमें आत्मविश्वास कम हो जाता है। परिवार में बड़े व्यसनी आदर्श प्रस्तुत करते हैं जिसके कारण बच्चे भ्रमित हो जाते हैं।

व्यसन विभिन्न अपराधों और दुर्घटनाओं के लिए जिम्मेदार होता है। लड़कियों से छेड़छाड़ से लेकर बलात्कार, जेब काटने, बैंक डैकेतियों, गली के झगड़ों, योजनाबद्ध नृशंस हत्याएँ और व्यापक जनसंहार के पीछे व्यसन की अहम भूमिका होती है। समाज व्यसन के परिणामस्वरूप काम को समय, क्षमता, प्रतिभा और मानव शक्ति की बहुत बड़ी हानि उठता है। हम सब जानते हैं कि मादक द्रव्यों के अवैध व्यापार, वेश्यावृत्ति, अवैध शराब का धंधा और व्यापार समाज में अनेक समस्याएँ पैदा करते हैं। हम यह भी भलीभाँति जानते हैं कि व्यसनी और इसको प्रोत्साहित करने वाले लोग समाज को असुरक्षित कर देते हैं। हमारे समाज में मादक द्रव्यों के दुरुपयोग करने वालों के कारण त्यौहारों, धार्मिक कार्यों और अन्य आयोजनों में व्यवधानों का अनुभव करते हैं।

व्यसन के कारण राष्ट्र भी नुकसान उठता है। अंतर्राष्ट्रीय मादक द्रव्यों के अवैध व्यापार की तस्करी, अवैध हथियारों का व्यापार, आतंकवाद, विद्रोह तथा इसी प्रकार के अन्य राष्ट्र विरोधी गतिविधियों के साथ सीधा संबंध होता है। कुछ मादक द्रव्यों के अवैध व्यापारी इतने शक्तिशाली होते हैं कि वे किसी भी मौजूदा सरकार को गिरा सकते हैं। अनेक अविकसित

देश मादक द्रव्यों के कारण पैदा हुई स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं सहित विभिन्न समस्याओं को असमर्थ दर्शक की भाँति निहारते रहते हैं। ऐसे देश साधनों की कमी के कारण स्वास्थ्य देशभाल और कल्याणकारी कार्यों के लिए बेहद असमर्थ होते हैं। तीसरी दुनिया के देशो में रसायनों पर इतना धन व्यय हो जाता है। यदि उस धन को विकास कार्यों में लगा दिया जाए तो एक बहुत बड़ी उपलब्धि हो सकती है तथा अनेक कार्यक्रमों को आसानी से चलाया जा सकता है।

उपर्युक्त कारणों को देखते हुए यह स्पष्ट होता है कि समाज में संतुलन बनाए रखने के लिए मादक द्रव्यों की माँग को कम करना बहुत ही आवश्यक है। भारत जैसे देश के लिए यह संभव नहीं है कि वह व्यसन पर इतनी बड़ी धनराशि को व्यर्थ में ही नष्ट होने दे और मादक द्रव्यों के व्यसन के कारण देश की बहुत बड़ी मानव शक्ति को नष्ट हो जाने दे। जब हम अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार में मादक द्रव्यों की माँग या खपत के बारे में सोचते हैं तो पता लगता है कि यह बहुत खतरनाक स्तर पर है। इसलिए किसी भी रासायनिक निर्भरता के विरूद्ध सार्थक और प्रभावी संघर्ष के लिए हम सबकों संगठित होकर कार्य करना चाहिए। साथ ही माँग को कम करना हमारा पहला कर्त्तव्य होना नितांत आवश्यक है। हम पहले भी इसी भाग में कह चुके हैं कि मादक द्रव्यों से दूर रहने के लिए युवाओं को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए और इसके ठोस नतीजे प्राप्त करने के लिए हमें कुछ कार्यनीतियों की योजना बनानी चाहिए।

5.5 माँग कम करने के लिए कार्यनीतियाँ

हमने पिछले भाग में जो कुछ पढ़ा है, इससे यह सिद्ध होता है कि रासायनिक निर्भरता के विरुद्ध सार्थक व प्रभावी संघर्ष के लिए माँग कम करने के लिए कुछ सक्षम, प्रासंगिक तथा व्यावहारिक कार्यनीतियाँ बनानी होंगी। इसके साथ ही यह भी स्पष्ट है कि हमें अपने युवा लोगों को यह सिखाना है कि वे मादक द्रव्यों के प्रयोग के लिए इनकार कर सकें। इसलिए प्रत्येक स्तर पर माँग को नियंत्रित करने के लिए हमें कुछ योजनाएं बनानी

पड़ेंगी। कार्यनीति को आदर्श कार्यनीति के रूप में बनाना आसान नहीं है जो सम्पूर्ण संसार के लिए लाभकारी हो। परंतु हम कुछ अच्छी कार्यनीतियों के सुझाव अवश्य दे सकते हैं जिनमें से समाज अपने लिए अधिकतम उपयोगी नीतियों को चुन सकता है। जब हम द्रव्यों की माँग को कम करने का प्रयास करेंगे उस समय हमें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। उदाहरण के लिए सामाजिक और सांस्कृतिक व्यवहारों का एक हिस्सा बनी (शराब या भांग, देवकली) को रोकने की अथवा इन पर पाबंदी लगाने की बात करेंगे तो लोग इस माँग को कम करने वालों के विरूद्ध खड़े हो जाएँगे। कुछ समाजों में शराब विक्रेता समूह इतने शक्तिशाली हैं कि शराब की माँग कम करने वालों के विरूद्ध वे जान–माल को खत्म करने के प्रयास कर सकते हैं। पंरतु हम पिछले अध्ययनों से यह तो समझ ही गए हैं कि मादक द्रव्यों की माँग कम करने का कार्य तब तक पूरा नहीं हो सकता है जब तक हम इस पर पांबदी लगाने के लिए सुनियोजित कार्यनीतियों का निर्माण न कर लें। इसलिए हम इस भाग में मादक द्रव्यों की माँग कम करने संबंधी कार्यनीतियों पर चर्चा करेंगें।

क्या आपने कभी पतंगे देखे हैं जो दीपक की रोशनी के लिए लौ की और आकर्षित होकर उसके पास जाते हैं और अंत में दीपक या मोमबत्ती की लौ उन्हें समाप्त कर देती है। हम अनेक युवाओं की तुलना इन्हीं पतंगों की किस्मत से कर सकते हैं। अनेक युवा मादक द्रव्यों के परिणाम की भयंकरता से परिचित न होने के कारण मादक द्रव्यों की ओर आकर्षित होते हैं। चाहे यह मादक द्रव्य शराब, गांजा अथवा ब्राउन शुगर हो। इसलिए हमें अपनी युवा पीढ़ी को माद्क द्रव्यों के प्रयोग करने से रोकने का अथक प्रयास करना आवश्यक है। इस संबंध में हमारा सबसे पहला कदम अपने मीडिया और विज्ञापनों के विरुद्ध युद्ध छेड़ना होगा तो अपने माध्यमों से नशीले पदार्थों को चमत्कारिक, महिमामई और आकर्षण को मोहक रूप में प्रस्तुत करते हैं। हमारे मीडियों को चाहिए कि वह मादक द्रव्यों को रोकने के संदेश को प्रचारित करें। शैक्षिक संस्थाओं और युवा संगठनों को मादक द्रव्यों के विरूद्ध अभियान चलाने चाहिए ताकि युवाओं को मादक द्रव्यों की बुराइयों का ज्ञान हो जाए और व्यसन से दूर रहें। हमारी पाठय पुस्तकों में मादक द्रव्यों पर सामग्री शामिल की जानी चाहिए। स्वैच्छिक निकायों, सेवा संगठनों तथा गैर सरकारी संगठनों द्वारा आम जनता के बीच इसकी रोकथाम के संदेश को प्रसारित करने में अहम भूमिका निभानी चाहिए।

परंतु क्या केवल इतना भर कर देने से माँग कम करने का कार्य पूरा हो जाएगा? बहुत सारे ऐसे लोग हैं जो मादक द्रव्यों की निर्भरता अथवा उसके व्यसन को त्यागना चाहते हैं। परंतु उन्हें ऐसा कोई सक्षम व्यक्ति नहीं मिलता है जो उनकी सहायता कर सके। व्यसन एक रोग है और स्वाभविक व्यसनी रोगी है वह स्वयं इस रोग से छुटकारा नहीं पा सकता है। वह अपने व्यसन की लत को छोड़ने में नितांत असमर्थ होता है। अन्य रोगियों के समान उसे भी चिकित्सक, परामर्शक तथा इलाज की आवश्यकता होती है जिससे वह निरोग हो जाए। हमारी सरकार, स्वैच्छिक निकायों, सेवा संगठनों और गैर–सरकारी संगठनों को व्यसन पीड़ितों की सहायता के लिए आगे आना चाहिए। चिकित्सक, मनोवैज्ञनिक, परामर्शक और इलाज की सुविधाएँ व्यसन रोगी को उपलब्ध होनी चाहिए।

इसके अलावा माँग को कम करने में सख्त कानून भी सहायता करते हैं। यदि कानूनों को सख्ती से लागू किया जाए तो अच्छे परिणाम निकल सकते हैं जैसे कि मलेशिया और सिंगापुर में हुआ। कानूनों को लागू करने वाली संस्थाओं को प्रभावशाली एवं सख्ती से कानूनों को लागू करना चाहिए जिससे इस समस्या का निवारण हो सके।

बोध प्रश्न II

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) युवको को माद्क द्रव्यों से दूर रखने का निर्णय माद्क द्रव्य दुरुपयोग के विरुद्ध संघर्ष प्रथम उपाय क्यों माना जाता है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) किस प्रकार से मादक द्रव्य व्यक्ति को प्रभावित करते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

3) यह बताएँ कि मादक द्रव्य दुरुपयोग से परिवार किस प्रकार प्रभावित होता है?

.....

.....

.....

.....

.....

4) मादक द्रव्य दुरुपयोग से समाज और राष्ट्र किस प्रकार प्रभावित होते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

5) कुछ ऐसे उपाय सुझाएं जिनसे हम मादक द्रव्यों की माँग को कम कर सकते हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

6) मादक द्रव्य दुरुपयोग पर लागू करने के लिए क्या आप कहावत से सहमत है कि "इलाज से परहेज बेहतर" होता है।

.....

.....

.....

.....

.....

5.6 आपूर्ति में कमी करना

हमने पिछले भाग में चर्चा की है कि युवकों को किस प्रकार से मादक द्रव्यों से दूर रखा जाए। हम सहमत हैं कि हमें युवाओं को द्रव्यों से दूर रखने के लिए उन्हें शिक्षित किया जाना चहिए। इसका परिणाम अपने आप में ही माँग में कमी होगी। परंतु हम इस अध्याय में मादक द्रव्य दुरुपयोग को कम करने के लिए एक दूसरा ही दृष्टिकोण प्रस्तुत कर रहे हैं क्या आपको याद है, हमने भाग 5.3 में यह बताया था कि मादक द्रव्यों की आसानी से उपलब्धता ही इसको बढ़ावा देने में सहयोग देती है क्योंकि यह साबुन और टुथपेस्ट की तरह सरलता से उपलब्ध हो जाते हैं? अब इस भाग में उन तरीकों को बताने जा रहे हैं जिससे मादक द्रव्यों की उपलब्धता पर नियंत्रण लगाया जा सके। जिसका अर्थ है आपूर्ति में कमी का जिसका अभिप्राय है मादक द्रव्यों को लोगों से दूर रखना।

भारत में शराब लगभग सभी राज्यों में कानूनी माद्क द्रव्य है। यह एक वस्तु है जो खुले बाज़ार में उपलब्ध है। शराब के विभिन्न उत्पादकों में विभिन्न प्रकार के आई एम एफ एल निर्माण में भारी प्रतिस्पर्धा है। शराब की ये कम्पनियाँ अपनी शराब को बेचने के लिए मीडिया के माध्यम से विज्ञापन करती हैं तथा बिक्री बढ़ाने के लिए कड़ी स्पर्धा करती हैं। परंतु गैर कानूनी शराब भी आपको किसी भी जगह उपलब्ध हो जाएगी। जैसे कि हमने पहले बताया है कि भारत में गैर कानूनी शराब बनाना एक बहुत ही लाभकारी घरेलू उद्योग है। भारत में अत्यधिक गहन मादक द्रव्य भी आसानी से उपलब्ध हैं। चरस या गाँजा यद्यपि गैर कानूनी हैं किंतु देश के अनेक हिस्सों में इनकी जमकर खेतीबाड़ी होती हैं। बहुत दुख का विषय है कि बिना किसी रोकथाम के ये खुदरा बाज़ार में आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं साथ ही ये पैकेटों में बंद सस्ते दामों में मिलते हैं। हमारे देश में मादक द्रव्य के प्रयोग की सलाह देने वाले भी सामान्य रूप से मौजूद हैं। बहुत ही नशीले और

महँगे मादक द्रव्य जैसे अफीम और कोक कृषिक रूप भी भारतीय बाज़ारों में उपलब्ध हैं। इन गैर कानूनी द्रव्यों की विशाल आपूर्ति होती है तथा ये हमारे युवाओं तक आसानी से पहुँच जाते हैं। एक समय था जब अत्यधिक माद्क द्रव्य केवल महानगरों में ही उपलब्ध होते थे। परंतु देश के विभिन्न भागों से इसके जब्त होने के समाचारों को पढ़ने से प्रमाण मिलता है कि ये देश के प्रत्येक हिस्से में उपलब्ध हैं।

हम खंड 1 की इकाई 4 में मादक द्रव्यों के अंतर्राष्ट्रीय अवैध व्यापार के संबंध में अध्ययन क़र चुके हैं। यह सर्वविदित है कि माद्क द्रव्यों का अंतर्राष्ट्रीय व्यापार गोला बारूद और हथियारों के व्यापार के बाद दूसरे स्थान पर है। उस इकाई में हम यह भी बता चुकें हैं कि भारत मादक द्रव्यों का एक माध्यम (पारगमन) बिंदु है जहाँ से गैर-कानूनी व्यापार का संचालन होता है। क्योंकि भारत गोल्डन क्रिसेंट और गोल्डन ट्रिंगल देशों के बीच स्थित है। हम समाचार-पत्रों में भी अन्तर्राष्ट्रीय मादक द्रव्यों के अवैध व्यापार, मादक द्रव्यों के गैर-कानूनी व्यापार संघ और ड्रंग्स माफियों के संबंध में पढ़ते रहते है। यह हो सकता है कि मध्य पूर्व के कुछ देशों को छोड़ कर विश्व के सभी देशों में अतिसंवेदनशील मादक द्रव्य आसानी से मिलते हैं।

हम किस प्रकार इस आपूर्ति को रोक सकते हैं? क्या आपूर्ति में कमी का कुछ लाभ होगा? यदि आपूर्ति कम की जानी है तो यह देखना होगा कि इसमें किन लोगों को शामिल किया जाए? भारत में जहाँ तक शराब का संबंध है, इसकी आपूर्ति सरकार द्वारा की जाती है। इस तरह से हम आपूर्ति कम करने के लिए क्या कर सकते हैं? क्या यह आसान काम है कि अंतर्राष्ट्रीय गैर कानूनी मादक द्रव्य व्यापार पर रोक लगाई जाए? गैर-कानूनी मादक द्रव्य के व्यापार बहुत ही शक्तिशाली और सुसंगठित है क्या यह संभव है कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उनकी आपूर्ति में हम कुछ कमी कर सकें। शराब के उत्पादन और व्यापार में अनेक बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ जुड़ी हुई हैं क्या इनकी आपूर्ति पर रोक प्रभावशाली लगाई जा सकती है? हमारे समक्ष ऐसे अनेक प्रासंगिक प्रश्न मौजूद हैं। जब हम इन प्रश्नों पर विचार करते है तो कुछ लोग निराश और निंदक हो जाते हैं। परंतु हमें यह तो ध्यान रखना ही पड़ेगा कि जब तक हम आपूर्ति में कमी नहीं करेगें तब तक मादक द्रव्य दुरुपयोग के विरुद्ध प्रभावी संघर्ष नहीं कर सकते।

श्री जोनाथन् जी. द्वारा संपादित पुस्कत 'ब्रिथ ऑफ लाइफ' में उन्होने 6 तरीके बताएं है जिनके द्वारा माद्क द्रव्यों को युवाओं से दूर रखा जा सकता है (ब्रिथ ऑफ लाइफ : 1999) ये है:

1) इस क्षेत्र में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग को फिर से सशक्त बनाने के लिए प्रयास किए जाने चाहिए।

2) इसकी रोकथाम क्षेत्र में लगे विभिन्न सरकारी विभागों के बीच आपसी समझ, सहायता और सहयोग को सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

3) पुलिस की सतर्कता को विशेष कर विद्यालयों के आसपास बढ़ाया जाना चाहिए ताकि मादक द्रव्य विक्रेताओं द्वारा स्कूली बच्चों की अज्ञानता और असुरक्षा का लाभ उठाने से रोका जा सके।

4) कानून तोड़नें वालों का सजाएँ लगातार और तेजी से दी जानी चाहिए।

5) ऐसे अपराधों के संबंध में जो सज़ा या दण्ड निश्चित किए गए हैं उनके बारे में व्यापक जानकारी दी जानी चाहिए ताकि इस तरह के कार्यों में पहले से लिप्त व्यक्तियों और प्रवेश करने की सोचने वाले नए लोगों को भय के द्वारा रोका जा सके।

6) हमें बहुत ही गंभीरता से विचार/पुनर्विचार करना चाहिए कि मादक द्रव्यों से संबंधित अपराधों के मामलों को तेजी से निपटाने के लिए विशेष न्यायालयों के गठन की व्यवस्था की जाए। तब तक विकल्प के रूप में मादक द्रव्यों के मामलों की शीघ्र सुनवाई एवं निपटान करने के लिए विशेष प्रावधान किए जाने चाहिए।

उपुर्यक्त सुझाए गए 6 उपाय माद्क द्रव्य की माँग को कम करने में काफी प्रभावी हैं तो भी यह ध्यान रखना चाहिए कि एक तरफ जहाँ सरकारों, बहुराष्ट्रीय कम्पनियों, राजनीतिज्ञों और राजनीतिक नीतियों, शराब के बादशाहों, तस्करों, आतंकवादियों और विध्वंसक गतिविधियों में शामिल अनेक लोगों के शामिल होने पर बहुत कुछ करना शेष है। इसका दूसरा पक्ष सरकारी अधिकारी, कानून लागू करने वाले संगठन, कानूनी व्यवस्था, सेवा संगठन, स्वैच्छिक एजेंसियाँ इत्यदि हैं। क्या यह आसान काम है कि माँग में कमी करने के संघर्ष में इन सबको संगठित कर और एक दूसरे के साथ सहयोग के लिए तैयार किया जा सकें। यह एक बहुत ही कठिन कार्य है। भारत में सरकार ही अनेक स्थानों पर शराब की आपूर्ति करती है और इससे व्यापक राजस्व प्राप्त करती है। सरकार को आपूर्ति कम करने के लिए आसानी से प्रभावित किया जा सकता है?

इनमें से परेशानी वाले कुछ प्रश्नों के उत्तरों को टाला जा सकता है। इसके लिए हमें दोषारोपण नहीं करना चाहिए। युवाओं को मादक द्रव्यों से दूर रखा जाए और मादक द्रव्यों को युवाओं से दूर रखा जाए यह रासायनिक द्रव्यों की निर्भरता के विरूद्ध संघर्ष में समान रूप से बहुत महत्वपूर्ण है। यह आसान कार्य नहीं है कि सुझाव दिए और लक्ष्य की उपलब्धि हो गई ऐसा नहीं है। इसे लागू करना बहुत ही कठिन और कठोर कार्य है। परन्तु यदि हम यह निश्चित कर लें कि हमें माद्क द्रव्यों के विरूद्ध संघर्ष करना है तो हमें अवश्य ही मादक द्रव्यों की आपूर्ति में कमी लाने का प्रयास करना चाहिए। कुछ कार्यनीतियों के लिए सुझाव दिए गए हैं किंतु वे सभी स्थितियों में लागू नहीं की जा सकती। परंतु इन सब उपायों को अंतर्राष्ट्रीय रूप में राष्ट्रीय और स्थानीय स्तर पर समान रूप से लागू किया जा सकता है।

अंतर्राष्ट्रीय संगठन जैसे कि विश्व स्वास्थ्य संगठन और यू एन डी सी पी को दृढ़ता से तथा कथित कानूनी माद्क द्रव्यों के निर्माण और अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में कमी करने के प्रयास करने चाहिए। यद्यपि इन संगठनों के कार्य सराहनीय रहे हैं फिर भी यह आवश्यक है कि वे राष्ट्रों को आपूर्ति कम करने के लिए सहमत कराने का प्रयास करें। राष्ट्रों को चाहिए कि वे सब मिलकर माद्क द्रव्यों के गैर-कानूनी व्यापार के विरूद्ध अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर एक साथ तीव्र संघर्ष करें। इसके साथ ही अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं एवं तस्कारी की गतिविधियों को रोकने के लिए विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

निःसंदेह हमारे देश में माँग कम करने के लिए सरकार की अहम भूमिका है। राज्य सरकारें मादक द्रव्यों से पाबंदी हटाने के लिए यह कह कर संतुष्ट कर सकती हैं कि इससे सरकार को अच्छा खासा राजस्व प्राप्त होता है और इसके साथ ही इससें बेकार लोगों को रोज़गार मिलता है। पंरतु सरकार की यह जिम्मेदारी भी है कि वैध मादक द्रव्यों को भी युवाओं तक पहुँचने ही न दें। सरकार को ऐसी लाइसेंसिंग नीति पर भी विचार करना चाहिए जिसमें केवल वयस्क व्यक्ति ही कानूनी मादक द्रव्यों को ले सकते हैं वह भी सीमित मात्रा में सरकार को खुदरा दुकानों की कार्य प्रणाली से संबंधित नियमों का सख्त कार्यान्वयन भी सुनिश्चित करना चाहिए। समाचार पत्रों या मीडिया के माध्यम से शराब के विज्ञापनों पर पूरी तरह से पाबंदी लगाई जानी चाहिए। सरकारी तंत्र को गैर-कानूनी रूप से शराब उत्पादन पर नज़र रखनी चाहिए तथा अपरधियों को कठोर दण्ड दिए जाएँ।

देशों ने मादक द्रव्यों के अपराधियों के लिए आर्थिक सजा सहित कठोर दण्डों कर प्रावधान किया है। इससे गैर-कानूनी मादक द्रव्य आपूर्ति को तब तक कम नहीं किया जा सकता है जब तक सरकार इसके लिए तैयार न हो और मादक द्रव्यों के गैर कानूनी व्यापार पर अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर रोक न लगाइ जाए।

बोध प्रश्न III

टिप्पणी क) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग कीजिए।

ख) इस इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से अपने उत्तर का मिलान कीजिए।

1) "माँग में कमी करना" और "आपूर्ति में कमी करना" के क्या अर्थ हैं, संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

.....

.....

.....

.....

2) "मादक द्रव्य दुरुपयोग का प्रमुख कारण इनकी उपलब्धता है।" इस कथन पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

.....

.....

.....

.....

3) "ब्रिथ ऑफ लाइफ" नामक पुस्तक में आपूर्ति कम करने के लिए दिए गए सुझावों में से किसी एक पर टिप्पणी कीजिए।

.....

.....

.....

.....

4) आपूर्ति कम करने में सरकार की भूमिका पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

.....

.....

.....

.....

5.7 सारांश

हमें विश्वास है कि आपने इस इकाई का अध्ययन ध्यान से किया होगा। इसमें मादक द्रव्य दुरुपयोग के अनेक पक्षों पर चर्चा की गई है। हमने बहुत ध्यानपूर्वक यह समझने का प्रयास किया कि किस तरह से मादक द्रव्यों की माँग और आपूर्ति को कम किया जाए। रासायनिक द्रव्यों पर निर्भरता के विरुद्ध संघर्ष के संबंध में कहा है कि (क) युवाओं को मादक द्रव्यों से दूर रखा जाए, (ख) इसी तरह से मादक द्रव्यों को भी युवाओं से दूर रखा जाना चाहिए। हमने इस पर भी चर्चा की है कि कौन मादक द्रव्यों का व्यसनी बन सकता है तथा लोग क्यों मादक द्रव्यों के व्यसनी बनते हैं। हमने यह भी बताया है कि मादक द्रव्य किस प्रकार एक व्यक्ति, समाज और राष्ट्र पर कुप्रभाव डालता हैं। इन सब मुद्दों पर गहराई से विचार करने के बाद हम सहमत हैं कि हमें माँग कम करने की कुछ कार्यनीतियों के अवलोकन का अवसर मिला है। जब हमने आपूर्ति कम करने के लिए विषय की समीक्षा की तो हम समझ गए हैं कि यह कार्य आसान नहीं है। अंतर्राष्ट्रीय मादक द्रव्यों का गैर-कानूनी व्यापार और अंतर्राष्ट्रीय शराब व्यापार का कार्य बहुत ही व्यवस्थित और शक्तिशाली लोंगो के माध्यम से किया जाता है जिसका आधार बहुत मजबूत है। भारत में, सरकार आपूर्ति कम करने के लिए प्रभावी कदम उठा सकती है और मुख्य भूमिका निभा सकती है। इसके अतिरिक्त हमने आपूर्ति कम करने के लिए कुछ कार्यनीतियों की भी चर्चा की है।

सर्वविदित है कि "इलाज से परहेज बेहतर है" और मादक द्रव्य दुरुपयोग से संघर्ष का सर्वोत्तम तरीका है माद्क द्रव्यों का सेवन न करना।

5.8 शब्दावली

आई एम एफ एल : भारतीय निर्मित विदेशी शराब (बरांडी विहस्की, रम, जिन आदि।)

एन जी ओ : गैर-सरकारी संगठन

फेरीवाला : वह व्यक्ति जो घूम-घूम कर माद्क द्रव्यों को बेचता है।

मादक द्रव्य का नुस्खा : योग्य चिकित्सक द्वारा दवाई का नुस्खा लिए माद्क द्रव्य लेने के लिए सुझाव लिखित पर्चा देना, लिखना या दवाई लेने के रूप में ड्रग लेने की सिफारिश करना।

यू एन डी सी पी : संयुक्त राष्ट्र माद्क द्रव्य नियंत्रण कार्यक्रम।

डब्ल्यू एच ओ : विश्व-स्वास्थ्य संगठन।

5.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

लारी, सैगेल (1998), *एड्स एण्ड सब्सटैंस अब्यूज*, हैरिंगटन पार्क प्रेस, लंदन

थामस, ग्रेशियस (1997), *प्रिवेंशन आफ एड्स : इन सर्च आफ आंसर्स*, शिप्रा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली

यू एन सी पी (1999), *ड्रग डिमांड रिडक्शन रिपोर्ट*, यू एन डी सी पी आफिस, नई दिल्ली

अनिल अग्रवाल (1995), *नार्कोटिक ड्रग्स*, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

5.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न I

1) विशेष प्रकार के संभावित मादक द्रव्यों के व्यसनियों का प्रतीकात्मक चित्रण करना संभव नहीं है।

2) विश्व माद्क द्रव्य परिदृश्य और व्यसनियों को देखने से इस कथन से सहमत होना स्वाभाविक है।

3) इसकी विस्तृत चर्चा 5.2 में की गई।

4) कुछ कारण भाग 5.3 में दिए गए हैं। उपलब्धता, मोहकता या चमक-दमक, गलत आदर्शों की भूमिका, गलत अवधारणाएँ, छिपा हुआ दवाब, उत्सुकता जनसंचार माध्यम इत्यादि कुछ कारण और जोड़े जा सकते हैं।

5) इसका उत्तर आपको 5.3 में मिलेगा। आप चलचित्रों और दूरदर्शन कार्यक्रमों के उदाहरण दे सकते हैं।

बोध प्रश्न II

1) "इलाज से बेहतर परेहज होता है।" इस कथन का विस्तार से वर्णन कीजिए। इस संबंध में भाग 5.4 का प्रथम अंश का अध्ययन कीजिए।

2) व्यसन किसी व्यक्ति का स्वास्थ्य, व्यक्तित्व, धन को नष्ट कर सकता है। तथा यह अनेक अपराधों का मुख्य कारण है विस्तार से टिप्पणी कीजिए।

3) स्पष्ट कीजिए कि यह किस प्रकार संबंधों को बिगाड़ता है, व्यक्ति को गैर-जिम्मेदार बनाता है। घरेलू हिंसा कम करना मुख्य कारण है। लैंगिक जीवन को प्रभावित करता है और किस प्रकार से गलत आदर्श प्रस्तुत करता है।

4) अपराध, मानव शक्ति का नाश, धन का नुकसान, दुर्घटनाएँ इन सबका अपने उत्तर में वर्णन किया जाना चाहिए।

5) भाग 5.5 का उत्तरार्ध पढ़िए।

6) भाग 5.4 तथा 5.5 का अध्ययन करने के पश्चात् आप अनुभव करेंगे कि हमारे युवाओं को रासायनिक द्रव्यों की निर्भरता के घातक परिणामों के बारे में बताया जाना चाहिए। इस संबंध में आप जो सोचते हैं उसे लिखिए।

बोध प्रश्न III

1) माँग में कमी करना – लोगों द्वारा मादक द्रव्यों की माँग न करने में सहायता करना अथवा लोगों को मादक द्रव्यों से दूर रखा जाए।

2) आपूर्ति में कमी करना–मादक द्रव्यों को लोगों तक पहुँचने से रोकना अथवा मादक द्रव्यों का गैर-कानूनी व्यापार परागमन केंद्र का वर्णन किया जाए।

3) श्री जोनाथन द्वारा दिए गए सभी 6 सुझाव भाग 5.6 में दिए गए हैं।

4) आप सरकार की जिम्मेदारियों और उसकी भूमिका से अवगत हैं। आप अपने शब्दों में लिखिए कि किस प्रकार से सरकारी तंत्र गैर-कानूनी माद्क द्रव्यों के व्यापार पर पाबंदी लगा सकता है। स्पष्ट कीजिए कि सरकार कानूनी माद्क द्रव्यों की आपूर्ति में क्या कर सकती है।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

MPDD/IGNOU/P.O.1.5T/October 2009 (Reprint)

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

ISBN-978-81-266-3263-3